पाकिस्तान
तृष्णा
PAKISTAN—A MIRAGE
रत-संघ
स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल
पुस्तकालय को
भेंट

# Pakistan—A Mirage



लेखक

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

रचयिता

'स्वतन्त्रता की खोज में', 'विचार स्वातन्त्र्य के प्रांगण में, 'अनन्त की ओर' 'संजीवनी बूटी', 'ज्ञान के उद्यान में' इत्यादि इत्यादि।
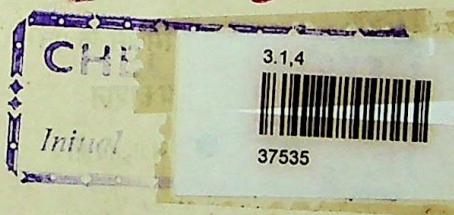
प्राप्ति स्थान

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

सत्य-ज्ञान-प्रकाशन, ज्वालापुर (उत्तर प्रदेश)

मूल्य : एक रुपया

प्रकाशक
स्वामी सत्यदेव परिव्राजक,
सत्य-ज्ञान-प्रकाशन,
ज्वालापुर ( उत्तर प्रदेश )



प्रथम संस्करण,
सितम्बर : १९५३
मूल्य
एक रुपया

दिल्ली में पुस्तक मिलने के पते
ज्ञान-धारा-प्रकाशन
पर्दा बाग, दरिया गंज, दिल्ली।
तथा
न्यू इण्डिया प्रेस
के ब्लॉक, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली।

मुद्रक
कुमार फाइन आर्ट प्रेस,
चाह रहट, दिल्ली।

प्रेमोपहार

परम प्यारे पं० इन्द्र जी
विद्यावाचस्पति को लेखक की
ओर से स्नेह भेंट।

# कुछ पंक्तियाँ

पन्द्रह अगस्त सन् १९५३ शनिवार को मैं सत्य ज्ञान निकेतन ज्वालापुर की अपनी गुफा में सोया हुआ था। अचानक मेरी आँख खुली और मेरे आत्मा ने पुकार की कि पाकिस्तान के सम्बन्ध में एक सन्देश संसार के लोगों को देना ही चाहिए। रात के दो बज चुके थे और मेरा विद्यार्थी--जगदीश 'प्रभाकर' बरामदे के उत्तरी भाग में सो रहा था। मैं ने फौरन उसे उठाया और पुस्तक लिखने के लिये कहा। मेरे विद्यार्थी ने मुस्तैदी से सब तैयारी कर ली और हम दोनों इस काम में जुट गये। एक सप्ताह में यह नई पुस्तक--पाकिस्तान--एक मृगतृष्णा--मैंने लिखवा दी और उसे अब पाठकों के सामने रख रहा हूँ।

'पाकिस्तान' सचमुच एक मृगतृष्णा है, जिस का अस्तित्व केवल भारत-संघ को बलशाली बनाने के लिए ही हुआ था, अन्यथा विभाजन की आवश्यकता न थी और वह मुस्लिम लीगियों के लाख प्रयत्न करने पर भी कभी न बन पाता। परमात्मा जब किसी काम को करना चाहते हैं, तो वे अपना एक साधन बना लेते हैं। उन्होंने बर्बर आक्रमणकारियों द्वारा उत्पन्न बुरे परिणामों को भारत-भूमि से हटा कर अब इसे शुद्ध और पवित्र करना है। शताब्दियों की दासता द्वारा इकट्ठे किए हुए कचड़े के ढेर जब तक जल नहीं जायेंगे, तब तक स्वाधीनता-सुख मिल नहीं सकता। पाकिस्तान वही कचड़े का ढेर है और उसी के द्वारा प्रभु ने जंगली हमलावरोंके नृशंस कार्यों का नाटक वर्तमान भारतीयों को दिखलाना था। वह कार्य अब समाप्त होने जा रहा है। ब्रिटिश शासनकाल में, जिन्होंने उस विदेशी-साम्राज्य को समृद्धिशाली बनाने में सहायता

की थी, उन अपराधियों को भी प्रभु ने दण्ड देना था। इस लिए लाखों लोगों का बलिदान हुआ तब कहीं जाकर भारत स्वाधीन हुआ और फरंगी यहाँ से विदा किया गया।

यह पुस्तक पाकिस्तान की निरर्थकता और उसके खोखलेपन को भली प्रकार दर्शाती है। प्रत्येक भारतीय नर-नारी को इसका प्रचार करना अपना धर्म समझना चाहिये और इसकी प्रतियाँ अपने मित्र प्रेमियों को बांट कर पुण्य का भागी बनना उचित है। जो लोग अधिक संख्या में प्रतियां मंगवायेंगे उन के लिए हम खास रियायतें कर देंगे, जिससे इसकी लाखों प्रतियाँ देश के कोने-कोने में पहुँच जायें और अखंड भारत का पवित्र जयघोष भारतीय आत्मा के हृदयस्तल से निनाद हो। हमें पूर्ण विश्वास है कि प्रादेशिक भाषाओं में इसके अनुवाद होंगे और मेरी यह उपहार स्वरूप पुस्तक भारत-संघ के प्रत्येक घर में उत्साह के साथ पढ़ी जायगी।

नई दिल्ली
पन्द्रह सितम्बर १९५३

विनम्र—
स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

# विषय-सूची


| अध्याय | विषय | पृष्ठ संख्या |
| --- | --- | --- |
| पहला अध्याय | --विषय-प्रवेश ... ... | १ |
| दूसरा अध्याय | --भारत के पिछले इतिहास का सिंहावलोकन | ५ |
| तीसरा अध्याय | --क्या भारतीय मुसलमानों की कोई जुदा कौम है | ११ |
| चौथा अध्याय | --क्या भारतीय मुसलमानों की संस्कृति-साहित्य हिन्दुओं से भिन्न है ... ... | १८ |
| पाँचवाँ अध्याय | —भारत-विभाजन ... ... | २७ |
| छठा अध्याय | —पाकिस्तान --पश्चिम और पूर्व ... | ३३ |
| सातवाँ अध्याय | —पाकिस्तान की सब से बड़ी कमजोरी ... | ३९ |
| आठवाँ अध्याय | —साम्प्रदायिकता की मीमांसा ... | ४७ |
| नवाँ अध्याय | —धर्मनिरपेक्ष नीति की बरकतें ... | ५६ |
| दसवाँ अध्याय | --काश्मीर की कहानी ... ... | ६४ |
| ग्यारहवाँ अध्याय | --पाकिस्तान एक हवाई किला ... | ७८ |
| बारहवाँ अध्याय | —संयुक्त राज्य-अमरीका का कर्त्तव्य ... | ८६ |
| तेरहवाँ अध्याय | --कांग्रेस सरकार ध्यान दे ... | ९३ |
| चौदहवाँ अध्याय | --अन्तिम शब्द ... ... | ९७ |

## श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक द्वारा रचित पुस्तकें

पिछले चालीस वर्षों से मैं बराबर हिन्दी-साहित्य की सेवा कर रहा हूं। जो पुस्तकें मेरे द्वारा लिखी गई हैं, वे निम्न-लिखित हैं।

१. अमरीका पथ-प्रदर्शक
२. अमरीका के निर्धन विद्यार्थी
३. अमरीका दिग्दर्शन
४. नई दुनिया के मेरे अद्भुत संस्मरण
५. अमरीका-भ्रमण
६. मेरी जर्मन-यात्रा
७. मेरी कैलाश-यात्रा
८. योरुप की सुखद स्मृतियां
९. यात्री मित्र
१०. स्वतंत्रता की खोज में
११. संजीवनी बूटी (नया संस्क.)
१२. देव चतुर्दशी
१३. ज्ञान के उद्यान में
१४. संगठन का बिगुल
१५. भारतीय स्वाधीनता संदेश
१६. हिन्दू धर्म की विशेषताएँ
१७. वेदांत का विजय मंत्र
१८. जाति शिक्षा
१९. हमारी सदियों की गुलामी के कारण
२०. राष्ट्रीय संध्या
२१. हिन्दी का संदेश
२२. अनुभव
२३. भारतीय समाजवाद की रूपरेखा
२४. श्री बुद्धगीता
२५. अनन्त की ओर
२६. उन्नति का द्वार
२७. राजर्षि भीष्म
२८. विचार स्वातंत्र्य के प्रांगणमें

उपरोक्त पुस्तकों में आपको हमारे यहां निम्नलिखित पुस्तकें मिल सकती है।

१. अनन्त की ओर ३)
२. स्वतंत्रता की खोजमें ४)
३. विचार स्वातंत्र्य के प्रांगण में १॥)
४. अमरीका के निर्धन विद्यार्थी ॥)
३. संजीवनी बूटी २)
६. ज्ञान के उद्यान में ३)

मिलने का पता
**स्वामी सत्यदेव परिव्राजक सत्य ज्ञान-प्रकाशन**
ज्वालापुर, (यू० पी० )

# पाकिस्तान—एक मृगतृष्णा

## पहला अध्याय

## विषय-प्रवेश

मैं राजनीति-विज्ञान का विद्यार्थी हूं। संयुक्त-राज्य-अमरीका के तीन विश्वविद्यालयों में—शिकागो, आरेगन और वाशिंगटन स्टेट विश्व-विद्यालय—में मैंने राजनीति के महत्वपूर्ण विषय को साँगोपाँग पढ़ा है और उसी का मैं सनातक हूं। अपने ग्रन्थों में मैं, समय-समय पर राज-नीतिक भविष्यवाणियाँ कर अपने देशवासियों को चेतावनी देता रहा हूँ। मेरी अन्तिम पुस्तक—विचार स्वातन्त्र्य के प्राँगण में—दिसम्बर १६५२ के प्रथम सप्ताह में छप कर तैयार हुई थी, उसकी पाँडुलिपि अगस्त तथा सितम्बर में लिखी गई थी और अक्टूबर में मैं उसे प्रकाशित कराने के लिए देहरादून गया था।

इस पुस्तक के १६० पृष्ठ पर मैंने काश्मीर के सम्बन्ध में नीचे लिखी भविष्यवाणी की है—

"काश्मीर की समस्या भारत संघ के लिये बड़ी महत्वपूर्ण है। जब स्वर्गीय मोहम्मद अली जिन्ना ने पूर्वी और पश्चिमी

पाकिस्तान के दो टुकड़े बनाये थे तो उन्होंने मन में यह सोचा था कि जब काश्मीर उन के काबू में आ जायेगा, तब वे धीरे-धीरे पहाड़ी रास्ते से पूर्वी पाकिस्तान को अपने बड़े मुस्लिम राज्य के साथ मिला लेंगे और इस प्रकार एक गलियारा सा बना कर अपने राज्य की जड़ें मजबूत कर लेंगे।

यह था उनका स्वप्न, जिसे लेकर वह अभागा मर गया! और यही था मियां लियाकत अली का ख्याली पुलाव, जिसे खाने के लिए उसकी जीभ लपलपा रही थी, किन्तु वह बदकिस्मत भी अपना स्वप्न अपने साथ ले गया।

अब रह गये पाकिस्तानी बौने, जिन में अब न बुद्धि है और न हिम्मत। भारत संघ के लिये काश्मीर का भूभाग स्वाभाविक है। वह उसकी संस्कृति का अग्रदूत रहा है और उसी के हज़ारों खूबसूरत बच्चे उसी संस्कृति-सम्बन्ध का झंडा लिये हुए भारत के कोने कोने में फैले हुए हैं।

अब मैदान में आये हैं शेख अब्दुल्ला साहब अपना नया शेख-चिल्लीपन का स्वप्न लेकर। इनकी योजना यह है कि किसी प्रकार भारत-संघ की कांग्रेस सरकार को बेवकूफ बनाकर काश्मीर का यह सुन्दर विशाल राज्य हथिया लिया जाय और इसे एशिया का स्विटज़रलैंड बनाकर बिल्कुल स्वतन्त्र राष्ट्र कर लिया जाय। शेख जी के साथी मीठे स्वप्न ले रहे हैं और साम, दाम तथा छल कपट से भारत-संघ के प्रधान मन्त्री को ठगने के प्रयत्न में हैं। हमें पता नहीं कि नेहरू जी इस विषय में क्या सोचते हैं, किन्तु हम भारत संघ के प्रतिनिधि के तौर पर शेख जी को यह स्पष्ट बता देना चाहते हैं कि काश्मीर स्टेट की हिन्दू और बौद्ध जनता कदापि भी उनके साथ नहीं जायगी और भारत-संघ के करोड़ों नागरिक काश्मीर के भूभाग को भारत-संघ से कभी भी अलग नहीं होने देंगे। इसे पत्थर पर लकीर समझिये।"

उस समय अर्थात् अगस्त १६५२ में शेख अब्दुल्ला काश्मीर का शेर बना हुआ भारत-संघ की वफादारी के गीत गाता था और भारत-संघ के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू उस की पीठ ठोकते नहीं थकते थे। आज इस बात को एक वर्ष होने लगा है। सन् १६५३ के अगस्त मास में एक साल के बाद दुनियाँ को पता लगा कि शेख अब्दुल्ला भारत-संघ के साथ विश्वासघात कर काश्मीर को एक स्वाधीन राष्ट्र बनाने की योजना को दृढ़ कर चुका है। जो कुछ हमने एक वर्ष पहले लिखा था, वह आज अक्षरशः ठीक निकला। तब हमने सोचा कि अपने देश वासियों के लिये खास तौर से पाकिस्तान के सम्बन्ध में अपने विचारों को स्पष्ट भाषा में लिखकर उन्हें चैतन्य कर देना चाहिये, और सभ्य संसार को यह बतला देना चाहिए कि पाकिस्तान नाम का राष्ट्र एक ख्याली पुलाव है, एक हवाई किला है और भारतीय मुसलमानों के लिए मृगतृष्णावत् है।

हम कभी इस पुस्तक को न लिखते यदि पाकिस्तान आत्महत्या के मार्ग पर न जाता होता, और उसके अस्तित्व के स्थायी रहने की कुछ भी गुंजायश होती। हमें तो बड़ी हैरानी यह है कि दुनिया के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ और भारतवर्ष के बड़े-बड़े पोलिटिकज्ञ नेता ऐसी भयंकर भूलको अपने मस्तिष्क में कैसे लिये बैठे हैं। जिसे थोड़ी भी सहज-बुद्धि है, जिसे ज़रा भी हिन्दुस्तान के इतिहास का ज्ञान है, जो थोड़ी भी गहरी दृष्टि से सोचने का अभ्यासी है, उसे सूर्य के प्रकाश की तरह यह बात स्पष्ट हो जायगी कि पाकिस्तान का अस्तित्व रेत की भीत पर खड़ा है, जो कभी कायम नहीं रह सकता। किसी जिमींदार की साधारण जिमींदारी भी यदि एक दूसरे से फासले पर हो तो उसे उसका प्रबन्ध करने में कैसी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, लेकिन यह पाकिस्तान के दो टुकड़े एक दूसरे से सैंकड़ों मील के फासले पर स्थित हैं। पूर्वी बंगाल और पश्चिमी पंजाब के बीचों-बीच भारत-संघ का शक्तिशाली राष्ट्र उन्नत मुख किये खड़ा है। भला सोचिये तो सही कि पाकिस्तान के यह दो टुकड़े

मिलकर स्वाभाविक ढँग से अपनी व्यवस्था कैसे कर सकते हैं ? वे दोनों भारत-संघ की मेहरबानी से ही अपना जीवन-निर्वाह करने में समर्थ हो सकते हैं। भला ऐसी दशा कभी स्वाभाविक कही जा सकती है और राष्ट्र के नागरिक स्वाभाविक ढंग से पनप सकते हैं ?

आज खरी-खरी बातें कहने का समय आ गया है। पाकिस्तान को हमने मजबूरी से सहन कर लिया और वह स्वयं भी अपनी मजबूरी के कडुवे फल चख रहा है, उसकी जान के लाले पड़े हुए हैं। भला करोड़ों हिन्दू-मुस्लिम नागरिकों के भविष्य के साथ कब तक इस प्रकार का खिलवाड़ किया जा सकता है। हमारी अन्तरात्मा ने प्रेरणा की है कि हम उच्च स्वर से अपने अन्तःकरण की आवाज को घोषित करें और पाकिस्तान के कारण जो खतरे हिन्दू मुसलमानों के लिए आए हुए हैं, उन्हें सरल भाषा में लिखकर देशवासियों के सामने रखें। भारत के स्वाधीनता-संग्राम में हमारी तुच्छ सेवाएं भी सम्मिलित हैं। उनकी जिम्मेदारी भी हमें पुकार-पुकार कर कह रही है कि अब पाकिस्तान के सम्बन्ध में सत्य तथ्य कहने का समय आ गया है। इसी लिए यह पुस्तक पाठकों के सामने जा रही है। अपने आने वाली पीढ़ियों के भविष्य पर विचार कर हमें इस पुस्तक को भारतीय प्रजा के सामने रखने का साहस हुआ है। हमें दृढ़ विश्वास है कि यह पुस्तक भारत की प्रत्येक प्राँतीय भाषा में छप कर देशवासियों का कल्याण करेगी और उन्हें भावी खतरों से पूर्णतया परिचित करायेगी।

पाठक महोदय, अब हम इस ग्रन्थ को प्रारम्भ करने लगे हैं। कृपा-कर सब प्रकार के पक्षपातों को छोड़कर आने वाले अध्यायों का अध्ययन करें और फिर अपने हृदय में इस बात का फैसला करें कि आप का इसके प्रति क्या कर्त्तव्य है।

———

## दूसरा अध्याय

# भारत के पिछले इतिहास का सिंहावलोकन

ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में भारतवर्ष निश्चिन्तता से व्यापार करता हुआ अपनी जीवन-गति को चला रहा था। इसके बड़े भूभाग में भिन्न-भिन्न शासक अपनी प्राचीन संस्कृति के सूत्र में बंधे हुये निर्भय होकर शासन कर रहे थे। इनका व्यापार दूर-दूर देशों से होता था और वहाँ की लक्ष्मी खिंच-खिंच कर इस देश का भंडार भर रही थी।

ऐसे समय में इस अभागे देश पर अरबों के हमले प्रारम्भ हुए और इस्लाम मज़हब मध्य एशिया की जंगली जातियों में फैलना शुरू हुआ। जब इस ने भारत की ओर मुंह किया तो इस के संगठित आक्रमणों के सामने असंगठित हिन्दू समाज ठहर न सका और उसे पग-पग पर पराजय का मुंह देखना पड़ा। उस काल के हिन्दू नेताओं में राजनीतिक बुद्धि की बड़ी कमी थी और वे ब्राह्मणों तथा पुरोहित वर्ग द्वारा शासित हो रहे थे। जीवन के प्रत्येक भाग में वे ब्राह्मणों की सलाह के बिना कोई काम नहीं करते थे। इस निर्भरता ने उन्हें अत्यन्त पंगु बना दिया था और उनका मस्तिष्क आक्रमणकारियों द्वारा उत्पन्न नवीन खतरों का स्वतंत्रता से सामना नहीं कर सकता था। परिणामस्वरूप भारत के पश्चिमी भाग में धीरे-धीरे इस्लाम का जोर बढ़ने लगा और देश उनके भयंकर आक्रमणों का मुकाबला न कर सकने के कारण विपद्ग्रस्त हो

गया। सामाजिक संगठन छिन्न-भिन्न होने लगा, नागरिकों में भगदड़ मच गई और व्यापार अस्त-व्यस्त हो गया।

जो हिन्दू समाज शताब्दियों से बैठा हुआ शाँति के साथ अपनी जीवन-गति को चला रहा था, इस विदेशी ज्वालामुखी के फटने से अत्यन्त त्रस्त हो उठा और उसमें एक ऐसे तत्व का समावेश होने लगा जो उसकी संस्कृति के बिल्कुल प्रतिकूल था। हिन्दुओं में समयानुकूल अनुवर्ती होने की आदत के अभाव के कारण यह विदेशी तत्व उन्हें बिच्छू की तरह काटने लगा और सारा हिन्दू समाज त्राहि-त्राहि पुकार उठा।

चाहिए तो यह था कि हिन्दू नेता उस आई हुई मुसीबत का मिलकर सामना करते अथवा उस व्याधि का इलाज ढूंढते; जिससे उनका उससे सदा के लिए छुटकारा हो जाता, किन्तु उन्होंने ऐसा न कर अपने उन अंगों को काटना प्रारम्भ कर दिया, जो उन्हें पीड़ा देते थे। इन नेताओं ने यह न सोचा कि ऐसा करना उनके लिये घातक सिद्ध होगा और एक समय ऐसा आ जायगा जब यह पीड़ित अंग, जो आज बीज-रूप में गिराये जा रहे थे, वृक्ष-रूप धारण कर लेंगे और तब हिन्दू समाज को उन्हें उखाड़ने में भीषण समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। भाग्य के सहारे रहने वाला यह हिन्दू समाज अपने इन दुर्बुद्धि नेताओं के कारण एक ऐसे पथ का अनुगामी बन गया, जिस ने उनके समाज में दो फाटे डाल दिए और जिनके कारण आगे चलकर उन्हें शताब्दियों की गुलामी सहनी पड़ी। ऐसी गुलामी जिसने उनकी नैतिकता को घुन लगा दिया और उनके राजनीतिक भविष्य को अंधकार में डाल दिया।

शताब्दियों तक भारतवर्ष में मुसलमानों का शासन रहा। बाहर से आये हुए मुट्ठीभर इन विदेशियों का त्रास फैलाये बिना करोड़ों हिन्दुओं पर शासन करना असम्भव था। सो उन्होंने आतंक को अपना मुख्य साधन बनाया और शासित प्रजा को ऐसा आतंकित किया कि

जिससे उनकी रीढ़ की हड्डी निर्बल हो गई। परिणामस्वरूप उसी हिन्दू समाज के बच्चे विदेशी मजहब में दीक्षित किये जाने लगे। सैंकड़ों वर्षों तक यह उपक्रम जारी रहा और हिन्दुओं की संख्या बराबर घटती रही, उन का सामाजिक संगठन निर्बल पड़ने लगा, उनका साहस क्षीण होता रहा और उनमें नपुंसकता की बीमारी घर करने लगी।

यद्यपि यह विदेशी बर्बर शासक इस देश में ही बस गये और उन्होंने यहीं पर अपना राज्य स्थापित कर लिया, लेकिन उन्होंने अपना मज़हब फैलाकर साथी संगी भी काफी संख्या में खड़े कर लिये। हिन्दू समाज में जिन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाता था, जिन्हें बराबर के सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं थे, जो नीच वर्ण के कहे जाते थे, वे आसानी से विदेशी मज़हब के शिकार बन गये। जो लोभी लालची उच्चवर्णाभिमानी जिमींदार थे उनमें से भी कुछ विदेशी शासकों के प्रियपात्र बनने के लिये लालायित हो उठे और उन्होंने भी नाममात्र के लिये विदेशी मज़हब स्वीकार कर अपना रुतबा बढ़ाया। इस प्रकार अरबी मजहब को मानने वाले यह शासक निर्भयता से आतंकित हिन्दू प्रजा पर शासन करते रहे।

लेकिन प्रत्येक वस्तु की सीमा होती है। जब मुग़लों का आखरी प्रतापी बादशाह अति करने लगा तो उसकी प्रतिक्रिया हिन्दुओं में बड़े जोर से प्रारम्भ हुई और उस अति के कारण उस विदेशी राज्य की जड़ें हिलने लगीं। धीरे-धीरे दक्षिण और पश्चिम में ऐसे शक्तिशाली हिन्दू-संघ स्थापित हो गये, जिन्होंने अरबी सभ्यता और मज़हब के रखने वाले इन विदेशी तत्वों को पछाड़ दिया और उनकी नसें ढीली कर दीं। यदि यह सिलसिला जारी रहता तो भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भागों में हिन्दुओं के कई स्वतंत्र राज्य स्थापित हो जाते और यह देश योरुप का अनुरूप बनकर खंडित अवस्था में संसार के सामने रह जाता।

लेकिन प्रभु को यह स्वीकार नहीं था। योरुप में बसे हुये आर्य समृद्धशाली भारतवर्ष की खोज में निकल पड़े और उन्होंने इस देश में

आकर अपना शासन स्थापित किया। थोड़े ही वर्षों में उन्होंने इस बात को जान लिया कि यह देश असंगठित, फूट की व्याधि से ग्रस्त, जात-पात के झगड़ों में उलझा हुआ और राष्ट्र-धर्म से अनभिज्ञ नागरिकों से बसा हुआ है, जिन पर शासन करना कोई कठिन काम नहीं। उन्होंने अपनी असाधारण राजनीतिक बुद्धि द्वारा इस देश के लोगों को वश में कर लिया। हिंदू मुसलमान दोनों उनके सामने भेड़-बकरियाँ बन गए, मुट्ठीभर इन योरोपियनों ने अपने कौशल से धीरे-धीरे इस बड़े महाद्वीप पर अपना विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया और दर्रा खैबर से लेकर बर्मा तक तथा हिमालय से लेकर लंका तक का विशाल भूखण्ड उन की क्रीड़ास्थली बन गई।

यद्यपि ब्रिटिश शासन भारतवर्ष में केवल दो सौ वर्षों तक रहा और उसके द्वारा इस देश का धन बड़ी निर्दयता से लूटा जाता रहा, किंतु इस शासन ने इस देश के लोगों पर जो उपकार किया, उसकी कीमत भी नहीं चुकाई जा सकती। अरबों के विदेशी शासन ने तो हिन्दू समाज की महान् हानि कर दी थी, उनकी नैतिकता को बिगाड़ दिया, उनके चरित्र को भ्रष्ट किया, उनका संगठन तोड़ डाला, लेकिन अंगरेजों के विदेशी शासन ने इस देश के लोगों को राष्ट्र-धर्म की शिक्षा दी, उन्हें अपना इतिहास सिखलाकर देशाभिमान के भाव भरे, उनके यहाँ विश्व-विद्यालय और स्कूल खोलकर उनमें जागृति पैदा की और उनका एक ऐसा राष्ट्रीय संगठन बना दिया, जिसने आगे चलकर स्वाधीनता संग्राम को प्रारम्भ किया और देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक फैली हुई हिन्दू-मुस्लिम प्रजा में स्वाधीनता के प्रति प्रेम उत्पन्न कर उन्हें जागरूक कर दिया। ब्रिटिश शासन से ही यह कम लाभ नहीं हुआ। उन्होंने भी हमारे लोगों को ईसाई बनाया, किन्तु उनका यह विदेशी तत्व हिन्दू समाज में खप सकता था और उनके साथ हिन्दू जनता मिलकर आसानी से रह सकती थी। इसके विपरीत अरब वाले जिस तत्त्व को अपने साथ इस देश में लाये, जिसका उन्होंने प्रचार

किया और आततायी बनकर दयाशील हिन्दू प्रजा को आतंकित किया, वह तत्व सदा ही अपने आप को इस देश के लोगों से अलग रखता रहा, अपने आप को बिल्कुल जुदा समझता रहा और इस देश के लोगों से अपना सम्बन्ध न जोड़कर विदेशी अरबी सभ्यता रखने वाले देशों को अपनाता रहा। परिणामस्वरूप उसमें यही भावना रही कि वह हिंदुओं का मूलोच्छेदन कर इस बड़े भूभाग पर पूर्णतया अधिकार कर ले और मुगल साम्राज्य की तरह एक विशाल मुस्लिम राज्य भारतीय भूखण्ड पर स्थापित करे। यद्यपि इस देश में लाखों ईसाई हैं, किंतु आज तक कभी किसी ने हिंदू-ईसाई दंगो के समाचार अखबारों में नहीं पढ़े और न किसी ईसाई पड़ौसी को हिंदुओं की लड़कियाँ भगाते हुये ही देखा, इसके विपरीत यह अरबी विदेशी तत्व अपने आगमन के समय से लेकर पाकिस्तान के बनने के समय तक हिंदुओं को काटे की तरह ही चुभता रहा और उसके कारण आए दिन साम्प्रदायिक दंगे इस देश में होते रहे।

अब हम उस स्थान पर आगये हैं, जहाँ पाकिस्तान की समस्या के सम्बन्ध में विचार करने के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो गई है और अब हम आसानी से अपने देश के लोगों को यह बात समझा सकेंगे कि भारतवर्ष के स्वाधीन होने पर जिस पाकिस्तान की बुनियाद पड़ी है वह केवल एक हवाई किला है, जिसका अस्तित्व कभी स्थायी नहीं हो सकता और जो हिन्दू मुसलमान दोनों केलिए भयंकर सिरदर्द का कारण बना रहेगा, जब तक कि हम धर्मनिर्पेक्षता के गूढ़ रहस्य को भली प्रकार न समझ लेंगे और मुसलमान अपने उस विदेशी अरबी तत्व को दूर भगा कर सोलह आना भारतीय न बन जायँगे। भारतवर्ष का विभाजन क्यों हुआ और विभाजन से हिन्दुओं को कितना लाभ और मुसलमानों की कैसी भयंकर हानि हुई यह सत्य-तथ्य अब अच्छी तरह से जान ही लेना चाहिये। मुसलमानों को धर्म-निर्पेक्षता के पुनीत सिद्धान्त की महिमा को हृदयंगम कर भारत की अखण्डता में दृढ़ विश्वास करने का

समय आ पहुँचा है। भारतीय मुसलमान जब तक अपना सम्बन्ध अरबी अफग़ान, मुग़ल और तुर्क आक्रमणकारियों से जोड़ते रहेंगे, तब तक वे कभी भी इस देश में शांतिपूर्वक नहीं रह सकेंगे। पिछले विदेशी तत्वों को अपने देश का शत्रु समझे बिना हम सच्चे भारतीय नहीं बन सकते। भारतवर्ष की अखण्डता ही हिन्दू-मुसलमानों के लिए सुखदायिनी हो सकती है। पाकिस्तान का बनना एक भयंकर राजनीतिक भूल है, जिसे अंग्रेजों ने जानबूझ कर हिन्दुओं के विनाश के लिए और अपनी स्वार्थसाधना के हेतु किया था, किन्तु प्रकृति ने उस विभाजन को हिन्दुओं के लिए वरदान सिद्ध कर उसके द्वारा उनके सभी पिछले ऐतिहासिक घावों को मिटाना था। इसलिए आज हमें पाकिस्तान की इस समस्या पर गम्भीर दृष्टि से विचार करना चाहिए और हिन्दू-मुस्लिम दोनों के हितों को सामने रखकर इस का इलाज सोचना चाहिए।

हमारा यही दृष्टिकोण है और उसे ही हम अब अपने देशवासियों के सामने रखने का प्रयत्न करते हैं।
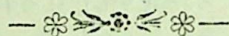
तीसरा अध्याय

# क्या भारतीय मुसलमानों की कोई जुदा कौम है

पाकिस्तान दो कौमों के सिद्धान्त को स्वीकार कर लेने पर बनाया गया था। इसके बड़े-बड़े भाष्यकार—स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली जैसे विद्वान् तथा अन्य बड़े-बड़े मौलवी—यह मानते थे कि भारतीय मुसलमानों की सभ्यता, संस्कृति और साहित्य हिन्दुओं से बिल्कुल अलग है, इसलिए वे हिन्दुओं के साथ मिलकर हिन्दुस्तान का एक अखण्ड राष्ट्र नहीं बना सकते। अंग्रेज और फ्राँसीसियों की तरह उनकी भी एक अलग स्टेट बननी चाहिए, जिससे वह आज़ादी के साथ अपना विकास कर सकें। दो कौमों के सिद्धाँत की जड़ में यही सबसे बड़ी दलील दी जाती है और इसी के आधार पर पाकिस्तान की लड़ाई लड़ी गई और पंजाब तथा बंगाल के दो अस्वाभाविक टुकड़े काटे गये।

अच्छा, अब आप देखिये कि यदि पाकिस्तान के उन पैगम्बरों की यही सबसे बड़ी दलील है, तो उन्होंने उत्तर प्रदेश में बसे हुए करोड़ों मुसलमानों के विषय में क्या सोचा था और हैदराबाद की बड़ी मुस्लिम रियासत तथा भारत के अन्य प्रान्तों में बसे हुए भारतीय मुसलमानों के भाग्य के विषय में क्या फैसला किया था, यह भारतीय मुसलमान कौन हैं, जिनकी वकालत करने और जिसके साहित्य और संस्कृति का दम भरने वाले यह लीडर बसे बसाये भारत के इस सुन्दर भूखण्ड के टुकड़े कर

अपनी दो कौमों के सिद्धाँत की सच्चाई को इन अभागों पर थोपना चाहते थे। कौन हैं यह हिन्दुस्तानी मुसलमान ?

आज अपनी सहज बुद्धि तथा विवेक से पक्षपात को परे फैंककर इस विषय पर विचार करने का समय आ गया है। क्या यह करोड़ों मुसलमान अफगानिस्तान से आये हैं अथवा अरब के निवासी हैं ? क्या यह तुर्किस्तान, फारिस, मिस्र तथा मध्य ऐशिया के निवासी हैं ? कौन हैं यह लोग जो अपनी दूसरी कौम बनाकर इस देश के टुकड़े करना चाहते हैं ? ज़रा इन करोड़ों मुसलमानों को अपनी छाती पर हाथ रखकर खुदा को हाज़िर-नाज़िर समझ कर इस सवाल का जवाब देना चाहिए कि क्या उनकी नसों में अरबों, अफगानों, मुग़लों तथा तुर्कों का खून बहता है ? क्या इन्हीं के बजुर्गों ने हिन्दुस्तान पर हमला कर यहाँ बादशाहत कायम की थी ? यदि नहीं तो यह कौन से नाते से, कौन से अधिकार से दो कौमों के सिद्धान्त की घोषणा करते हैं।

अरे ! यदि कल को लाखों भारतीय ईसाई इस बात का दावा करने लग जाएँ कि उनकी अलग भाषा, अलग साहित्य, अलग संस्कृति और अलग कौम है, तो क्या उनका यह अधिकार कोई स्वीकार करेगा ? यदि कल को यह लोग यह कहने लगें कि लार्ड डलहौजी, लार्ड कर्जन, लार्ड क्लाइव और वार्न हेस्टिंग्स इनके बजुर्ग थे और यह लोग उन्हीं की औलाद होने के नाते इस मुल्क पर अपना हक रखते हैं और उन्हें भी मुल्क का एक टुकड़ा काट कर दे दिया जाय तो उनकी इस पागलपन की बात को कोई मानेगा ? क्या कारण है कि यह हिन्दुस्तानी मुसलमान, जिनके बाप-दादा हिन्दू थे, जो इसी मुल्क में पैदा हुए और यहीं की जबान बोलते हैं, अपने आप को मुग़लों, पठानों और तुर्कों के वंशज कैसे कहने लग गये हैं। उन्हें कौन सा सुरखाब का पर लगा हुआ है, जिसकी वजह से यह समझने की हिमाकत करने लगे हैं कि उन्होंने हिन्दुस्तान पर हकूमत की है। आज हम इन करोड़ों भारतीय मुसलमानों को उच्च स्वर से यह बात सुनाते हैं और वह कान खोल कर सुन लें कि

अरब के आक्रमणकारी तथा मुग़ल, पठान और तुर्क हिन्दुस्तान की आजादी के ऐसे ही दुश्मन थे जैसे कि अंग्रेज, वे ऐसे ही विदेशी थे जैसे इंगलिस्तान के रहने वाले। यदि हमने आज अंग्रेजी हकूमत की जड़ों को काटकर आजादी हासिल की है तो हमने उन विदेशी जालिम आक्रमणकारी मुग़लों, पठानों और तुर्कों के प्रभाव को भी नष्ट कर डाला है, जिन्होंने इस मुल्क पर बिजलियाँ गिराई थीं। हम अपने इस देश में सदियों की गुलामी के उन निशानों को हरगिज़-हरगिज़ नहीं रहने देंगे जो हमारे बच्चों को गुलामी के कड़वे फलों की याद दिलाते रहेंगे। हम आज दूध का दूध और पानी का पानी अलग करने के लिए खड़े हुए हैं। अरबी विदेशी भाषा है, ऐसे ही फारसी और तुर्की गैरों की जबानें हैं। इन के जो शब्द हमारी भाषा में मिलकर खीर शक्कर की तरह हो गये हैं, वे तो हमारे हो चुके लेकिन हम इन विदेशी भाषाओं को विश्वविद्यालयों में तो जरूर पढ़ायेंगे किन्तु अपनी कौमी ज़बानें कभी नहीं मानेंगे।

अच्छा, तो यह करोड़ों भारतीय मुसलमान कौन लोग हैं ? यदि आज इनके बजुर्गों की कब्रें खोदी जायँ और उनसे उनके नाम-धाम पूछे जाएँ तो वे अपना रक्त सम्बन्ध इस मुल्क की भिन्न-भिन्न हिन्दू उप-जातियों के साथ बतलायेंगे, जिनमें से निकल कर वे अलग हुए।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि क्या मज़हब बदल लेने से किसी के बजुर्ग भी बदल जाते हैं ? क्या जिस माँ ने मुसलमान होने वाले लड़के को जन्म दिया था और जिस बाप के वीर्य से वह पैदा हुआ था, क्या इस्लाम मज़हब स्वीकार कर लेने से यह दोनों माँ-बाप खत्म हो जाते हैं और उनका रक्तवीर्य का सम्बन्ध मुसलमान होने वाली अपनी संतान से नहीं रहता ? संसार के सारे समझदार लोग इस बात पर एक मत होंगे कि मज़हब बदल लेने से माँ-बाप कभी नहीं बदल सकते। हिन्दुस्तान का इस्लाम ही एक ऐसा अनोखा मज़हब है जो अपना मज़हब देकर उसमें आने वाले व्यक्ति को अपने सारे पिछले सम्बन्धों

को काटने केलिए मजबूर करता है। दुनिया में और भी इस्लामी मुल्क हैं, जहाँ एक ही घर में ईसाई, मुसलमान कुटुम्ब इकट्ठे रहते, खाते पीते और शांति से अपनी गृहस्थी चलाते हैं—जिनमें मज़हब के कारण कभी लड़ाई-झगड़े नहीं होते, क्योंकि इन्होंने समझ लिया है कि मज़हब व्यक्ति की अपनी निजी सम्पत्ति है, जिसका सम्बन्ध उसके अपने खुदा के साथ है। वे एक ही घर में रहते हुए गिरजे और मस्जिदों में जाते आते हैं और उनमें कभी भी आपस में किसी प्रकार की तू-तू मैं-मैं नहीं होती। मैं जब शिकागो विश्वविद्यालय में पढ़ता था तो वहाँ के बोर्डिंग हाउस में सब विद्यार्थी ईसाई थे लेकिन कभी किसी ने मुझे ईसाई बनाने की कोशिश नहीं की और न इसके कारण किसी किस्म का भेद-भाव ही दिखलाया।

भारतवर्ष के करोड़ों मुसलमानों को अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि उन्होंनें अरब के पैगम्बर से केवल उसका मज़हब लिया है, उसके समाज के रस्मोरिवाज, उसका अरबी साहित्य, भाषा और उसके अरबी समाज को नहीं अपनाया। अरबी मज़हब ले लेने के कारण उनका भारतीयपन नष्ट नहीं हो सकता और न वे भारतीय साहित्य, भारतीय आदर्श, भारतीय इतिहास और भारतीय गौरव से वंचित हो सकते हैं। जो मुस्लिम आक्रमणकारी—पठान, मुगल, तुर्क और अरब—हिन्दुस्तान में आये उनकी यह नीति रही कि उन्होंने मुट्ठीभर होने के कारण करोड़ों हिन्दुओं पर शासन करने के हेतु इन मुसलमानों को हिन्दू समाज से अलग करवाया —ऐसे घृणित कार्य करवाये, जिनसे हिन्दू-समाज हृदय से नफरत करता था, इन आक्रमणकारियों ने देखा कि हिन्दू गाय की पूजा करते हैं, और उसे माता के बराबर समझते हैं तो इन नये मुसलमानों से वे गाय कटवाते और उनका माँस उन्हें खिलवाते थे, जिससे हिन्दू समाज उन्हें सदा के लिए त्याग दे। वे उनके हाथों से मन्दिरों के देवी-देवताओं की मूर्तियों को तुड़वाते , उनपर थुकवाते और पेशाब करवाते थे, जिससे अधिक-से-अधिक घृणा उनके प्रति हिन्दू-समाज को हो जाय। यह मुगल,

पठान आक्रमणकारी थे जंगली इसलिए इन्होंने जंगली ढंगों से अपनी हकूमत को मजबूत करने की कोशिश की और हिन्दू समाज के अंगों को कटवा कर उन्हें अपने शासन की मशीन के पुर्जे बना लिया। यह हैं वे पुर्जे, जो थे तो उन मुग़ल पठानों के क्रीतदास, किंतु उनके अन्दर अपने हाकिमों की सेवा करने की भावना ऐसी भर दी गई, जिससे वे उनके मज़बूत खम्बे बन गये और अपने आप को हिन्दू-समाज से बिल्कुल अलग समझ कर अपने पिछले इतिहास को तिलाँजली दे बैठे यह बन गये सोलह आना नकलची, इन्होंने अरब वालों की हर तरह से नकल की, मुगलों और पठानों के स्वाँग भरे, जिससे इनको भी लोग उन की संतान कहने लग जायँ ।

अब आइये ब्रिटिश शासन की तरफ। अंग्रेज़ भी जब हिन्दुस्तान में आये थे तो मुट्ठी भर ही थे। इन्हें भी करोड़ों हिन्दुस्तानियों पर शासन करना पड़ा। जो समस्या मुस्लिम हमलाआवरों के सामने आकर खड़ी हुई थी वही इन अंग्रेज़ व्यापारियों के सामने आ धमकी, अब दोनों में फर्क देखिये। अरबों, अफग़ानों और मुग़लों ने तो हिन्दुओं के दिल दुखा कर, उन्हें सता कर, उनके अंग काट कर अपने मुसलमान साथी संगी बनाये, इसके विपरीत अंग्रेजों ने स्कूल, कालेज और युनिवर्सिटियाँ खोल कर—हिन्दुस्तानियों को अपने ढंग की शिक्षा देकर, उपाधियाँ और नौकरियाँ देकर—अपना साथी-संगी बनाया। उन्होंने हिन्दुओं का समाज नहीं बदला, न उन्हें रिश्तेदारों से अलग किया, न उनके मन्दिरों को तोड़ा और न उन्हें गाय का गोश्त खाने पर मजबूर किया—अपने ढंग की तालीम देकर इन बुद्धिमान् ब्रिटिश लोगों ने इन हिन्दुस्तानियों को अपने शासन के जबरदस्त खम्बे बना लिया। उनके सहारे वे पौने दो सौ वर्ष तक इस मुल्क में चैन की-बंसी बजाते रहे और आज जब वे इस मुल्क को छोड़ कर चले गये हैं, भारतवर्ष स्वाधीन हो गया है, तब भी हमारे और उनके सम्बन्धों में कोई कटुता नहीं और हम उनकी भाषा के अच्छे-अच्छे ग्रन्थों का अनुवाद कर अपना साहित्य-भंडार भर

रहे हैं तथा उनके सद्‌गुणों और उनके चरित्र की प्रशंसा करते हैं। क्या हमारा ऐसा रुख उन मुस्लिम विदेशियों के प्रति भी है, जिन्होंने इस देश में बालत्कार, लूटमार, मज़हबी कत्लेआम के दृश्य हमें दिखलाये थे आज अफगानिस्तान जब अपनी पशतो भाषा में संस्कृत के शब्द देखने लगा है और यह समझने लगा है कि उनकी भाषा संस्कृत से ही निकली है और उनकी नसों में भी प्राचीन काल के आर्यों का खून बहता है, तब उसने संस्कृत भाषा को अपने विश्वविद्यालयों में अनिवार्य कर दिया और संसार को यह पता लगा कि अष्टाध्यायी के जगत् प्रसिद्ध रचयिता महर्षि पाणिनि शुद्ध पठान वंश के थे। उन अफगानों ने अब धीरे-धीरे यह समझ लिया है कि अरब वालों ने उन्हें केवल मज़हब दिया है, साहित्य, संस्कृति समाज और आदर्श नहीं।

किंतु शोक ! यह भारतीय मुसलमान आज इस जागृति के समय में भी आँखें मूँदे बैठे हैं और अपना सम्बन्ध अरबों, मुगलों और तुर्कों से जोड़ते हैं। उन्हें तुर्की टोपी बड़ी प्यारी लगती है और उसे पहनने में ज़रा भी लज्जा अनुभव नहीं करते। जिन आक्रमणकारियों ने उनके मुल्क पर अत्याचारों के गज़ब ढाये थे उनकी टोपियाँ सिर पर पहनने में इन्हें जरा भी संकोच नहीं होता। क्या इससे भी बढ़कर अज्ञानता हो सकती है—यह अज्ञानता की चरमसीमा है। आज हमें अपना पिछला इतिहास देखना ही पड़ेगा। मज़हब बदलने से समाज और जातियाँ नहीं बदला करतीं। अरबों, तुर्कों और मुगलों से हमारा कोई रक्त सम्बन्ध नहीं, यह बात प्रत्येक मुस्लिम बच्चे के हृदय पर लिखी जानी चाहिये, यदि उसे इस मुल्क में सुख से रहना है, मस्जिदों में जाइये, अपने खुदा को याद कीजिये, अपनी नमाज़ पढ़िये, लेकिन कभी भूलकर भी उन खौफ़नाक कामों को न दोहराइये जिनके कारण हिन्दू-समाज ने इस्लाम का बहिष्कार किया था। सच्चे हिन्दुस्तानी बनने के लिए हिन्दू और मुसलमानों को पारस्परिक समझौता करना ही पड़ेगा और वह

समझौता उन बातों के त्यागने से ही होगा, जिनके पकड़ने से विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारी अत्यन्त घृणा पात्र बन गये थे। आज जब हम स्वाधीन होकर नवीन राष्ट्र बनाने लगे हैं, तो वह राष्ट्र दो कौमों के सिद्धान्त का प्रचार करने से बलवान् नहीं हो सकेगा—उससे तो इसके टुकड़े-टुकड़े ही होंगे। बल्कि मज़हबी आजादी के हक को स्वीकार कर राष्ट्र-धर्म के अमृत से सब को दीक्षित करना पड़ेगा, जिससे धर्मान्ध अरबों और मुगलों के किए हुए अत्याचारों की बातें हम लोग भूल जायं और यह समझने लगें कि मुसलमान कोई अलग कौम नहीं, बल्कि हमारी ही हड्डी और रक्त के हिस्से हैं––यह विदेशी नहीं बल्कि हमारे ही बजुर्गों की औलाद हैं। ज्यों-ज्यों यह भावना हिन्दू-मुसलमानों में फैलती जायगी, त्यों-त्यों भारतीय राष्ट्र ऐक्य के सूत्र में बन्धता जायगा—जैसे ईसाई, पारसी और यहूदी अपने-अपने भिन्न मजहबों के कारण अपने को अलग नहीं मानते और सारे भारतीय समाज में खपे हुए हैं, इसी प्रकार मुसलमानों को भी अपने आप को बनाना चाहिये। जब कोई मौलवी अथवा मुस्लिम नेता उन्हें भारतीय समाज से अलग करने की चेष्टा और उनकी अलग कौम बनाने के मनसूबे बांधे तो समझ लेना चाहिये कि उसका दिमाग खराब हो गया है और वह पागलखाने में रखने के लायक है।

अच्छा, अब यहाँ पर यह सवाल उठता है कि कई पाकिस्तानी लीडर और शासक चिल्ला-चिल्ला कर यह घोषणा कर रहे हैं कि मुसलमानों की सभ्यता, उनकी संस्कृति और उनका साहित्य हिन्दुओं से भिन्न है। हमारा यह दावा है कि इस से बढ़कर झूठी बात कोई हो नहीं सकती। अगले अध्याय में हम इस मिथ्याप्रलाप का खोखलापन अपने पाठकों को दिखलाते हैं।

—:❀:—

## चौथा अध्याय

# क्या भारतीय मुसलमानों की संस्कृति-साहित्य हिन्दुओं से भिन्न है

अभी जब भारत-सघ के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू पाकिस्तान के नवनीत प्रधान मन्त्री मि० मुहम्मद अली के निमन्त्रण पर कराची गये तो वहाँ पर उनका भव्य स्वागत हुआ। पाकिस्तानी प्रजा तथा वहाँ के अधिकारियों ने उनके सम्मान में मानो अपनी आँखें बिछा दीं। कभी भी इस प्रकार का स्वागत पिछले छः वर्षों में हमारे प्रधान मन्त्री का वहाँ पर नहीं हुआ था। इस प्रकार की सद्भावना को देखकर नेहरू जी फूले नहीं समाये और अपनी स्वाभाविक शाँति प्रियता के नाते उन्होंने यह कहा कि वे तो मानो अपने ही देश में आये हैं, अर्थात् उन्हें किसी प्रकार का अलगाव प्रतीत नहीं हुआ। जब उन्हें अपने मानसिक भावों को अधिक प्रकट करने का अवसर मिला तो सभ्य संसार को सत्य-तथ्य बतलाने के लिये उन्होंने यह भी कह दिया कि पाकिस्तान और भारत-संघ की संस्कृति-साहित्य एक ही है, उनमें किसी प्रकार की पृथकता नहीं।

हमारे प्रधान मन्त्री तो इस भूतल पर शाँति का राज्य लाना चाहते हैं और हर सम्भव उपाय से उन्होंने दूसरे देशों के नागरिकों

के प्रति अपने इन सात्विक भावों का प्रदर्शन किया है, जिन के कारण चारों ओर उनकी प्रशंसा और ख्याति की मधुर सुरभि फैलती जा रही है। पाकिस्तान की उन्होंने कोई खुशामद नहीं करनी थी। जो कुछ उनके हृदय में था और जिसे वह ईमानदारी से मानते हैं, वही सच्ची बात उन्होंने प्रकट कर दी।

उनके इन उदार और सात्विक भावों के प्रकट होने पर पृथकतावादी पाकिस्तानी अधिकारी तिलमिला उठे और पहला अवसर मिलते ही उन्होंने अपने सम्माननीय अतिथि की इस बहुमूल्य भावना का अनादर कर दिया, स्वयं मि० मुहम्मद अली ने यह घोषित किया कि पाकिस्तान की संस्कृति अलग है और इसके बाद पाकिस्तान के गवर्नर जनरल श्री गुलाम मुहम्मद ने डंके की चोट से संसार को यह सुना दिया कि पाकिस्तान की संस्कृति और साहित्य भारतीयों से बिल्कुल भिन्न है। पंडित नेहरू जी तो उनके प्रति दिखलाई हुई सद्भावना से प्रभावित होकर पाकिस्तान के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते थे किन्तु जिनका स्वार्थ उनके इन सुन्दर भावों से बिगड़ता है वे भला उन्हें कैसे सहन कर सकते हैं। इन्हीं लोगों ने तो दो कौमों के सिद्धान्त की बुनियाद डाली है और उसी के आधार पर तो यह सिंहासनारूढ़ हुए बैठे हैं। फिर भला उन्हें ऐसी प्यारी बातें कैसे सुहाने लगीं।

अच्छा, आइये अब हम खुले दिल से इन पाकिस्तानियों को चेलेन्ज देकर इस विषय की मीमाँसा करें कि क्या सचमुच पाकिस्तानियों की संस्कृति और साहित्य हम से भिन्न है ? जब इंगलैंड का इतिहास अंग्रेज लेखक लिखते हैं तो अपने यहाँ के वीरों की कथायें लिखकर अपने बच्चों को उत्साहित करते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित करने और उसके विस्तार में उनके जिन देशवासियों ने अपने-अपने बलिदान किये हैं, वे उन के गीत गाकर अपने अंग्रेजी इतिहास और साहित्य का गौरव बढ़ाते हैं, जो सर्वथा स्वाभाविक है। इसी प्रकार अरबी इतिहास और साहित्य के विद्वान् अपने देश के शूरवीरों तथा

उनके कारनामों की गाथाओं को गद्य-पद्य द्वारा लिख कर अरबी साहित्य का भंडार भरते हैं, क्योंकि वह उनके देश के इतिहास की चीजें हैं। इसी प्रकार तुर्किस्तान के निवासी अपने यहाँ के उन वीर योधाओं की कथाएं लिख कर अपने बच्चों को उत्साहित करते हैं, जिन्होंने दूर-दूर देशों में जाकर तलवार मारी थी। हम भी तो महाभारत के समय के शूरवीरों की कथाएं अपने बच्चों को सुनाते हैं और जहाँ-जहाँ अश्वमेध द्वारा उन्होंने विजय लाभ की थी, उसे अपने इतिहास का अंग बनाते हैं। अब आप सोचिए कि जिस देश में जाकर अंग्रेजों, अरबों, मुगलों और तुर्कों ने लूट मार और गुण्डागर्दी की थी, जहाँ जाकर उन्होंने उस देश के लोगों के धर्म को बिगाड़ा, उनकी स्त्रियों पर बलात्कार किया, उनके मन्दिरों को तोड़ा, तो क्या उस देश के लोग भी डाका ज़नी करने वाले इन आक्रमणकारियों की तारीफ के पुल बाँधकर उनके आततायीपन के कार्यों को अपना इतिहास कह सकते हैं? यदि वह ऐसा करते हैं तो यह उनकी निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। इन भारतीय मुसलमानों से कोई पूछे कि तुम्हारा इन अरबी, मुगल और तुर्की आक्रमणकारियों से कौन सा नाता-रिश्ता है, जिन्होंने तुम्हारी माँ-बहनों के स्तित्व अबिगाड़े और तुम्हारे बजुर्गों के पूजा स्थानों को भ्रष्ट किया, उन्हें सताया और उनके बच्चों को पकड़कर अपने देशों में ले गये। भला इन हमलावरों के साथ इन भारतीय मुसलमानों का क्या सम्बन्ध हो सकता है? यदि इन में से किसी के बाप दादा ने उन हमलावरों, उन विदेशियों के साथ मिलकर इस देश पर शासन किया, अथवा कोई छोटे-मोटे हाकिम बनकर अपने ही देशवासियों को लूटा घसूटा तो ऐसे मुसलमान और हिन्दू देश द्रोहियों के सिवाय और क्या कहे जा सकते हैं। यह पाकिस्तानी अपने देश द्रोह के इतिहास को यदि अपना गौरव मानते हैं, यदि वे अरबी, फारसी के साहित्यकों और उन के द्वारा लिखे हुए ग्रन्थों को अपना साहित्य बतलाते हैं, यदि शेख सादी की गुलस्ताँ-बोस्ताँ और अरबी के लेखकों की किसी पुस्तक

को अपना साहित्य बता कर नाचते-कूदते हैं तो यह उनकी भारी अज्ञानता है और वह समय आने पर, जब उनकी आत्मा स्वार्थ के पिंजड़े से बाहर निकलेगी तो वह विज्ञान के सूर्य के प्रकाश में अपनी भूल को स्पष्ट तौर से देखेंगे और समझेंगे कि जिस जाति के बच्चे अपनी गुलामी की जंजीरों को बांधने में विदेशियों के साथ सहायक बनते हैं, आत्माभिमानी पुरुष उनपर थूका करते हैं। जिस भूमि ने तुम्हें जन्म दिया और जिसका तुममे अन्न खाया, जहाँ तुम फूले और फले, जहाँ तुम्हारे माता-पिता पैदा हुए और खेले, यदि उस पवित्र भूमि के प्रति तुमने गद्दारी की और डाकुओं के साथ मिलकर उनकी तरह ही उसे लूटा तो तुम्हारे इस इतिहास को सभ्य समाज के लोग कभी भूल कर भी तुम्हारा इतिहास नहीं कहेंगे। जिन हिन्दुओं ने अपनी जन्म भूमि पर विदेशियों के शासन को सुदृढ़ करने में सहायता की थी, उन का नाम कभी भी आदर के साथ नहीं लिया जायगा और न ही उन के घृणित कार्यों की कोई प्रशंसा करेगा।

अच्छा, यह तो रही अरबी, फारसी और अंग्रेजी के साहित्य और इतिहास की बात, अब आइये उर्दू की ओर, जिसे आप अपनी भाषा और उस में लिखे हुए ग्रन्थों को अपना साहित्य कह कर बड़ा नाज़ करते हैं। जिन लोगों के पास मौलिकता नहीं होती, जो नकलची होते हैं, जो दूसरों की चीज चुरा कर उन पर अपना हक जमाते हैं, उनकी तीन कौड़ी भी कीमत नहीं होती। क्या उर्दू कोई अलग भाषा है ? यदि थोड़ी भी न्यायशीलता मनुष्य में हो और वह उर्दू-हिन्दी की बनावट को जानने का कष्ट करे तो उसे यह पता लगेगा कि उर्दू केवल हिन्दी का चुराया हुआ ढाँचा है, जिसमें अरबी फारसी के शब्दों को जोड़कर उसका एक नया रूप बनाने का प्रयत्न किया गया है। जो सैनिक मुगलों पठानों की छावनियों में नौकरीके लिए आया करते थे, जो विदेशी सिपाही छावनियों के बाजारों में घूमा करते थे, वे गोराशाही हिन्दी की तरह एक भाषा बोलने लगे, जिस में अरबी फारसी के शब्द मिलाकर
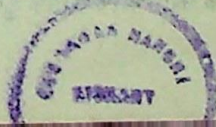
वे दुकानदारों से अथवा नगर निवासियों से अपना अभिप्राय प्रकट करने का यत्न किया करते थे। वह टूटी फूटी "गोराशाही" हिन्दी आगे चलकर उर्दू के नाम से मशहूर हो गई और जब उन विदेशी आक्रमण-कारियों ने हिन्दुस्तान पर अपना साम्राज्य स्थापित किया तो उन्होंने उस विकृत हिन्दी में अपने विदेशी शब्द मिलाकर उसे एक अलग भाषा बनाने का प्रयत्न किया। वे चाहते थे कि उनके साथी-संगी अर्थात् वे लोग जिन्हें वे देश द्रोह के कार्य में अपना साधन बनाना चाहते थे, उन्होंने देश की जनतासे अलग रखकर उनका अलग समाज बनाकर देश पर शासन करने के लिए एक योजना बनाई थी, जिसकी सहायता से वे शताब्दियों तक यहाँ शासन करते रहे। किंतु वे हृदय से उन देश-द्रोहियों से ऐसी ही घृणा करते थे जैसा कि अंग्रेज अपने नीच साधनों को हिकारत की दृष्टि से देखते थे। यही तो कारण हुआ कि जिन मुगल बादशाहों ने भारतवर्ष में अपने राज्य को सुदृढ़ किया, उनके विश्वास-पात्र सेनापति और मंत्री हिन्दू थे। यह विदेशी शासक कुटिल राजनीति द्वारा इस देश पर शासन करते रहे। अपने धर्मावलम्बियों पर उन्हें विश्वास नहीं था, इस लिए जिम्मेदारी के स्थानों पर वे हिन्दुओं को रखते थे। अफगान, मुगल और तुर्कों का इतिहास इसीलिए खून से रंगा हुआ है कि उनके धर्मावलम्बी स्वार्थपरता के कारण विरोधियों को कत्ल कर देते थे। पाकिस्तान को बने अभी छः वर्ष ही हुए हैं, उसका पहला प्रधान मन्त्री स्वार्थियों द्वारा कत्ल कर दिया गया और जो नये प्रधान मंत्री बनते हैं, और बनेंगे, उन्हें सदा प्राणों का खौफ ही रहेगा, यह तो इस्लाम की परम्परा है -- कत्ल करना और तख्त पर बैठना।

हाँ, मैं उर्दू भाषा की बात कह रहा था। उर्दू नाम की कोई भाषा नहीं, वह केवल हिन्दी का एक रूप है। यदि उसमें से अरबी फारसी के शब्द निकाल कर संस्कृत के शब्द धर दिये जायं तो वह हिन्दी हो जाती है। अब आइये उस के साहित्य की ओर। मुसलमानों में भी हिन्दी के कवि और लेखक हुए हैं। जायसी और खुसरो हिन्दी के लेखक

थे। उस समय तक किसी नई भाषा का खप्त विदेशी शासकों में नहीं हुआ था। ज्यों-ज्यों पक्षपात और भेद बुद्धि की आग सुलगती गई, त्यों-त्यों जानबूझकर अरबी, फारसी लेखकों के मुहावरों, उन की उक्तियों, उनके शब्दों और उपमाओं को हिन्दी में भरने का प्रयत्न किया गया ताकि यह भाषा हिन्दीसे अलग हो जाय। लेकिन झूठ आखिरकार झूठ ही है, बनावट आखिरकार बनावट ही है, वह कभी भी सत्य नहीं हो सकती। हिन्दी की हत्या करने का सारा जोर मुगल बादशाहों ने लगा लिया। उनके फारसी, अरबी लेखकों ने अपनी भाषा के शब्दों को जोड़ कर उर्दू के सौन्दर्य को बढ़ाने की सारी चेष्टाएं कर लीं, देश-द्रोही हिन्दू लेखकों ने उर्दू का भंडार भर कर हिन्दी के साथ गद्दारी की, ब्रिटिश शासन काल में भी हिन्दी को खत्म करने के लिए सारी सम्भव योजनायें बनाई गईं, किन्तु सब निष्फल ! आज हिन्दी अपने ऊपर पड़ी हुई सदियों की मिट्टी तथा गर्द-गुबार को झाड़ कर पतितपावनी भागीरथी के पवित्र जल में स्नान कर अपने सिंहासन पर आरूढ़ हुई है। भला उसे कौन मार सकता है और उसका अधिकार कौन छीन सकता है !

इन पाकिस्तानियों की दुर्दशा को देखिये। पूर्वी बंगाल वाले चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि उनकी भाषा बंगला है, वे उर्दू को अपनाना नहीं चाहते, किंतु वह उन पर ठोसी जा रही है। अब रह गये पश्चिमी पाकिस्तान वाले। आप देखते जाइये, समय आने वाला है जब सिंध के लोग उर्दू का बहिष्कार कर सिंधी अपनाएँगे और पंजाबी ? इनकी तो कोई भाषा ही नहीं, यह पंजाबी मुसलमान जिधर चाहें हांके जा सकते हैं। इन्हें कोई हाँकने वाला चाहिए। लेकिन क्या वे ऐसे 'ठगो' ही बने रहेंगे ? कदापि नहीं, उन्हें भी होश आयेगी। जरा शिक्षा को फैलने दीजिये। जब इन पर से पाकिस्तानी भूत का प्रभाव उठ जायगा, जब यह स्वयं सोचना सीख जायंगे, जब इन में विवेकिनी बुद्धि आ जायगी और जब यह पिछले इतिहास के पन्ने उलटेंगे तो

उन्हें पता लगेगा अपने स्वरूप का कि वह अरब और फारस से नहीं आये बल्कि पंजाब की इन्हीं नदियों के किनारों पर इनके हिन्दू बजुर्ग रहते थे जिनका खून उनकी नसों में बह रहा है। जब अफगानिस्तान के पठान आखें खुलने पर यह देख सकते हैं कि उनकी भाषा पशतो संस्कृत की पुत्री है और वे संस्कृत पढ़ना अपना फर्ज मानने लग गये हैं, तो क्या यह पश्चिमी पाकिस्तान के पंजाबी कभी चेतेंगे भी नहीं ? अवश्य चेतेंगे। जब मज़हब का दिवानापन, उसका नशा, इन पर से उतर जायगा, शिक्षा के द्वारा जब इनमें चैतन्यता आयगी और इनका पशुपन दूर होगा तो यह अपनी भूल को स्पष्ट देखने लगेंगे। तब वे कहेंगे कि उनका साहित्य वही है जो हिन्दुओं का है। जब इन के बजुर्ग कबरों से निकल-निकल कर हिन्दू-धर्म की जयघोष करेंगे, तब इनकी सोई हुई आत्मा अपने साझे इतिहास को पहचानेगी और इन्हें पता लगेगा कि संस्कृति अथवा तमदन सारे विश्व का एक हुआ करता है। मुसलमानों की कोई अलग संस्कृति नहीं। सभ्यताएं देश काल और जलवायु के कारण बदलती रहती हैं, किंतु संस्कृति कभी नही बदलती। जो संस्कृति अंग्रेज को ईमानदार, शिष्ट, उदार, दयालु और सहानुभूति तथा स्नेह का पुतला बनाती है, वही सात्विक सद्गुण एक अरब, ईरानी, युनानी, और हिन्दू को सुसंस्कृत बनाते हैं। सभ्यता का सम्बंध हाड़-माँस वाले शरीर के साथ है और संस्कृति का रिश्ता रूहानी है, अर्थात् उसका आत्मा के साथ सम्बन्ध है। आत्माओं में भेद नहीं हुआ करता, शरीरों में भेद होता है। शरीरों के यह भेद ही जुदा-जुदा दीवारें खड़ी करते हैं, ऊंच-नीच के विचार लाते हैं और काले-गोरे का पक्षपात पैदा करते हैं, लेकिन जब मनुष्य आत्मतत्व का दर्शन कर लेता है, जब उसे संसार में व्यापक परमात्मा की अनुभूति होती है तो उसे पता चलता है कि आत्माओं में कोई भेद नहीं होता। चरित्रवान् आदमी सारी दुनियाँ में मान पाते हैं। अच्छा इन्जीनियर इन्जनियरों में मान पायेगा, अच्छा दार्शनिक दार्शनिक समुदाय में प्रतिष्ठा पाता है, होशि-

यार कारीगर कारीगरों में बड़ा माना जाता है, किंतु चरित्रवान् मनुष्य जहाँ चला जायगा, वहीं उसके सत्य भाषण, सरल स्वभाव और उसकी ईमानदारी की प्रशंसा होगी, क्योंकि यह गुण संस्कृति के हैं और संस्कृति आत्मा की निधि है। सभ्य संसार में यह गलत बात फैली हुई है कि अमरीका का कलचर अलग, रूसियों का पृथक्, जापानियों का भिन्न, मुसलमानों का तमदन सब से जुदा है। इससे बढ़कर भ्रम दुनियाँ में दूसरा नहीं। आज हम उच्च स्वर से यह घोषणा करते हैं कि सभ्यताएं भिन्न-भिन्न हुआ करती हैं किंतु संस्कृति सब की साझी वस्तु है। यदि आप सुन्दर कविता में अश्लील भाव भरेंगे तो उस कविता को कोई भी संस्कृति के अन्दर शामिल नहीं करेगा। इसी प्रकार यदि आप कला के नाम पर गंदी तसवीरें बनाकर उन्हें संस्कृति कहेंगे तो कभी भी वह कला सार्थक नहीं कही जा सकती। अजनता की गुफाओं में कला के प्रदर्शन साँस्कृतिक माने जाते हैं क्योंकि उनसे अभियुत्थान की प्रेरणा मिलती है। लेकिन यदि आप उनके स्थान पर स्त्री पुरुषों के सम्भोग करने के चित्रों का प्रदर्शन करेंगे, उनकी लम्पटता की कला दिखलायंगे तो कोई भी उन्हें संस्कृति का नाम नहीं देगा। कोट पतलून पहनना, धोती, एचकिन, टोपी, पगड़ी, लंगोटी और नीकर और भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े पहनने वाले केवल अपनी सभ्यता का प्रदर्शन करते हैं, क्योंकि इसका उनके शरीर के साथ सम्बंध है। पाकिस्तान की कोई अलग संस्कृति नहीं, उनकी सभ्यता भी वही है जो भारत के करोड़ों दूसरे नागरिकों की है। इसलिए इन पाकिस्तानियों को कान खोल कर सुन लेना चाहिए कि उन का दो कौमों का सिद्धाँत और उनका दो प्रकार का तमदन अथवा इतिहास केवल मिथ्याप्रलाप मात्र है। वे उन्हीं हिन्दुओं के वंशज हैं जो हजारों वर्षों से भारतवर्ष में रहते आये हैं। उन्होंने केवल विदेशी मजहब स्वीकार किया और विदेशी मजहब स्वीकार करने से कोई जुदा प्राणि नहीं हो जाता। जैसे ईसाई विदेशी धर्म ग्रहण कर लेने से हमसे अलग नहीं हो सकते, जैसे पारसी जिन्दा अवस्था

के मान लेने से हम से पृथक् नहीं हो सकते। इसी प्रकार मुसलमान भी इस्लाम मजहब को स्वीकार कर लेने से हिन्दुस्तानियों से अलग नहीं माने जा सकते। हम सबका मूल एक ही है और यह मजहब केवल भिन्न भिन्न शाखाएं हैं। हमें भूल कर भी विदेशी आक्रमणकारियों की विजयों पर अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि यह हमारे लिए अत्यन्त लज्जा की बातें हैं, यह हमारी कायरता की द्योतक हैं। हमें चाहिए कि जितनी जल्दी हो सके हम विदेशियों की दासता के चिन्हों को मिटा दें, चाहे वे-विदेशी अंग्रेज हों अथवा अरब, मुगल या अफगान। स्वाधीन जातियों के बच्चे गुलामी के ऐसे चिह्नों को कभी सहन नहीं करते जो उनकी संतान के दिलों में कायरता लाने वाले हों। अब समय आ गया है कि हम स्वदेशी और विदेशी शब्दों का अर्थ भली प्रकार समझें और फूट डालने वाले इन सब कारणों को हटा कर अपना एक शक्तिशाली राष्ट्र बनावें। हमें अपने जीवन काल में ही अखण्ड भारत के आदर्श को सिद्ध करना चाहिए और जो शरारत भरा विभाजन हमको दुःख देने के लिए फरंगी कर गया है, उस विभाजन के दुःखद प्रभावों को मिटा कर ब्रह्मपुत्र से लेकर सिन्धू तक के इस भूभाग को एक सूत्र में पिरो दें।

इंगलैंड से आये हुए महाशय रैडक्लिफ ने कैसा दुःखद विभाजन इस देश का किया और उससे मुसलमानों को कैसी हानि पहुँची और हिन्दुओं को कैसा वरदान मिला। इस की चर्चा हम अगले अध्याय में करते हैं।

---

## पाँचवाँ अध्याय

# भारत-विभाजन

जब ब्रिटिश शासन ने अपनी भेद-नीति द्वारा हिन्दू-मुसलमानों में भीषण फूट के बीज बो दिये और उन्हें एक दूसरे का घोर शत्रु बना दिया तो भारत के इस विशाल भूखण्ड में उनके राज्य की जड़ें सुदृढ़ हो गईं। कोई इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि ऐसा शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य थोड़े वर्षों बाद ही भारतवर्ष को त्याग कर अपने छोटे से द्वीप में चला जायगा। लेकिन संसार में असम्भव नाम की कोई वस्तु नहीं। दो योरपीय महासमरों ने अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति को ऐसा बिगाड़ दिया कि ब्रिटेन की नौकरशाही को मजबूर होकर भारत छोड़ने की तैयारी करनी पड़ी। जिन कालेजों और स्कूलों को खोलकर अंग्रेजों ने उन में अपने सहायक तैयार किए थे, उन्हीं स्कूलों और कालेजों में पढ़ने वाले लोग धीरे-धीरे उनके विरुद्ध होने लगे और उन्हें यह पता लग गया कि बलशाली ब्रिटिश शासन उन्हीं के कन्धों पर अवलम्बित है। यदि वह अपना सहयोग त्याग देंगे तो ब्रिटिश शासन की इमारत लड़खड़ा कर गिर पड़ेगी। इस सूत्र के हाथ में आ जाने पर देश भक्त हिंदू नेताओं ने मुसलमानों को अपने साथ लेने का भरसक प्रयत्न किया, किंतु वह उसमें कृतकार्य न हुए। इस असफलता का मुख्य कारण यह था कि जो अरबी तत्व अपने आक्रमण के समय

भारतवर्ष में प्रविष्ट हुआ था, उसने हिन्दुओं के दिलों में मुस्लिम सभ्यता के प्रति घृणा और विद्वेश की भावना जागृत कर दी थी, सदियों तक इस विदेशी तत्व द्वारा आतंकित रहने के कारण हिन्दुओं को अरबी सभ्यता रखने वाले अपने ही देशवासियों पर तनिक भी विश्वास नहीं रहा था। परन्तु आवश्यकता आविष्कारों की नानी है—इस उक्ति ने धीरे-धीरे हिन्दुओं पर अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ किया और वे मुसमानों को अपने साथ लेकर ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध साझा मोर्चा बनाने लगे। श्री गोपालकृष्ण गोखले, फिरोजशाह महता, श्री बाल गंगाधर तिलक तथा महात्मा गाँधी जी ने ऐसा मोर्चा बनाने का भगीरथ प्रयत्न किया और इसमें उन्हें कुछ सीमा तक सफलता भी प्राप्त हुई।

ईश्वर की महान् कृपा से अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल होने लगीं। दुर्दमनीय योरुपीय राष्ट्र अपनी जलाई हुई आग में स्वयं ही भस्मीभूत होने लगे। उन्होंने अपने आपको ऐसा कमजोर बना लिया कि उनकी साम्राज्यशाही की नसें ढीली हो गईं। ब्रिटिश अधिकारियों को स्पष्टतया अनुभव होने लगा कि अब उनका भारत छोड़ने का समय आ गया है। पर उनका हृदय यहाँ से हटना नहीं चाहता था। शासन करने वाली मशीन के पुरजों ने अपने राजनीतिज्ञ नेताओं का हुकम तो मान लिया पर बड़ी मजबूरी से। उन्होंने अपने वफादार नौकरों को ढाढस देते हुए यह कहना प्रारम्भ किया कि वह केवल छः महीनों के लिए इंगलैंड जा रहे हैं, अराजकता फैलते ही वे फिर शीघ्र लौट आयेंगे। अराजकता फैलाने के सब साधनों को सुसज्जित कर, देशद्रोही तत्वों को भली प्रकार समझा-बुझा कर उन्होंने भारत-विभाजन की योजना तैयार की। यद्यपि मौलाना मुहम्मद अली से लेकर मि० मुहम्मद अली जिन्ना तक सभी चोटी के मुस्लिम नेता भारत में पाकिस्तान बनाने के पक्ष में थे और उनकी स्कीम यह थी कि खैबर से लेकर यमुना नदी तक का इलाका काट लिया जाय और इसे पाकिसतान का रूप देकर मुसलमानों

का एक शक्तिशाली राष्ट्र स्थापित किया जाय, किंतु जब अंग्रेज अपना बोरिया बंदना बाँधने के लिये मजबूर हुए तो उन्होंने भारत-विभाजन की एक नई योजना निकाली जिसके द्वारा उनहों ने पूर्व और पश्चिम के दो सूबों की मुसलिम प्रजा को भारत से अलग कर उसे पाकिसतान का रूप देने का संकल्प किया। उनकी इच्छा यह थी कि वे भारतसंघ की इस ढंग से काटछाँट कर दें कि जिससे यह कभी भी उठने योग्य शक्ति प्राप्त न कर सके और इसकी दोनों सीमाओं पूर्व और पश्चिम पर भयंकर खतरे मौजूद रहें। अपनी इस शरारत भरी स्कीम को उन्होंने भारत-विभाजन का नाम दिया और मुस्लिम लीगी नेताओं को यह सिखलाया कि इस प्रकार का बना हुआ हिन्दूराष्ट्र सदा मौत के मुंह में रहेगा और उसे दोनों ओर से खतरा रहने के कारण कभी भी शक्ति प्राप्त न होगी।

इस प्रकार अपनी शैतानी चालों से मिस्टर जिन्ना को अवगत कर उनहों ने उसे अपनी योजना मानने के लिए राजी कर लिया। उनहों ने यह सोचा कि जिस भारत-संघ में कितनी ही बड़ी हिंदू-मुस्लिम रियासतें हैं, वे उनका संरक्षण हटते ही फसाद करने पर तैयार हो जायेंगी और हिंदुओं की बहुसंख्यक प्रजा अराजकता के घोर जंगल में हिंसक आक्रमणकारियों द्वारा बुरी तरह सताई जाने पर विवश होकर पुनः अंग्रेजी शासन की स्थापना के लिए पुकार करेगी यदि यह भी न हुआ तो भारत-संघ में बसने वाले करोड़ों मुसलमान पाकिस्तान के अपने भाईयों से मिलकर मुस्लिम रियासतों की सहायता से हिंदुओं को पराजित करने में सफल होंगे और यह सारा महाद्वीप एक ऐसे मुस्लिम राज्य द्वारा शासित होने लगेगा जो इंगलैंड की कठपुतली होगी। इसी स्वप्न को साथ लेकर अंग्रेज राजनीतिज्ञों ने विभाजन की स्कीम निकाली और अपनी इच्छानुसार पंजाब और बंगाल के अस्वाभाविक टुकड़े कर पंडित जवाहरलाल नेहरू को उसे मानने के लिए राजी कर लिया। देखते देखते इस महाद्वीप के तीन टुकड़े हो गये—पूर्वी पाकिस्तन,

भारतीय संघ और पश्चिमी पाकिस्तान। अंग्रेज अधिकारी अपना यह नाटक समाप्त कर इंगलैंड में जा बैठे और लगे तमाशा देखने।

उक्ति प्रसिद्ध है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा ज़बरदस्त होता है। ईश्वर ने इस देश को बचाना था और वह चमत्कारिक रूप से इस गर्त से बच निकला। जिन मुसलमानों को ताकतवर बनाने के लिए अंग्रेजों ने यह मायाजाल रचा था, उन्हीं के तीन टुकड़े हो गए एक पूर्वी बंगाल में टाँगों के रूप में रह गया, दूसरा धर की शकल में भारत-संघ में पड़ा रहा और तीसरा कटे हुए सिर की तरह पाकिस्तान में जा गिरा। अंग्रेजों ने बड़े आश्चर्य से देखा कि जो हिंदू रियासतें स्वार्थ के वशीभूत होकर एक दूसरे के प्रति द्वेश की भावनायें रखती थीं, उनके शासकों ने धीरे-धीरे अपने सारे अधिकारों को त्याग कर भारत-संघ में सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया। हिंदुओं में जर्मनी के प्रिंस बिस्मार्क की तरह एक ऐसा कुशल राजनीतिज्ञ खड़ा हो गया, जिसने हिंदू और मुस्लिम रियासतों को भारतसंघ में मिलाकर एक महाप्राकर्मी राष्ट्र की बुनियाद डाल दी। श्री वल्लभ भाई पटेल नामी जादूगर की करामात को देखकर सभ्य संसार के राजनीतिज्ञ दाँतों तले उंगली दबाने लगे। जिस बात की कोई स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था, उस असम्भव घटना को स्वर्गीय पटेल जी ने कर डाला और ३५ करोड़ भारतीयों के शरीर में चुभे हुये कई सौ काँटों को निकाल कर अपने राष्ट्र को नीरोग बना दिया। यदि अंग्रेज अखंड भारत को स्वतंत्रता देकर अपने टापू में चले जाते तो कदापि भी इस देश में ऐसा चमत्कार न हो सकता। संगठित मुसलमान अधिकारी अपने करोड़ों धर्मावलम्बियों के साथ मुसलमानी रियासतों की सहायता से इस देश में खौफनाक ऊधम मचा देते और इस महाद्वीप में ऐसी अराजकता मचती कि जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाते। भारत-विभाजन हिंदुओं के लिये वरदान सिद्ध हो गया और मुसलमानों के लिये काल विकराल! समय ने उस विभाजन के कडुवे फल उन मुसलमान नेताओं के सामने लाकर रख दिये, जो दिन

रात पाकिस्तान के गीत गाते थे। सन् १९४७ से लेकर सन् १९५३ तक के वर्षों की घटनायें हमारे इस कथन की सत्यतया को स्पष्टतया प्रकट करती हैं।

जिस भारत-संघ के विनाश की योजनायें उस के शत्रुओं ने खूब सोच समझ कर बनाई थीं वह धीरे-धीरे शक्ति संचय करता हुआ संसार का स्नेह-भाजन बन रहा है और उसकी प्रशंसा चारों ओर सुनाई देती है। यद्यपि शासन कला से अनभिज्ञ होने के कारण काँग्रेसी नेताओं से भयंकर भूलें हुई हैं, तो भी यह बात ध्रुव सत्य है कि उनके नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य को निभाने का प्रयास किया है। उनकी शान्तिप्रिय नीति के कारण भारत-संघ युद्ध की उलझनों में नहीं फंसा और वह शनैः शनैः अपनी समस्याओं को हल करने का प्रयत्न कर रहा है।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि इस पाकिस्तान का क्या होगा? क्या यह ( Settled fact ) निश्चित तथ्य कहा जा सकता है? क्या पाकिस्तान का जीवित रहना सम्भव है? क्या वह भारत-संघ की सहयता के बिना अपनी जीवन-गति चला सकता है? क्या पाकिस्तानके यह दो टुकड़े, जो एक दूसरे से सैकड़ों मीलों की दूरी पर हैं, कभी एक राष्ट्र का रूप धारण कर सकते हैं? हम इन सब प्रश्नों के उत्तर में 'कदापि नहीं' की बुलन्द घोषणा करते हैं और सारे सभ्य संसार के सामने अपनी इस सम्मति की पुष्टि में प्रमाण पेश करते हैं। यदि पक्षपात छोड़कर हमारे अगले अध्यायों को पढ़ा जायगा तो पाठकों को यह तथ्य अच्छी तरह से विदित होगा कि पाकिस्तान एक मृगतृष्णा है, जिसे मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना ने स्वार्थ के वशीभूत होकर जाहिल भारतीय मुसलमानों के दिमाग में घुसेड़ दिया और जिसकी स्वार्थपरता के वशीभूत होकर करोड़ों भारतीय मुसलमान भुखमरी के शिकार हो रहे हैं। यदि इन मुस्लिम नेताओं ने शीघ्रातिशीघ्र अपनी इस मूर्खता भरी पाकिस्तानी स्कीम के खोखलापन को न समझ लिया तो करोड़ों मुसलमानों का

भविष्य अन्धकारमय बन जायगा और वे उन्नति के मार्ग से हटकर विनाश के गढ़े में गिर जायेंगे। अगले अध्यायों में हम सिलसिलेवार अपने प्रमाण पेश करते हैं और सबसे पहले पश्चिमी पंजाब की समस्या को पाठकों के सामने धरते हैं।

---

ब्रिटिश साम्राज्य के संचालकों ने बीसवीं शताब्दि के पहले चरण में आयरलैंड का विभाजन कर डाला और उस छोटे से द्वीप को खंडित कर आयरिश फ्री स्टेट की बुनियाद डाली। आयरिश देश भक्तों ने अपने प्यारे देश के लिए जैसे बलिदान किये, इतिहास में उसकी तुलना मिलनी मुशकिल है। उल्सटर नाम का एक टुकड़ा उत्तरी आयरलैंड में काट दिया गया, जिसमें प्रोटेस्टेंट मत के मानने वाले ईसाइयों की प्रधानता है और अभी तक यह छोटा सा द्वीप अपनी अखंडता को स्थापित नहीं कर सका।

इसी शताब्दि के अर्ध भाग में इंगलैंड ने वही चाल भारतवर्ष के साथ चली और उसके भी दो टुकड़े काट कर अपनी कुटिल राजनीति का परिचय दे गया। सौभाग्य वश हमारे लिए यह विभाजन वरदान सिद्ध हुआ और हम शताब्दियों के फैले हुए कचड़े को जला कर अपनी शक्ति संचय कर सकते हैं। प्रोटेस्टेंट लोगों ने आयरलैंड की भीषण हानि की थी और रोमन कैथूलिक लोगों पर बड़ा अत्याचार किया था। इसी प्रकार विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हिन्दुओं पर गजब का आततायीपन ढाया था। यह कुदरत के खेल हैं कि हमारा विभाजित अंग अपने पापों के कारण धीरे-धीरे काल की गति को न समझने की वजह से अत्यंत दुर्बल होता चला जा रहा है। हमें चाहिए कि हम प्रकृति के इस वरदान का लाभ लेकर अंग्रेजों द्वारा किये हुए विभाजन को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त कर दें। इसी से हमारा भविष्य उज्ज्वल होगा।

—स्वामी सत्यदेव

छठा अध्याय

# पाकिस्तान—पश्चिम और पूर्व

यदि स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली की योजना के अनुसार पेशावर से यमुना नदी तक के भूभाग को पाकिस्तान का रूप दे दिया जाता और उसमें पूर्वी बंगाल के टुकड़े को सम्मिलित करने की योजना न बनती तो पाकिस्तान का जीना शायद व्यवहारिक हो सकता, वह भी उसी अवस्था में जब इस इलाके के हिंदू और सिख सहानुभूति द्वारा बिल्कुल वश में कर लिये जाते, अन्यथा इसकी कल्पना भी असम्भव थी। अब आइये वर्तमान पश्चिमी पाकिसतान की ओर। भारतवर्ष के नकशे में पंजाब का प्राँत अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। भौगोलिक दृष्टि से प्रकृति ने इसे एक बिल्कुल स्वतंत्र इकाई बनाया है, जिस के कभी टुकड़े नहीं किये जा सकते। यहाँ हैं पाँच नदियां—सतलुज, ब्यास, रावी, चनाब और जेहलम। ये पाँचों नदियाँ एक महान् वृक्ष की शाखाओं की तरह आपस में मिली हुई हैं और पाँचों की पाँचों मिलकर अपनी माता सिंधु नदी में जाकर गिरती हैं। सिंधु नदी भारतवर्ष की पश्चिमी सीमा को बनाती है और वह कैलाश से निकल कर पूर्वी तिब्बत की बहुत बड़ी जलराशि को लेकर पश्चिमी हिमालय के कोने से गिलगित के पहाड़ों से होती हुई मैदान में आती है। जिन दिनों विज्ञान का प्रचार नहीं हुआ था और जातियाँ नहरों की उपयोगिता को नहीं समझती थीं,

उन दिनों किसी एक समुदाय के लोग दो नदियों की बीच की भूमि में रहकर अपना गुजारा कर सकते होंगे, किन्तु आज के इस उन्नत युग में जब साइंस ने जातियों को एक दूसरे से मिलाने का कार्य प्रारम्भ किया हुआ है, जब उसने लम्बे-लम्बे फासलों को काटकर राष्ट्रों को एक दूसरों के निकट ला दिया है, जब उसने अपने वरदानों को देकर आग, पानी और हवा की बरकतें मनुष्यों के सामने लाकर रख दी हैं, तब प्रकृति के दिये हुये भौगोलिक वरदानों से यदि मनुष्य वंचित होकर एक दूसरे का शत्रु बनना चाहे और यह समझ ले कि वह अपनी इच्छा से ताना-शाही द्वारा दूसरों को सताकर आराम से जी सकता है तो यह उसकी केवल मूर्खता ही है। पंजाब की ये पाँचों नदियाँ सिंधु माता के साथ प्रकृति के दिये हुए वरदानों से सुसज्जित होकर भारत के उस नीरोग टुकड़े में बहती हैं। यदि आप उस भूभाग को काटकर तीन नदियों को एक तरफ और दो को एक तरफ करने की धृष्टता करेंगे और उससे भी बढ़कर अपनी एक अस्वाभाविक सीमा बनाकर दो राष्ट्रों के सिद्धाँत को शत्रुता की मनोवृत्ति बनाकर चलाना चाहेंगे तो यह कदापि भी सम्भव नहीं हो सकता।

इससे भी बढ़कर यदि आप इन नदियों के उद्गम स्थानों को शासन में रखने वाले राष्ट्र से मित्रता न रखेंगे तो आपको जान ही लेना चाहिये कि आप अपने विनाश के मुख में बैठे हुये हैं। जिस युग में हम रहते हैं यह छोटे-छोटे राष्ट्रों का युग नहीं—यह महाराष्ट्रों का युग है। जिस समय पंजाब के टुकड़े कर तीन नदियों के भू-भाग में बसने वाले लोगों को शेष दो नदियों से अलग कर दिया गया था तो प्रकृति ने क्रुद्ध होकर उस भू-भाग पर अग्नि की वर्षा की थी और अपना भयंकर शाप उन लोगों को दिया था जिन्होंने पंजाब के अस्वाभाविक दो टुकड़े कर बसे हुये नगरों, लहलहाते खेतों और धनधान्य पूरित मंडियों को बरबाद कर उस इलाके के नागरिकों को भिखमंगा बना दिया। प्रकृति कभी भी किसी को क्षमा नहीं करती। राज्य बदलते रहते हैं, शासक आते हैं

चले जाते हैं, किंतु प्रजा के साथ कभी भी इस प्रकार का अन्यायपूर्ण व्यवहार आज तक किसी ने नहीं किया था, जैसा कि मिस्टर जिन्ना के दिमाग में बैठी हुई आततायीपन से भरी हुई योजना ने इस इलाके के बसे हुये लोगों पर किया। पश्चिमी पाकिस्तान पंजाब का ऐसा कटा हुआ भू-भाग है, जिसे कभी कोई नीरोग नहीं कह सकते और यदि यह इन दोनों भू-भागों के लोग आपस में एक दूसरे के प्रति शत्रुता रखेंगे तो वे कभी भी सुखी नहीं रह सकेंगे। एक छोटी सी चिंगारी, भीषण ज्वालामुखी खड़ा कर सकती है। मुस्लिम-लीगियों ने पाकिस्तान बनवा कर अपने धर्मावलम्बियों को महान् हानि पहुंचाई है। भौगोलिक दृष्टि से यह विभाजन किसी को भी लाभ नहीं पहुंचा सकता।

और देखिये। आज इस उन्नत युग में छोटे-छोटे राष्ट्र दूसरे महा-राष्ट्रों की सहायता पर निर्भर रहते हैं। लक्ष्मी व्यापार से आती है। व्यापार के लिए आप के पास भरपूर कच्चा माल चाहिये और पक्का माल तैयार करने के लिए खनिज पदार्थों की आवश्यकता है। आजकल के इस वैज्ञानिक युग में जीवनस्तर बड़ा खर्चीला हो गया है और लड़ाई के ऐसे-ऐसे भीषण शस्त्र बन गये हैं कि जिन के तैयार करने में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। फ्राँस, बेल्जियम, हालैण्ड और इंगलैंड जैसे छोटे-छोटे देश केवल दूसरे निर्बल देशों के पसीने की कमाई को खाकर ही बलवान् बनते रहे। वह था साम्राज्यवाद का युग, जिसका अब अंत होने जा रहा है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम सब प्रकार की भेद-बुद्धि को दूर कर एकता की बुद्धि को अपनावें और एक दूसरे के निकट आने का प्रयत्न करें।

हम कह रहे थे पश्चिमी पाकिस्तान की बात। इस पश्चिमी पाकि-स्तान के रहने वालों का स्वाभाविक सम्बन्ध भारत-संघ के साथ है, अमरीका अथवा रूस से नहीं। यदि पश्चिमी पाकिस्तान अपने आंतरिक शासन में स्वाधीन होकर बाहरी प्रबंध में भारत का अंग बन जाये

तो उसकी जीवन-गति सुखपूर्वक चल सकती है और उसके नागरिक उन सब सुविधाओं को सहज में ही प्राप्त कर सकते हैं, जो भारत-संघ में रहने वालों को मिलेंगी। इसके विपरीत यदि पश्चिमी पाकिस्तान के लोग भारत-संघ के नागरिकों को डरा-धमका कर, अंडबंड मूर्खताभरी बातें कहकर भयभीत करना चाहेंगे तो उन्हीं का सर्वनाश होगा और वे अपने उन धर्मावलम्बियों को भी किसी बड़ी मुसीबत में डालेंगे, जो भारत-संघ के नागरिक हैं।

जरा ध्यान से सुनिये। आज भारत-संघ का प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू है, जो मुसलमानों के साथ आवश्यकता से अधिक रियायतें कर रहा है, पाकिस्तान से डर कर नहीं, केवल मानवता के नाते। परंतु प्रजातंत्र भारत-संघ में ऐसी पार्टी का सत्तारूढ़ होना सम्भव है जिस का रुख मुसलमानों के प्रति उदार न हो। वह पार्टी भला पश्चिमी पाकिस्तान का सम्बन्ध उसके पूर्वी हिस्से के साथ कैसे बना रहने देगी। पूर्वी पाकिस्तान के यात्री न तो भारतीय रेलों द्वारा और न हवाई जहाजों के जरिये इधर से उधर जा सकेंगे। जो समुद्री रास्ता है उसमें भी विघ्न बाधायें पड़ सकती हैं। ऐसी दशा में पाकिस्तान को झक मारकर भारत-संघ का अंग बनना ही पड़ेगा और उसका स्वतन्त्र अस्तित्व मृगतृष्णावत् हो जायेगा। इसी प्रकार पूर्वी पाकिस्तान भी एक अस्वाभाविक टुकड़ा है। उसकी भाषा पश्चिमी पाकिस्तान से मिलती नहीं। उसका बंगला साहित्य बड़े ऊंचे स्तर पर है और वहाँ के नागरिक पश्चिमी पाकिस्तान के नागरिकों से अधिक सुसभ्य और सुसंस्कृत हैं। वे कभी भी पाकिस्तान के साथ स्थायी रूप से रहना स्वीकार नहीं करेंगे और पहला अवसर मिलने पर उससे अलग होने की चेष्टा करें। जब बंग-भंग का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था और अंग्रेजों ने बंगाल के दो टुकड़े करने चाहे थे तो वहाँ के हिन्दू-मुसलमानों ने मिलकर अंग्रेजों की उस दुष्टतापूर्ण नीति का सारी शक्ति से मुकाबला किया था। उसी बंगाल को आज साम्प्रदायिक शराब

पिला कर मुस्लिमलीगियों ने उसके दो टुकड़े कर दिये हैं, जिस कारण वहाँ का व्यापार चौपट हो गया है और वहाँ सब प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ पनपने लगी हैं। लूटमार और बलात्कार का बाजार गर्म है और आये दिन हजारों नागरिक इधर से उधर, उधर से इधर मारे-मारे फिरते हैं। अपनी सहज बुद्धि से सोचिये कि क्या इस प्रकार की स्थिति बहुत वर्षों तक सही जा सकेगी? पश्चिमी बंगाल के लोग पूरब के रहने वाले अपने भाइयों से जबरदस्ती अलग किये गये हैं। वह समय शीघ्र आने वाला है जब बंग-भाषा-भाषी अपनी भूलों को स्वीकार कर पश्चिमी पाकिस्तान के मायाजाल को छिन्न-भिन्न कर एक दूसरे का आलिंगन करेंगे और धर्म-निर्पेक्ष नीति की महिमा को हृदयंगम कर विदेशी अरबी तत्व को अपने दिलों से निकाल ेंगे। वे जान लेंगे कि मजहब व्यक्ति की प्राईवेट निधि है। मजहब की भिन्नता मानव को मानव से दूर नहीं भगाती, बल्कि एक दूसरे के निकट लाती है। वे भेद की दृष्टि को भुलाकर एकता ा दृष्टिकोण अपनायेंगे और अपनी प्यारी बंगला भाषा के सुन्दर सुसंस्कृत शब्दों से सने हुए साहित्य में स्नान कर अपने को धन्य-धन्य कहेंगे। तभी पाकिस्तान का यह भूत पूर्वी बंगाल से भगाया जा सकेगा और हजारों वर्षों की पुरानी एकता बंगाल में विराजमान होगी। तभी वहाँ का व्यापार बढ़ेगा और वहाँ के लोग सुखी होंगे।

अब यहाँ पर यह प्रश्न होता है कि जब भारत-संघ धीरे-धीरे शक्ति समेट रहा है और स्वाभिमान के साथ सभ्य जातियों की कतार में खड़ा हो गया है तो पाकिस्तान वैसा करने में अब तक समर्थ क्यों नहीं हुआ! वहाँ क्यों अभी से मारकाट का बाजार गर्म हो गया है और भुखमरी नंगा नाच करने लगी है। वहाँ का पहला प्रधानमन्त्री मियाँ लियाकत अली गोली ा शिकार बना दिया गया और सम्प्रदायिकता-राक्षसी अपने ही बेटों को खाने लग गई है! पाकिस्तान की इस निर्बलता को दुनिया के लोगों को जानना ही चाहिए, जो उसे जन्म-काल से ही

घुन की तरह खाने लगी है। अगले अध्याय में हम उसी पर प्रकाश डालते हैं।

—:❀०❀:—

मज़हबी पागलपन के कारण ईसाई और मुसलमान शताब्दियों तक एक दूसरे के गले को काटते रहे, उन में मजहबी युद्ध होते रहे, जिन्हें वे अपनी मूर्खतावश ( Holy wars ) पवित्र जंग कहते थे। इस जहालत से ईसाई दुनिया तो निकल चुकी है और अब ईसाई-धर्म के भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय एक दूसरे की हत्या नहीं करते। लेकिन इस्लाम का यह अरबी विष अभी उतरा नहीं। इसका जहरीला प्रभाव पाकिस्तानी मुसलमानों और मध्य ऐशिया के दो-चार देशों में अभी तक विद्यमान है। मौलवी मुल्लाओं के भड़काने पर मजहबी पागलपन विस्फोट के रूप में धधकने लगता है। अब समय आ गया है कि इस्लाम अपने इस अरबी विष को अपने शरीर में से निकाल दे और संसार की सभ्य जातियों की कतार में सुसंस्कृत बन कर खड़ा हो जाय।

—स्वामी सत्यदेव परिब्राजक

## सातवाँ अध्याय

# पाकिस्तान की सब से बड़ी कमज़ोरी

आइये, हम आज आप को पाकिस्तान की सब से बड़ी कमजोरी, उसकी सबसे बड़ी बीमारी और उसे सबसे अधिक हानि पहुँचाने वाले अरबी-तत्व का नंगा रूप दिखलायें, जिसने भारतीय मुसलमानों को आज भी इस देश में विदेशी बना रखा है और जिसके कारण इस्लाम की उपस्थिति आज भी दुनिया को खतरनाक मालूम होती है। इसी अरबी-तत्व के कारण मुअर लोग स्पेन से भगाये गये, इसी की वजह से बलकान की रियासतों से तुर्कों का बहिष्कार हुआ, इसी के कारण इस्लाम की शक्ति का ह्रास हुआ और इसी की महरबानी से मध्य एशिया की छः इस्लामी रियासतें छोटे से इज़रायल से बुड़ी तरह मार खा गईं और उनकी अरबी लीग नपुंसक बनकर बैठ गई।

आज मैं उन इस्लामी भक्तों और उनके अनुयायियों को खुली चेतावनी देकर उस अरबी-तत्व का नग्न रूप दिखलाने लगा हूँ, जिसके कारण भारत के करोड़ों मुसलमान आज भी हिन्दुओं से अलग हो कर रहते हैं। क्या किसी मुसलमान मौलवी अथवा नेता ने इस बात पर विचार किया है कि ईसायों और पारसियों का धर्म हिन्दुओं से भिन्न होते हुए भी आज तक कभी भी भारतवर्ष में इनके साथ हिन्दुओं के दंगे नहीं हुए। कभी कोई ईसाई पड़ौसी अथवा पारसी बन्धु अपने

मज़हब की भिन्नता के कारण हिन्दुओं द्वारा सताने की शिकायत करता हुआ नहीं सुना गया, इसके विपरीत मुसलमान सदा कांटे की तरह हमें चुभते रहे हैं और आये दिन उनके द्वारा की हुई शरारतें हिन्दू-मुस्लिम फसादों का कारण बनती हैं। ऐसा वह कौन सा अरबी विष है जो मुसलमानों को संसार की दूसरी जातियों से अलग करता है।

सुनिये, इस्लाम जब किसी दूसरे धर्मावलम्बी को अपने दायरे में लाता है तो वह केवल उसका धर्म ही नहीं बदलता, वह उसे समाजाँतर कर देता है अर्थात् उसे उसके समाज से निकाल कर अपनी नयी मिल्लित कायम करता है। यही इस्लाम की भयंकर निर्बलता है। सुशिक्षित और संगठित समाज कभी इस्लाम को अपने निकट लाना पसंद नहीं करेगा, क्योंकि वह समाज की सारी मशीन को अस्त-व्यस्त करता है और उसकी सारी परम्पराओं को छिन्न-भिन्न कर उसके मूल को काटने की चेष्टा करता है। मस्तिष्क की आजादी सब नागरिकों को होनी चाहिये। आप चाहे किसी मजहब को मानें—गिर्जे में जायें अथवा मस्जिद में, मन्दिर में जायं, चाहे गुरुद्वारे में—यह आपका प्राइवेट अधिकार है। इस में किसी को दखल देने की आवश्यकता नहीं। लेकिन जब आप एक बसे हुए संगठित कुटुम्ब के किसी एक मेम्बर को इस्लाम में लाकर उसे उसके कुटुम्ब से अलग कर देते हैं—नहीं नहीं उसे उस कुटुम्ब का दुशमन बना देते हैं—तो कौन भला आदमी आप को अपने निकट आने देना चाहेगा। मनुष्य एक सामाजिक सभ्य है। यदि वह अपने व्यवहार में सदाचारी और ईमानदार है तो वह सब समाजों में खप सकता है, उसे सब समाजों के लोग आदर की दृष्टि से देखेंगे। लेकिन जब आप एक समाज के सदस्य को अपने ढंग की शराब पिलाकर उसके दिमाग में ऐसी फतूर लादेंगे, जिसके कारण वह अपने बराबर किसी को समझेगा ही नहीं और सदा अपने नये मज़हब की डींगें हाँकता हुआ दूसरों को अपने से हेय और काफर मानेगा तो भला ऐसे बददिमाग़ आदमी को कौन सहन कर सकता है। मस्तिष्क और शिक्षाओं के भिन्न-

भिन्न होने के कारण मनुष्यों में विचारों का जुदा-जुदा होना स्वाभाविक है, किन्तु समाज के अन्दर का जीवन सबको एक सूत्र में बाँधता है और आपस में एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करना सिखलाता है। हमारी साझी चीजें बहुत अधिक हैं, जिनकी ओर हम ध्यान न देकर मस्तिष्क के भेदों पर अधिक जोर देते हैं और उन्हीं के सहारे अपनी अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाने का प्रयत्न करते हैं। मुस्लिम मिल्लत का यही विष है जिसने उसे शेष संसार से अलग-थलक कर रखा और वह कांटे की तरह दूसरों को चुभता रहा।

क्या मुसलमानों ने कभी सोचा है कि लखनऊ में मुहरमों के दिन शीय्या और सूनी आपस में क्यों लड़ मरते हैं? जब उन का खुदा, उनकी कुरान और उनका पैगम्बर साझा है तो फिर आपस में लड़ने की कौन सी गुंजायश है। उनके आपस के फसादों की तह में वही अरबी विष काम कर रहा है, जो भेदों की दीवारें खड़ी कर आदमी को आदमी का दुशमन बनाता है और जिसमें सहनशीलता के मानवी गुण का सर्वथा अभाव है। शीय्या और सूनी अपनी साझी एकताओं को न देखकर छोटी-छोटी भेद की बातों पर अधिक जोर देते हैं, जिनका कोई भी उपयोगी दर्जा इस्लाम मजहब में नहीं है। इस्लाम की इसी छूत की बीमारी के कारण सुनियों और कादियानियों में पश्चिमी पाकिस्तान में भीषण फसाद हुए—स्त्रियों पर बालत्कार हुआ, आदमी जीते जलाये गये, हजारों को कत्ल किया गया और करोड़ों रुपये की सम्पत्ति स्वाह हो गई! अरबी तत्व का यह ज़हरीला पदार्थ एक प्रकार की वबा है, जिसके रहते हुए कभी कोई समाज सुख और शांति प्राप्त नहीं कर सकता।

ज़रा सोचिये, पाकिस्तान के अपने ही नागरिक जब मामूली मजहबी भेदों के कारण एक दूसरे के जानी दुशमन हो जाते हैं—एक दूसरे का नामोनिशान मिटाने की कोशिशें करते हैं तो क्या कोई भी भला आदमी उनके पास रहना पसन्द करेगा? इस अरबी-तत्व ने

इस्लाम की भयंकर हानि की है—इसे कहीं का नहीं रखा इसकी उन्नति में भारी बाधा डाले खड़ा है। आज तक संसार के अन्दर किसी भी मजहब में धर्म-भेद होने के कारण समाजांतर कर लेने का पागलपन्न नहीं आया था। बौद्ध काल में बौद्धों ने हजारों मिशनरी देश-देशान्तरों और द्वीप द्विपान्तरों में भेजे। उन्होंने वहाँ अपने धर्म का प्रचार किया। किसी स्थान पर भी उन्होंने अपने अनुयायियों को समाजांतर होने के लिए प्रेरित नहीं किया। वे सबके साथ घुल मिल गये और दूसरों की भावनाओं का न्याय पूर्वक आदर किया। भारतवर्ष की संस्कृति में मस्तिष्क की स्वतन्त्र विचार-धारा को स्वाभाविक स्वीकार किया था, इसी कारण जैनी, बोद्ध, शैव, शाक्त और वैष्णव आपस में विचार विनिमय के लिए शास्त्रार्थ तो अवश्य करते रहे किन्तु एक को दूसरे से अलग करने की कुबुद्धि उनमें कभी पैदा नहीं हुई। जहां वे रहे, उनका गुजर सबके साथ ठीक तरह से होता रहा और शताब्दियों तक बौद्ध समाज के लोग ऐशिया के भिन्न-भिन्न भागों में अपना कार्य करते हुए आनन्द से रहे।

पाकिस्तान इसी सिद्धन्त पर बना है, कि कुरान के आधार पर उस देश के कानून बनाये जायं। जरा अपने दमाग को खुला कर इस विषय पर विचार कीजिये। तेरह सौ वर्ष की पुरानी विचारधारा के सहारे यदि आप अपने राष्ट्र के कानून बनाते हैं तो आपके नागरिकों में न्यायशीलता कैसे आ सकेगी ? कुरान में अरबी काल के समाज का वर्णन है। उसका जन्मदाता उसी समाज के हित केलिए नियम बना गया। यदि आप उन नियमों को आधुनिक युग के मुस्लिम राष्ट्र में चलाने का प्रयत्न करेंगे तो क्या कभी भी आप का राष्ट्र झगड़े फसादों से मुक्त हो सकता है ? कदापि नहीं। इस्लाम में रमा हुआ यह अरबी विष उसके अनुयायियों को शेष सब समाजों के अनुयायियों से पृथक् करता है और इसके इसी तत्व के कारण आज इस युग में इस्लामी राष्ट्र स्वाधीन सुख का उपभोग नहीं कर सकता। हमें चाहिये कि हम सब

प्रकार के पक्षपातों को छोड़ कर, वस्तु-स्थिति की गम्भीरता पर विचार करें और फिर निश्चय करें कि क्या अब हमें इस पुराने विष को निकालने के लिए अपनी सारी शक्ति नहीं लगानी चाहिये ?

किसी दूसरे राष्ट्र में यदि मुसलमान बसते हैं तो आप धींगा-धींगी उनके जानोमाल की रक्षा के ठेकेदार बन जाते हैं। 'मान न मान मैं तेरा महमान' वाली उक्ति के अनुसार आप उस दूसरे पड़ौसी राज्य के प्रबन्ध में दखल देने लगते हैं। आप होते कौन हैं चौधरी बनने वाले और आपका यह चौधरीपन्न कोई क्यों स्वीकार करने लगा ? आप कहते हैं कि हमारे मज़हब के मानने वाले लोग चूंकि वहाँ बसते हैं इसलिये वे आपके समाज के हैं। यही है असली विष, जिसे इस्लाम अरब से लाया और जिसके कारण इसने बेगुनाहों का खून बहाया और संसार के साथ दुश्मनी मोल ली। आप मानवता के नाते किसी दूसरे पर होते हुये अन्याय का पक्ष लेकर खड़े नहीं होते, बल्कि साझा मज़हब होने के नाते सारा बवंडर खड़ा करते हैं। यह कौनसी अकलमंदी है और आप की इस ज़हनियत को कौन समझदार आदमी पसंद करेगा ? आप के इस प्रकार के रुख का परिणाम यह होगा कि दूसरे स्वाधीन राष्ट्र मुसलमानों को अपने यहाँ बसने की आज्ञा नहीं देंगे और न उनके साथ किसी प्रकार का व्यवहारिक सम्बंध रखेंगे।

स्मरण रखिये। यदि इंगलैंड हिन्दुस्तान पर शासन न करता होता, यदि उसे हिंदू और मुसलमानों को आपस में लड़ाकर हिन्दुस्तान के साम्राज्य की कुंजी अपने हाथ में न रखनी होती तो योरुप की जातियाँ योरुप के बीमार आदमी (तुर्की साम्राज्य) की हत्या कर डालते और इस्लाम का सदा के लिये खात्मा कर देते। योरुपीय राष्ट्रों के पारिस्परिक द्वेष के कारण इस्लाम की एशिया में रक्षा हो गई अन्यथा योरुप की शक्तिशाली जातियाँ इस्लाम का नामोनिशान मिटाकर ऐशिया को इस से साफ कर देती। तुर्कों का राष्ट्र योरुपीय राष्ट्रों की हार जीत का महरा बने रहने के कारण उसका बचाव हो गया और वही मुस्लिम

राष्ट्र, जो किसी काल में मज़हबी दिवानापन्न से ओत-प्रोत हो रहे थे, अपने उस अरबी विष को त्याग कर मानवता की ओर आ रहे हैं। तुर्की के कमालपाशा ने धर्मान्धता को जड़-मूल से उखाड़ने का प्रयत्न किया था और अरबी भाषा को विदेशी भाषा कह कर मजहब के सारे कार्य अपनी मातृभाषा में करने प्रारम्भ कर दिये थे। मध्य ऐशिया में ऐसी मुस्लिम रियासतें मौजूद हैं जिन्होंने अपने समाज में से अरबी ज़हर को निकाल दिया है। उनके घरों में यदि एक लड़का ईसाई है तो दूसरा मुसलमान और तीसरा यहूदी, वे तिस पर भी बड़े मजे में इकट्ठे रहते हैं और अपने अपने पूजा स्थानों में जाकर ईश्वर के गीत गा लेते हैं। पाकिस्तानी मुसलमानों के लिये ऐसी खबरें उन के मस्तिष्क के बाहर की चीजें हैं। वे कभी सोच भी नहीं सकते कि स्टेट और मजहब अलग-अलग चींजें हैं और स्टेट में ऐसे कानून होने चाहियें जो सब नागरिकों के भले के लिये हों। जब हम यह कहते हैं कि पाकिस्तान एक हवाई किला है तो हम कोई गलत बात नहीं कहते। पाकिस्तान का राष्ट्र कभी भी स्थायी नहीं हो सकता। वहां के नागरिकों को जब स्वयं सोचने की बुद्धि आयेगी, जब उनके नेता उनकी किसमत के साथ जुआ खेलना छोड़ देंगे, प्रत्येक पाकिस्तानी विवेक से काम लेना सीखेगा और जब वह समाज के अंग-प्रत्यंगों के पारिस्परिक सम्बन्धों पर विचार करने की बुद्धि पा जायेगा तो उसे शीशे की तरह अपनी भूलें दिखाई देने लगेंगी। तब वह पुकार पुकार कर कहेगा कि इस अरबी विष ने उसका कैसा सत्यानाश किया है। वह खुदा को जरूर मानेगा, मुहम्मद साहब का शुक्रगुजार भी होगा और कुरान को भी पढ़ेगा, किंतु उसमें दूध का दूध और पानी का पानी अलग करने की बुद्धि आ जायेगी। तब वह देखेगा कि उसकी मजहबी किताबों में उस अरबी विष का प्रभाव कहाँ तक है, जिसके कारण वह संसार की दूसरी जातियों में शूद्र बना खड़ा है। उस समय उसका दृष्टिकोण बुद्धिवादी बनेगा और वह सब प्रकार के समाजों की अच्छी बातें लेने का अभ्यास करेगा। उसके मन का

झुकाव सर्वांगपूर्ण होने लगेगा और तब वह सब के भले में अपना भला सोचने की आदत डालेगा। इस समय तो वह एक निहायत तंग दायरे में बैठा हुआ केवल अपनी मिल्लत को ही देखता है, उसे ही सारी दुनिया समझता है, उसमें बने हुए कानूनों को खुदाई इल्म मान कर अपने मस्तिष्क का दरवाजा बंद किये हुए है। यह कुएं का मेंढक इसीलिए इल्म का दुशमन रहा और इसने विद्या के खजानों से भरे हुए पुस्तकालयों को जला दिया और समझ लिया कि जो कुछ संसार में इल्म है, वह सब उसी की छोटी किताब में है।

अब समय आ गया है कि पाकिस्तान में बसे हुए नागरिक अपनी दुर्दशा को देखे और अपना बही खाता मिलायें। आज इस बात की बड़ी जरूरत है कि पाकिस्तान के जनसाधारण अपने नेताओं की स्वार्थपरता को भली प्रकार समझें और उनके हाथों की कठ पुतली न बनें। वे उन्हें 'जहाद' के सब्ज बाग दिखला कर अपना उल्लू सीधा करते हैं और स्वयं मौत के मुंह में न जाकर इन अनपढ़ पाकिस्तानियों को तोप के मुंह के आगे कर देते हैं। मजहब के नाम पर यह उनकी जिन्दगी की होली खेलते हैं और कभी नहीं सोचते कि वह अपने खुदा और नबी के सामने क्या मुंह दिखलायेंगे। पाकिस्तान बन गया, क्या इससे मुस्लिम जनसाधारण को कोई फायदा हुआ? अखण्ड हिन्दुस्तान में आठ-नौ करोड़ संगठित और अत्यन्त शक्तिशाली मुसलमान रहते थे, जो मनमाने ढंग से स्वेच्छापूर्वक मजे से अपनी जिन्दगी गुजार रहे थे। इस मनहूस पाकिस्तान के बन जाने से उनका मुस्लिम-संगठन चूर-चूर हो गया—सिर कट कर पाकिस्तान में चला गया, धर हिन्दुस्तान में रह गया और टांगें कट कर पूर्वी बगाल में चली गईं। क्या कभी समझदार मुसलमान ने पाकिस्तान बनने के नाशकारी परिणामों पर गहरी दृष्टि डाली है? यदि फायदा हुआ है तो हिन्दुओं को। असंगठित हिन्दू अब संगठित हो रहे हैं, उनके सामाजिक भेद-भाव कांग्रेस सरकार द्वारा मिटाये जा रहे हैं, उनकी फौजी शक्ति

बराबर बढ़ रही है, उनका व्यापार दिनों-दिन चमक रहा है और थोड़े ही वर्षों में भारत-संघ का दुर्दमनीय राष्ट्र खड़ा हो जायगा और तब पाकिस्तानी हाथ मलते रह जायंगे। पाकिस्तान को बने हुए अभी वर्ष ही कितने हुए हैं, किन्तु अभी से वहाँ भारत-संघ के साथ मिलने की बातें होने लगी हैं और ऐसे चिंताशील नेक मुसलमानों की कमी नहीं, जो यह अच्छी तरह से मानने लग गये हैं कि भारत-संघ के साथ मिले बिना उन का कल्याण नहीं। उनका व्यापार चौपट हो गया है, उनका आर्थिक ढाँचा टूट रहा है, उनके अन्न-भंडार कहीं दिखाई नहीं देते और उनके यहाँ आये दिन भुखमरी से मरने, गर्मी में जलने और बाढ़ों में सड़ने की खबरें आ रही हैं। इतना ही नहीं, उनके नेता लूटमार की धुन में अपनी-अपनी पार्टियाँ बना कर सत्ता हथियाने के लिए रस्सा-कशी कर रहे हैं। प्रजा का उन्हें जरा भी ख्याल नहीं। मजहब के झूठे नारे बुलन्द कर वे जन-साधारण को अपने जाल में फसाने की कोशिश कर रहे हैं और हर एक यही चाहता है कि पाकिस्तान की गद्दी उसी को मिल जाय।

इतना कथन करने के बाद अब हम "Comunalism" अर्थात् साम्प्रदायिकता जैसे महत्वपूर्ण शब्द की मीमाँसा कर अपने पाठकों को उसकी व्यापक हानियाँ बतलाना चाहते हैं। क्योंकि भारत-संघ तथा पाकिस्तान के इस निर्माण युग में इस शब्द का दुर्पयोग और भ्रामक प्रचार विरोधी पार्टियाँ बराबर कर रही हैं और जनसाधारण इस का अर्थ न समझने के कारण खुदगर्ज लीडरों के जाल में आसानी से फंस जाते हैं। अगले अध्याय में हम विस्तार के साथ उदाहरण देते हुए इस शब्द की व्याख्या करते हैं, जिससे हमारे पाठक आजकल के पोलिटिकल पारिभाषिक शब्दों को सोचना और समझना सीख जायं। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा अगला अध्याय भी ज्ञानार्थी लोगों को बहुत पसन्द आयेगा और वे पक्षपात रहित सम्मिति बनाने के ढंगों को सीख जायंगे।

## आठवाँ अध्याय

# साम्प्रदायिकता की मीमांसा

जब से भारतवर्ष स्वाधीन हुआ है, तबसे एक शब्द भारत वासियों के सामने विशेष रूप से नाचने लगा है और वह शब्द है–"Communalism" अर्थात् साम्प्रदायिकता शब्द की आड़ लेकर शेख अब्दुल्ला अपने आप को फिरश्ता समझ बैठा था और इसी शब्द की ओट में बहुत से स्वर्थी पार्टीबाज अपने अपको देवता समझने लगे हैं और छत पर चढ़ कर यह घोषणा करते हैं – "हम साम्प्रदायिकता को जड़ मूल से मिटा देंगे और भारतवर्ष में सेक्यूलर सरकार की स्थापना करेंगे।" देश की साधारण जनता "साम्प्रदायिकता" और "सेक्यूलर" इन दो शब्दों का अर्थ नहीं समझती और बहुत से पढ़े लिखे भी इन दो शब्दों को समझे बिना इनका प्रयोग करते हैं। वे अपने विरोधी विचार वालों को साम्प्रदायिक कहकर उन्हें पब्लिक की आँखो से गिराना चाहते हैं, इसलिये हमने अपना यह कर्त्तव्य समझा है कि "साम्प्रदायिकता" और "सेक्यूलर" इन दो शब्दों को शीशे की तरह स्पष्ट कर दें, जिससे प्रत्येक पार्टी बाज और सत्य का जिज्ञासू अपना मुँह उस शीशे में देखकर अपने आपको पहचान सके।

सम्प्रदाय शब्द संस्कृत भाषा में किसी मत विशेष या धर्म विशेष के सम्बन्ध में प्रयोग होता है, जैसे—वैष्णव सम्प्रदाय, कबीर पंथी, शैव और शाक्त आदि। जिन जिन धर्माचार्यों ने धार्मिक ग्रन्थों के अपने ढंग के अर्थ निकाल कर शास्त्रों की व्याख्या की है, उनके अनुयायी अपने अपने आचार्य के मत विशेष को सर्वश्रेष्ठ मानकर अपना दल बना लेते हैं। भारतवर्ष ही नहीं, बल्कि संसार के सब देशों में मजहबी शाखायें, दल बंदी के रूप में फैली हुई हैं, जिन्हें सम्प्रदाय कहा जाता है—जैसे ईसाई मजहब के भिन्न-भिन्न फिरके और इस्लाम की जुदा जुदा शाखायें ये सब 'सम्प्रदाय' शब्द के अन्तर्गत आ जाती हैं। योरुप में जब रोमन केथोलिक मत के विरुद्ध विज्ञान ने मोर्चा लिया, तब सम्प्रदाय का असली रूप सभ्य संसार को मालूम होने लगा। उस समय मजहब के अन्तर्गत लोक-परलोक की सत्ताएँ सम्मिलित थीं। सबसे बड़े धर्माचार्य 'पोप' के हाथ में धार्मिक और राजनीतिक सत्ता रहती थी। जब पोप के विरुद्ध साइंस ने अपना झंडा खड़ा किया तो प्रजा को स्वतंत्र सोचने का अवसर मिला। तब से अब तक ईसाई वृक्ष की बहुत सी शाखाएँ फूट निकलीं। वे ही सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुईं। मुसलमानों में भी इसी प्रकार के अलग अलग सम्प्रदाय हैं।

जब साइंस ने मजहब के विरुद्ध मोर्चा लेकर प्रजा के मस्तिष्क को स्वतंत्र किया तब शासन सम्बन्धी मशीन को मजहब से अलग होने की आवश्यकता प्रतीत हुई, क्योंकि एक ही मजहब के भिन्न-भिन्न शाखाओं वाले लोग, शासन सत्ता को हथियाने के लिए आपिस में लड़ते थे और उनके कारण सुव्यवस्थित राष्ट्र की स्थापना असम्भव होती थी, इसलिए उन देशों के विद्वान् नेताओं ने धर्म को राष्ट्र से अलग करने की योजना निकाली और यह घोषित किया कि राष्ट्र का नागरिक चाहे किसी सम्प्रदाय को मानता हो, लेकिन कानून के सामने किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रहेगा और सब मतों के लोग आजादी से अपने मतों को मानते हुए ही राष्ट्र में रह सकेंगे। उस समय से धर्म और

राजनीति दोनों अलग-अलग हो गये और मज़हब प्रत्येक नागरिक की निजी सम्पत्ति मानी जाने लगी। उस समय Secular Govornment अर्थात् असाम्प्रदायिक सरकार का प्रादुर्भाव हुआ।

मुसलमान लोग शरीयत अर्थात् कुरान के अनुसार अपने राष्ट्र की स्थापना करते हैं और कहते हैं कि एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में तलवार रखने वाला ही सच्चा मुसलमान है। इसी सिद्धाँत पर चल कर इस अभागे देश में मुसलमान बादशाहों ने हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया और उनसे जजिया टैक्स वसूल किया। मिस्टर जिन्ना ऐसा राष्ट्र बनाना चाहते थे, जिसमें मुसलमानों को खास रियायतें रहें और दूसरे मज़हब वाले काफिर होने के कारण हेय समझे जायँ। इस्लाम इसी प्रकार की विचारधारा लेकर अरब से निकला था और उसने चारों ओर तबाही मचा कर तलवार के जोर से इस्लामी राष्ट्र स्थापित किये।

अब यह बात पाठकों को भली प्रकार समझ में आजायगी कि साम्प्रदायिकता की जड़ में जो असली विष है, वह है अनुदारता, असहनशीलता, और असहिष्णुता। मत विशेष अथवा भिन्न मज़हब रखने से कोई नागरिक साम्प्रदायिक नहीं बनता—वह साम्प्रदायिक उस समय बन जाता है, जब उसमें विरोधी मत वालों के लिये अनुदारता आ जाती है अर्थात् जब वह अपने लिये तो सब प्रकार की आज़ादी की माँग करे, किन्तु विरोधियों को वैसी आज़ादी देने के लिये तैयार न हो अर्थात् जब कोई नागरिक तंग दिल हो जाता है, दूसरों की भावनाओं का आदर नहीं करता, दुसरों के विचारों को सुनना नहीं चाहता और अपनी लाठी सब पर चलाकर डिक्टेटर बनना चाहता है, तभी वह व्यक्ति साम्प्रदायिक बन जाता है और ऐसे व्यक्तियों के कारण समाज में शांति और सुव्यवस्था नहीं रह सकती।

हम इस बात को स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि साम्प्रदायिकता शब्द का व्यवहार ईसा की सोलहवीं; सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में

इन्हीं अर्थों में लिया जाता था और वह केवल धार्मिक क्षेत्र में ही प्रयुक्त होता था। आज ईसा की बीसवीं शताब्दि में जब शिक्षा का बड़ा प्रसार हुआ है, साम्प्रदायिकता शब्द ने अपना बड़ा व्यापक क्षेत्र कर लिया है और वह मज़हबी दायरे से निकल कर राजनीतिक क्षेत्र में आ घुसा है। चारों ओर उसके कारण ही अशान्ति और अव्यवस्था फैल रही है। हमारे जो नेता दूसरों को साम्प्रदायिक कह कर घृणा की दृष्टि से देखते हैं, यदि वह अपने गरेबान में मुंह डालकर देखें तो उन्हें पता लगेगा कि वे स्वयं अव्वल दर्जे के साम्प्रदायिक (Communalist) हैं। वे अपने विरोधियों के प्रति अनुदार हैं, वे विरोधियों की भावनाओं का आदर करने को तैयार नहीं और अपनी लाठी चलाकर सब को हाँकना चाहते हैं। थोड़े शब्दों में साम्प्रदायिकता का लक्षण यह है -जो मनुष्य दूसरों के प्रति अनुदार, विरोध के प्रति असहनशील और स्वार्थ के वशीभूत होकर विरोधियों का उन्मूलन करना चाहते हैं, वे ही बड़े साम्प्रदायिक हैं। रूसी डिक्टेटर लेनिन वर्तमान युग का सबसे बड़ा साम्प्रदायिक व्यक्ति हुआ है, जिसने अपने लाखों विरोधियों को तलवार के घाट उतार दिया। हज़रत मुहम्मद अपने काल के सबसे बड़े साम्प्रदायिक पुरुष थे, जनकी शिक्षाओं के कारण लाखों मनुष्य गाजर मूली की तरह काट दिये गये और सैंकड़ों लहलहाते ग्राम, कस्बे और नगर खाक में मिला दिये गये।

आज कल पोलिटिकल पार्टियों के नेता यह समझने लगे हैं कि साम्प्रदायिकता शब्द का प्रयोग केवल हिंदू महासभा, मुस्लिम लीग अथवा अकालियों के विरुद्ध ही प्रयोग में आ सकता है। यह उनकी सरासर भूल है। जब मिस्टर चर्चिल पार्लियामेण्ट में विरोधी दल के प्रति अनुदार बनकर अनर्गल प्रलाप करते हैं तो वे साम्प्रदायिक बन जाते हैं, कम्यूनिस्ट पार्टी किसी दूसरे वर्ग को बरदाश्त नहीं करती और वर्ग युद्ध चलाना चाहती है, इसलिये वह भयंकर साम्प्रदायिक संस्था है। सोशलिस्ट पार्टी के नेताओं ने जब सरदार बल्लभ भाई पटेल पर

झूठे इलज़ाम लगाये और उन्हें महात्मा गाँधी जी की रक्षा न करने का अपराधी ठहराया तो उनका वह आचरण साम्प्रदायिक हो गया। इसी प्रकार कार्लमार्क्स ने जब वर्ग-युद्ध के सिद्धान्तों को प्रचलित किया तो उन्होंने साम्प्रदायिकता के बीज बो दिये और उन्हीं का परिणाम वर्तमान काल की अशान्ति हुआ।

अतएव हमें यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिये कि यदि हम भारत राष्ट्र में सेक्यूलर सरकार की स्थापना करना चाहते हैं तो हमें प्रजा में Toleration अर्थात् सहनशीलता की भावना का प्रचार करना चाहिए और प्रमाणवाद के विरुद्ध उन जन साधारण को शिक्षा देनी चाहिये। यदि हमारे शासक यह समझते हैं कि वे डंडे के जोर से भारत-संघ में असाम्प्रदायिक स्वराज्य की स्थापना कर सकते हैं तो वे बेवकूफों के स्वर्ग में रहते हैं! डंडा तो इन्सान को हैवान बना देता है यह केवल ठीक ढंग की शिक्षा ही है, जो साम्प्रदायिकता की हत्या कर सकती है। आप प्रजा को यह सिखलाइये कि यदि कुरान की कोई आयत, वेद का कोई मन्त्र, अञ्जील का कोई वाक्य अथवा गुरु ग्रन्थ साहेब का कोई कथन समाज में फूट फैलाने वाला हो अथवा भारत-संघ को हानि पहुंचाने वाला हो तो उसे कदापि मानना नहीं चाहिये। सेक्यूलर सरकार का अभिप्राय यह होता है कि वहाँ के शासक किसी मत अथवा सम्प्रदाय विशेष को राष्ट्र में ऊंचा स्थान नहीं देते। उनका शासन सब प्रकार के मतों को मानने वाले नागरिकों के लिये एक जैसा होता है। उस शासन का नारा ( घोषणा ) यह होता है - "Justice to all and priviliges to none" अर्थात् सब के साथ न्याय और किसी की रियायत नहीं।

निस्सन्देह किसी देश में असाम्प्रदायिक शासन का होना बड़े सौभाग्य की बात है। लेकिन इस में भ्रांति यह है कि साम्प्रदायिकता का क्षेत्र मज़हब तक ही सीमित कर दिया जाता है, उस की तह में जाने का कष्ट उठाए बिना शासक लोग उस शब्द की आड़ में अपना उल्लू

सीधा करते हैं। रूस ने जिस समय अपनी तोपों और सैन्यशक्ति के बल से जर्मनी में जाकर ज़बरदस्ती वहाँ की प्रजा को कम्यूनिस्ट बनाया और और लाखों जर्मनों को मौत के मुंह में भेजकर अपने साम्यवाद के सिद्धान्तों को उनके गले से उतारा तो स्टालिन का वह कार्य साम्प्रदायिक हो गया। संसार में इस समय सबसे बड़ा खौफ़नाक साम्प्रदायिक राष्ट्र सोवियट रूस है, जो तलवार के जोर से कम्यूनिस्ट मज़हब का प्रचार करना चाहता है। हमारे पोलिटिकल चोटी के नेताओं को ध्यान पूर्वक हमारी बात सुन लेनी चाहिए कि बौद्ध काल में जिस सर्वश्रेष्ठ संस्कृति का प्रचार भारतवर्ष ने एशिया में किया था, तो उस पवित्र कार्य के करने में उसने किसी प्रकार के पशुबल का प्रयोग नहीं किया। भारतीयों ने कभी भी तलवार के जोर से अपने धर्म का प्रचार नहीं किया। हिन्दुओं का हज़ारों वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि उनकी सेनाओं ने अपने सिद्धाँतों के प्रचार के लिये किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। डा० सैय्यद महमूद ने पटना में व्याख्यान देते हुए हिंदुओं को—The most Lovable pepole अर्थात् अत्यन्त स्नेह करने वाले लोग बतलाया—ऐसे हिन्दुओं पर यदि उनके विरोधी साम्प्रदायिक होने का दोष लगावें तो यह उनकी अज्ञानता ही तो है।

जब पश्चिमी राष्ट्रों ने जर्मनी और जापान में जाकर अमरीका की सहायता से वहां के लोगों को प्रजातन्त्रवाद सिखलाने का ढोंग किया तो यह उनकी साम्प्रदायिकता ही कही जायगी। हारी हुई जातियों को तलवार के जोर से अपने पोलिटिकल सिद्धाँत सिखलाना साम्प्रदायिकता नहीं तो और क्या है? यह स्वार्थी मनुष्य अपनी आँख का शहतीर नहीं देखता, लेकिन दूसरों की आँखों का तिनका भी उसे दिखाई देता है।

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि ब्राह्मण समाज की भयंकर भूलों के कारण हिंदू समाज का ढाँचा बहुत बिगड़ गया है और इसमें लज्जा जनक कुरीतियाँ प्रचलित हो गई हैं, जिनके कारण भारत-

वर्ष को सैंकड़ों वर्षों की गुलामी सहनी पड़ी, लेकिन यह बात भी ध्रुव सत्य है कि जिन आर्यों ने इस देश में अपना स्वराज्य स्थापित किया था, वे विचार-स्वातंत्र्य के ज़बरदस्त पोषक थे और उन्होंने अपनी संतान को विभिन्नता में एकता के सुन्दर सिद्धान्त से अलंकृत किया था, इसी कारण उनकी चतुर्मुखी उन्नति हुई। यह केवल हिंदू धर्म ही है, जिसकी प्रेरणा से यहाँ के नागरिकों ने दुःखी यहूदियों और पारसियों को अपने यहाँ प्रेम से आश्रय दिया और सदा बाहर से आये हुए अभागे अतिथियों को सब प्रकार की सहायता दी। उस विशाल हृदय रखने वाले हिंदू धर्म को साम्प्रदायिक कह कर बदनाम करना केवल अपनी मूर्खता ही प्रकट करना है।

आज भारतवर्ष स्वाधीन हो कर संसार को संदेश देने के लिए खड़ा हुआ है। अध्यात्मवाद का वह पवित्र संदेश तभी दिया जा सकता है यदि हममें सत्य और न्याय की विमल भावना होगी। अस्पृश्यता का भीषण रोग रखने वाले, छूत-छात में जकड़े हुए और प्रमाणवाद की जंजीरों से बंधे हुए हिंदू कभी भी विश्व को वेदांत का संदेश नहीं सुना सकते। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका जाकर वेदांत का बिगुल बजाया और बेलूर मठ में पड़े हुए संन्यासी अमरीका के भिन्न-भिन्न नगरों में जाकर अपने मठ बनाकर बैठ गए, किंतु उनके उस प्रचार से वहाँ के जन-साधारण को नगण्य सा लाभ पहुँचा, हाँ वहाँ के धनी मानी स्त्री-पुरुषों को दिमागी ऐयाशी का कुछ सामान अवश्य मिल गया। असली शक्ति तो जनता जनार्दन की होती है। जब इसके प्रतिनिधि महात्मा गाँधी ने सच्चे वेदांत का सिंहनाद किया, उन्होंने विश्व में हिंदू संस्कृति का वह प्रचार कर दिया, जो १००० विवेकानन्द भी नहीं कर सकते थे। इस लिए भारतवर्ष में सेक्यूलर सरकार की स्थापना तो यहाँ के बहुसंख्यक हिंदुओं को किसी सूरत में नहीं अखरेगी किंतु वे ऐसी सेक्यूलर सरकार को कभी सहन नहीं करेंगे, जो ईसाई-मुस्लिम मजहबों में तो बिल्कुल दखल न दें किंतु हिंदुओं की

परम्पराओं को नष्ट करने के लिए "हिंदू कोड बिल" बना दें। सेक्यूलर सरकार का इस प्रकार का ढोंग हिंदू कभी बरदाश्त नहीं कर सकते। यदि सेक्यूलर सरकार की घोषणा करने वाले शासक हिंदू कोड बिल के साथ-साथ मुसलमानों की Polygamy अर्थात् बहु-विवाह के विरुद्ध भी कानून बना देते तो लोगों की समझ में सेक्यूलरिज्म की महत्ता आ जाती है। मुसलमानों को खुश करने के लिए सेक्यूलर सरकार का बहाना करना और हिंदू समाज पर चोटें करते चले जाना ढोंग नहीं तो और क्या है!

आज हमें साम्प्रदायिकता शब्द को भली प्रकार समझ लेना चाहिये। जिस समय, स्वर्गीय मौलाना मुहम्मदअली ने ये ऐतिहासिक शब्द कहे थे—"गिरे से गिरा हुआ मुसलमान भी महात्मा गाँधी से अच्छा है।"—तो उन्होंने साम्प्रदायिकता का नग्न रूप दुनिया को दिखला दिया। जहाँ पार्टीबाजी होगी, जहाँ गुटबंदी का राज्य होगा, वहीं साम्प्रदायिकता अर्थात् "Communalism" का घिनौना रूप दिखाई देगा। जब किसी देश का शासन करने वाली पोलिटिकल पार्टी अपने रिश्वत लेने वाले भ्रष्टाचारी मंत्रियों का पक्ष लेती है और उन्हें दल से बाहर नहीं निकालती तो वह साम्प्रदायिक बन जाती है। सम्प्रदायिकता का सम्बन्ध किसी धर्म विशेष के साथ नहीं होता, उसका सच्चा रिश्ता अन्यायपूर्ण गुट बंदी, अनुदारता और असहनशीलता के साथ होता है, जिसके कारण मनुष्य मनुष्य का शत्रु बन जाता है और उसमें सत्य और न्याय को समझने तक का विवेक नहीं रहता।

संक्षेप में यदि हम साम्प्रदायिकता को दूर करना चाहते हैं, यदि हमारी इच्छा इस देश में विशुद्ध धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने की है, यदि सचमुच हम भारत-संघ को सतयुगी शासन बनाना चाहते हैं—ऐसा शासन जिसमें सब नागरिकों को बराबर के अधिकार मिलें और यह राष्ट्र शक्तिशाली बन जाय—तो उसका एकमात्र

उपाय बुद्धिवाद का प्रचार करना है। वह बुद्धिवाद क्या चीज है? उस बुद्धिवाद से हमारा अभिप्राय यह है कि भारत संघ का प्रत्येक नागरिक अपने विवेक को मजहबी गुरुओं के सुपुर्द न करे बल्कि अपने मस्तिष्क को काम में लाकर स्वयं सम्मति बनाना सीखे। अब तक जो बुरा प्रभाव उस पर मौलवी मुल्लाओं अथवा धर्माचार्यों का रहा है, वह उनके उस शिकंजे से छूट जाय—क्योंकि कुरान में ऐसा लिखा है, क्योंकि बाइबिल ऐसा सिखाती है, क्योंकि वेद ऐसा कहता है आदि प्रमाणों के ढंग से सोचने की उसकी दोषपूर्ण आदत हट जानी चाहिए। सैंकड़ों वर्षों से ये मजहबी पूंजीपति अबोध जनता का शोषण कर उसे गलत रास्ते पर ले जाते रहे हैं। बुद्धिवाद समय की पुकार सुनने वाली उपयोगितावादी विचारधारा है। कोई वस्तु प्राचीन अथवा नवीन होने से स्वीकार करने योग्य नहीं हुआ करती, बल्कि उसकी उपयोगिता ही उसे आदर का स्थान दिलाती है। १३०० वर्षों की पुरानी किताब और १९०० वर्षों की पुरानी कथायें इस बीसवीं शताब्दि में सम्पूर्णतया उपयोगी नहीं हो सकतीं, हाँ उनकी कुछ बातें अवश्य ही स्वीकार करने योग्य मानी जा सकती हैं।

यदि आज हम भारत-संघ को धर्मनिरपेक्ष शासन से विभूषित करना चाहते हैं। तो हमें निर्भय होकर सच्ची-सच्ची बातें प्रजा से कहनी ही पड़ेंगी। आज इस देश में पोलिटिकल गुलामी के कारण बदबूदार कचरे के ढेर साहित्य और रूढ़ियों के रूप में जगह-जगह पड़े सड़ रहे हैं। आइये हम सब मिल कर उन्हें जला कर खाद बना डालें और समयानुसार समाज की रचना करें।

अगले अध्याय में इतिहास की छाया लेकर धर्मनिरपेक्ष नीति से विभूषित शासन को रखने वाले राष्ट्र की बरकतें अपने प्रेमी पाठकों के सामने रखते हैं।

———

## नवाँ अध्याय

# धर्मनिरपेक्ष नीति की बरकतें

मध्य कालीन योरुप में जब ईसाई धर्म का जोर बढ़ा तो वहाँ की धार्मिक अवस्था सोलह आना साम्प्रदायिक थी। बाइबिल-धर्म के सिवाय वे किसी दूसरे मत को मानते नहीं थे, इसी लिए उन्होंने जहाँ जहाँ भी इस्लामी मज़हब के चिह्न थे उन से योरुप के महाद्वीप को शुद्ध करने का प्रयत्न किया था। जब तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया को विजय किया और वे अपनी इस्लामी विजयों के मद में पुस्तकालयों को जलाते हुए और दूसरे देशों के विद्वानों और प्रजा को आतंकित करते हुए इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर पर सत्तारूढ़ हुए तो वहाँ के यूनानी दार्शनिकों और महापण्डितों ने अपने साहित्य और संस्कृति के उच्चत्तम ग्रन्थों को लेकर योरुप की ओर पलायन किया। वह इटली के फलोरेंस नगर में जा कर वहाँ के विश्वविद्यालय में बैठ गये और इस प्रकार उन्होंने अपने देश की अमूल्य निधि की रक्षा की।

योरुप में उस समय तक शिक्षा का ढंग साम्प्रदायिक नियमों के अनुसार हो रहा था। बाइबिल ही सब ज्ञान का स्रोत है, वही ईश्वर की दी हुई पुस्तक है और उसी में विश्व की आवश्यकताओं के लिए खुदा ने ज्ञान भरा है—यह धारणा सारे योरुप के शिक्षणालयों में ओत-प्रोत हो रही थी। जैसे भारतवर्ष के संस्कृत केन्द्रों में बैठे हुए

विद्वान् "घी पत्ते के ऊपर है अथवा पत्ता घी के ऊपर है" जैसी निकम्मी तर्कों में अपना समय नष्ट करते रहते हैं, जैसे हमारे यहाँ के महापण्डित पौराणिक गाथाओं की असम्भव बातों को लेकर उनके हल करने में माथा-पच्ची किया करते हैं, ठीक वैसे ही योरुप के विश्व-विद्यालयों में ईसाई धर्मानुयायी अध्यापक थोथी तर्कों और समय बरबाद करने वाली मज़हबी घुन्डियों में अपना सिर खपाया करते थे। "सूई की नोक में से कितने देवता निकल सकते हैं"—ऐसी ऊल-जलूल उलझनों को सुलझाने में उन का बहुमूल्य समय बीतता था और इसी प्रकार का था उनका शिक्षा का क्रम। ऐसे ही भोजन को खाकर पढ़ने वाले विद्यार्थी वहाँ के स्नातक बना करते थे।

यह था मध्यकालीन युग उस योरुप का, जो आज वैज्ञानिक उन्नति के चमत्कारों से संसार को विस्मित कर रहा है। जैसे हमारे यहाँ के आजकल के पण्डित व्याकरण की फक्किकाओं को विद्यार्थियों के गले उतारते हैं और वे विद्यार्थी उन्हें घोट-घोट कर अपने आप को धन्य-धन्य मानने लगते हैं, ठीक यही दशा आज से पाँच सौ वर्ष पहले योरुप के विश्वविद्यालयों की थी। वहाँ के प्रोफेसर भी बाइबिल की कहानियों, उसकी पौराणिक गाथाओं और उसकी असम्भव बातों पर विश्वास कर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को उन्ही का विद्वान् बनाया करते थे। जैसे हमारे यहाँ के संस्कृत पण्डित धार्मिक शिक्षा में तर्क को स्थान नहीं देते और अंधविश्वासी बन कर रूढ़िवादी बने हुए हैं, ठीक यही दशा उस समय योरुप के शिक्षित समुदाय की थी जो बुद्धि को ताक पर रख कर अपने धर्माचारियों की बातों पर विश्वास किया करते थे। योरुप में उस मध्यकालीन युग को परिवर्तन करने वाली बलवती शक्ति यूनान के उन अध्यापकों द्वारा योरुप में पहुँची, जो कुस्तुन्तुनिया से भाग कर इटली में आये थे। धीरे-धीरे यूनान् के युग-प्रवर्तक संत सुकरात, महाज्ञानी प्लेटो और दार्शनिक विद्वान अरस्तु के विज्ञानवाद का प्रवेश योरुप के इन विश्वविद्यालयों में हुआ।

यहीं से मजहब और साइंस की टक्कर प्रारम्भ हुई।

इस समय तक योरुप की रियासतें धर्माचार्यों के आदेशानुसार बाइबिल के सिद्धान्तों द्वारा शासित होती थीं और वहाँ के शासक तथा प्रजा रोमन कैथोलिक धर्म के मानने वाले होते थे। रोम स्थित पोप उनका सब से बड़ा धर्मगुरु माना जाता था। इसी के विरुद्ध जर्मनी में उत्पन्न प्रसिद्ध सुधारक मार्टिन लूथर ने विद्रोह कर दिया। उस समय से योरुप की प्रजा में धर्म सम्बन्धी दो विरोधी दल हो गये और उन में भयंकर मारकाट मची। यूनानियों की दार्शनिक शिक्षा के प्रभाव से जब विज्ञानवाद ने विश्वविद्यालयों के छात्रों के मस्तिष्क में विचार स्वातंत्र्य के भाव भरे तो योरुपीय राष्ट्रों में बड़ी उथल-पुथल मची, तीन सौ वर्षों तक ईसाई धर्म और विज्ञान में जदोजहद होती रही, जिस का परिणाम समाज में धर्मनिरपेक्ष नीति का अत्यन्त मीठा फल निकला।

अब हम इस विषय को अधिक स्पष्ट करते हैं। मध्यकालीन युग में योरुपीय राष्ट्र के नागरिकों को विचारों की आजादी नहीं थी। वे बाइबिल के डंडे से हाँके जाते थे, जैसा कि पाकिस्तान आज कुरान के डन्डे से शासित हो रहा है। पाकिस्तान आज योरुप के उस मध्य-कालीन युग का अनुयायी है जब मजहब में बुद्धि के लिए कोई स्थान न था—जब रोमन कैथोलिक प्रोटेस्टेंटों को और प्रोटेस्टेंट रोमन कैथो-लिकों को जीता जला दिया करते थे। आज भी पाकिस्तान में कादि-यानियों को जीता जलाया जाता है और यदि कादियानियों का वश चलेगा तो वे कल अपने विरोधियों के साथ वैसा ही बरताव करेंगे। पाकिस्तान आज सभ्य संसार से चार सौ वर्ष पीछे है और वहाँ के नागरिक ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दि के मजहबी दिवानों की तरह धर्मा-न्धता में डूबे हुए हैं। ऐसे राष्ट्र में सत्य और न्याय के लिए कोई स्थान नहीं रहता और सदा 'जहाद' की घोषणाएँ लगाई जाती हैं।

योरुप के राष्ट्र जब ईसाईयों के दो विरोधी सम्प्रदायों की मार-

काट से तंग आ गये और उसकी साँसारिक उन्नति बुरी तरह से रुक गई -- उन्हें सदा युद्धों का भय बना रहने लगा तो उन्होने लाचार होकर मजहब को नागरिकों का निजी अधिकार स्वीकार कर उसे स्टेट से बिल्कुल अलग कर दिया और धर्मनिरपेक्ष नीति अपना ली। योरुप की उन्नति के रहस्य का यही संक्षिप्त इतिहास है। इस नीति के अपना लेने से राष्ट्र अपने सब नागरिकों को बराबर के अधिकार देता है। वह उनके साथ न्याय का बरताव करता है और विचारों की आजादी देकर उन्नति का द्वार खोल देता है। उस राष्ट्र के शासन में भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्मों को मानने वाली प्रजा सुख-पूर्वक रहती है और किसी प्रकार के झगड़े-फसाद वहाँ के नागरिकों में नहीं होते। स्टेट के शासक धर्मनिरपेक्ष नीति अपनाते हैं और जो भी कानून लागू होता है, वह सब धर्मों के प्रतिनिधियों की वोटों द्वारा किया जाता है। अधिकाँश लोग जिस राय को स्वीकार करते हैं और जिन्हें उपयोगी समझते हैं, उसे ही कानून का रूप दिया जाता है। जो राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष नीति का अवलम्बन करता है, वहां सब धर्मों के मानने वाली प्रजा निर्भय और निर्द्वन्द्व हो कर रहती है, वहीं पर शान्ति विराजती है और वहीं का व्यापार फूलता-फलता है। मानवीय उन्नति के लिए धर्म-निरपेक्ष नीति अत्यंत कल्याणकारी है और वही प्रजातन्त्रवाद की जड़ को मजबूत करती है। इंगलैंड के लोगों ने इसी को अपना कर शासन के पार्लियामेंटरी तरीके को विकसित किया। उसी के पुण्य प्रताप से योरुप के नागरिकों का संगठन दृढ़ हुआ और इसी के आधार पर वे सच्चे देश भक्त बने। जब तक योरुप में साम्प्रदायिक नीति चलती रही, तब तक वहां संगठित राष्ट्र न बन सके और न ही व्यापार का विस्तार हो सका।

भारतवर्ष के प्रगतिशील शासकों ने इस उपयोगी नीति को अपना कर थोड़े ही समय में अपनी धाक सभ्य संसार में जमा दी है। यहाँ पर ईसाई, मुसलमान, पारसी, यहूदी, बौद्ध और जैनी -- सभी विचारों के

लोग सुखपूर्वक अपना धन्धा करते हैं और विकास के पथ पर आरूढ़ होते हैं। यदि उनकी प्रारम्भ से ही यह नीति न होती तो भारतवर्ष खण्ड-खण्ड हो जाता और दूसरा योरुप इस महाद्वीप पर बन जाता।

प्रभु से हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि भारतीय नागरिक साम्प्रदायिक दलदलों से अलग रह कर सब को विचारों की आजादी दें और जिन बरकतों को वे अपने लिये सुखदायिनी समझते हैं उन्हें वे दूसरों को देने के लिए सदा तैयार रहें। [धर्मनिरपेक्ष नीति ही सत्य ज्ञान का द्वार खोलती है और इसी के विकास पर राष्ट्र का विकास अवलम्बित होता है] ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी से यह मज़हब और विज्ञान की धकापेल प्रारम्भ हुई और उसका अंत करने के लिए बड़े-बड़े बलिदान हुए। रूढ़िवाद की जंजीरों से जकड़े हुए धर्मान्ध लोगों को बड़ी कठिनाई से उनके इस मिथ्या विश्वास से निकाला गया और उन्हें सिखलाया गया कि मज़हब वैर करना नहीं सिखलाता, उसका उद्देश्य विभिन्नता में एकता स्थापित करना है। आज है विज्ञान का युग और हमारे सामने है अनन्त का मार्ग। यदि हम आज कुरान बाइबिल, वेद शास्त्र, गीता और धम्मपद की छोटी-छोटी खिड़कियों से ही ज्ञान लेने का अभ्यास करेंगे तो हमें ज्ञान-सूर्य की रश्मियों का पूरा लाभ नहीं मिल सकता। आज हमें सब मतों के लोगों को अपने जैसी स्वतन्त्रता देकर राम राज्य की स्थापना करनी चाहिए। यही कारण है कि हिन्दुओं के इतिहास में कभी भी कोई सेनापति धार्मिक झण्डे लेकर विजयोन्मत्त नहीं हुआ और न कभी धार्मिक मत भेद की बजह से किसी की हत्याएँ ही की गईं। यहाँ तो मस्तिष्क की स्वतन्त्रता को मानव अधिकार समझ कर सब नागरिकों को इस अधिकार से विभूषित किया गया, जिस से वे अपने मस्तिष्क के चमत्कारों का लाभ दूसरों को दे सकें और ज्ञान का द्वार प्रशस्त हो। यद्यपि पाकिस्तान हमारे बगल में है, किन्तु वह अपनी इस भयंकर भूल को देखता नहीं। उसके अधिकाँश नागरिक मज़हबी दिवानापन के नशे में चूर रहते हैं और कुरान

की शरह के सहारे अपने कानून बना कर राज्य चलाना चाहते हैं, जो सर्वथा असम्भव है। हम जब पाकिस्तान को एक मृगतृष्णा कह कर उसकी ओर संसार के लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं तो हम यह किसी द्वेष वश नहीं कह रहे। प्रथम तो पाकिस्तानी नेताओं ने मज़हब के सिद्धान्त को सामने रख कर अलग राष्ट्र की माँग की, जो सर्वथा अस्वाभाविक बात थी। उन्होंने स्वयं ही इस बात को स्वीकार कर लिया कि इस्लाम धर्मावलम्बी दूसरे धर्मानुयायियों के साथ नहीं रह सकते—उनका अलग राष्ट्र होना चाहिए। अपनी रियासत के इस आधार को स्वीकार कर लेने से ही उन्होंने इस बात को सिद्ध कर-दिया कि उनका मज़हब मिल कर रहना नहीं सिखलाता बल्कि सदा दूसरों के साथ झगड़े उत्पन्न करता है। पाकिस्तान की माँग के जो पेशवा थे उन्होंने यह न सोचा कि जो मुसलमान हिन्दुस्तान में शताब्दियों से रह रहे हैं, उन्हें इस प्रकार अलग कर वे उनके अन्दर सोई हुई द्वेशाग्नि को भड़का रहे हैं और वह द्वेशाग्नि जब पाकिस्तानी प्रजा का स्वभाव बन जायेगी तो पाकिस्तान में कोई भी भिन्न मतावलम्बी सुखपूर्वक नहीं रह सकेगा। यह मुस्लिमलीगी नेता केवल अपने स्वार्थ के लिए दो कौमों के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर रहे थे। वह ऐसे विवेक भ्रष्ट हुए कि उन्होंने अपने मज़हब के करोड़ों मनुष्यों को भारत-संघ में छोड़ कर अपनी एक अलग स्टेट इस लिए बना ली कि वे प्रत्येक सम्भव अवसर पर भारत में बसे हुए मुसलमानों को बहकाते रहा करेंगे और इस प्रकार हिन्दुओं को चैन से सोने नहीं देंगे। लेकिन इन अज्ञानियों ने यह न सोचा कि दूसरों का इस प्रकार बुरा सोचने वाला अपने ही पैरों पर कुलहाड़ी मारता है और बुराई का बीज बोने वाले सदा बुराई ही काटा करते हैं। पिछले छः वर्षों के अनुभव ने दुनिया को यह बतला दिया कि पाकिस्तान के नेताओं की बुराई का नतीजा उन के लिये कैसा खौफ़नाक हुआ है। लाखों हिन्दू और सिख अपनी अरबों रुपयों की सम्पत्ति पाकिस्तान में छोड़ कर भारत-संघ में चले गये थे। वे सिख

और हिन्दू तो अपने पुरुषार्थ से आज अपनी आर्थिक दशा सुधार कर फिर संसार के सामने खड़े होने लगे हैं और यह पाकिस्तानी अरबों रुपयों की सम्पत्ति पाकर भी आज भिखमंगे बन रहे हैं। पश्चिमी पाकिस्तान का यह भूभाग सारे भारतवर्ष के लिए गेहूँ उपजाता था और इस का गेहूं संसार की मंडियों में पहुँचता था, वह पाकिस्तान अब भूखा मर रहा है और अमरीका उसे दया कर गेहूं देकर बचाने का प्रयत्न कर रहा है—है न यह किस्मत के खेल! जिन्होंने धनधान्यपूर्ण देश पाया, करोड़ों रुपयों का सोना चाँदी, कपड़े तथा सामान जिनके हाथ आया। और जिन्हों ने ५५ करोड़ रुपया गाँधी जी से ठग लिया वे आज नंगे खड़े हैं और उन की शस्यदा भूमि उनके लिए बंजर हो गई है न यह खुदा की मार—यदि इन पाकिस्तानियों को जरा भी विवेक होता और थोड़ी भी सहज बुद्धि इन में बच रहती तो वे अपने गुनाहों का कफ़ारा कर खुदा के सामने तोबाह पुकारते और भविष्य के लिए सब के भले में अपना भला मान कर शान्ति पूर्वक रहने का प्रयत्न करते।

लेकिन नहीं, जब इन्हें हिन्दू लड़ने के लिए न रह गये तो यह अपने ही धर्मावलम्बियों से लड़ने की तरकीबें सोचने लगे। इन के मौलवी मुल्लाओं ने मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी के अनुयायियों को काफ़रों का फ़तवा दे दिया—बस फिर क्या था? एक ही खुदा, एक ही पैगम्बर और एक ही कुरान के मानने वाले यह दो मुस्लिम फिरके एक दूसरे के जानी दुश्मन हो गये और उन में ऐसे दंगे फसाद हुए, जिन्हें देख कर पृथ्वी काँप उठी और फौजी शासन पाकिस्तान में स्थापित किया गया, तब कहीं जाकर इन नालायकों की अक्ल ठिकाने आई और कत्लेआम बन्द हुआ।

आज हम डंके की चोट से यह घोषणा करते हैं कि बुद्धिवाद को अपनाये बिना और धर्मनिरपेक्ष नीति की स्थापना किये बिना पाकिस्तान कभी जिन्दा नहीं रह सकता, क्योंकि वह सभ्य संसार से चार सौ

वर्ष पिछे है। भारतवर्ष के साथ रह कर तो उसका गुजारा किसी तरह से हो सकता था, क्योंकि प्रगतिशील हिन्दू अपने मुसलमान बन्धुओं को सहारा दिये जा रहे थे, किन्तु अलग रह कर आधुनिक ढंग के राष्ट्र को चलाना कोई खाला जी का घर नहीं। यदि पाकिस्तान के नेता इस बात का दृढ़ निश्चय कर लें कि वह कुरान की शरह को एक ओर रख कर मौलवी मुल्लाओं के जाल से जाहिल प्रजा को छुड़ा धर्म-निरपेक्ष नीति के आधार पर अपने संविधान बनायेंगे और भारत-संघ के साथ कभी भूल कर भी झगड़े में नहीं उलझेंगे तो उनके रास्ते के काँटे बहुत कुछ निकल सकते हैं और उन की प्रजा आर्थिक कठिनाइयों को हल कर सकती है। लेकिन यदि उन्होंने जहाद फिसाद की बातें ही की और उन्हीं के सहारे अपने पड़ौसियों को डराने-धमकाने की नीति को जारी रखा तो उन्हें जान लेना चाहिए कि उनका पाकिस्तान चन्द दिनों का पाहुना है, जिसे युद्ध का भूकम्प सहज में ही तहस-नहस कर देगा और पाकिस्तानी अपने दुष्कर्मों के कारण मर मिटेंगे।

इतना कथन करने के बाद अब हम काश्मीर की ओर मुंह करते हैं, जिस के सहारे मि० जिन्ना ने पाकिस्तान का हवाई किला बाँधा था और जिस के कारण पिछले छः वर्षों में पाकिस्तान और भारत-संघ में वैमनस्य चला आ रहा है। आशा है हमारे पाठक बड़े धैर्य से दत्तचित्त होकर काश्मीर सम्बन्धी हमारी कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तब उन्हें पता लगेगा कि पाकिस्तान का सारा हवाई महल काश्मीर के मीठे स्वप्नों पर ही बनाया गया था, जिसे गिरता हुआ देख कर आज पाकिस्तानी नेता होश हवास खो बैठे हैं। लीजिये अब हम आपको काश्मीर की दिलचस्प कहानी सुनाते हैं।

:*o*:

दसवाँ अध्याय

# काश्मीर की कहानी

भारत-संघ के नागरिक जब अपने समाचार पत्रों में पकिस्तान जनता की जहाद की चिल्लाहट की खबरें पढ़ते हैं और उनमें काश्मीर का विशेष तौर से जिक्र सुनते हैं तो उन्हें बड़ी हैरानी होती है कि पाकिस्तान जनता और उनके नेता काश्मीर के लिए ऐसी स्नेहभरी सहानुभूति क्यों रखते हैं और काश्मीरियों को मुक्त कराने, उनके दुखों को दूर करने के लिए पाकस्तानी जनता अपने शरीर का रक्त बहाने के लिए फौरन तैयार क्यों हो जाती है ? आये दिन इस प्रकार की खबरें और जहाद की घोषणाएँ पाकिस्तानी-पत्रों में बराबर छपती रहती हैं, पिछले छः वर्षों में न जाने कितनी बार काश्मीर को मुक्त कराने की खातिर भारत-संघ को धमकियाँ दी गई, चंगेज़ खाँ और तैमूर के कारनामे दोहराये गये और कठोर से कठोर भाषा में भारत सरकार को डराने धमकाने का प्रयत्न किया गया—परन्तु अन्त में ढाक के तीन पात वाली कहावत के अनुसार पाकिस्तान की यह सब उछल कूद टाँयें-टाँयें फिस हो गई ।

एक विवेकशील मनुष्य जब इस बात पर गौर करता है तो ऐसा लगता है कि आखिर पाकिस्तान शासकों की काश्मीर के प्रति इतनी बेचैनी का कारण किया है, भारत में भी तीनचार करोड़ के करीब मुसल-

मान बसते हैं, वे भी तो पाकिस्तानियों के भाई हैं और वे भी भारत-संघ के शासन में हैं, फिर यदि काश्मीर के ४० लाख मुसलमान भारत सरकार की छत्रछाया में आ जायेंगे तो कौन सा बड़ा गज़ब हो जायगा। काश्मीर के सम्बन्ध में कौन सी ऐसी रहस्यपूर्वक बात है, जो पाकिस्तानियों को मौसम बे मौसम बावला बना देती है और वे पागलों की तरह प्रलाप करने लगते हैं। हमें पहले काश्मीर के सम्बन्ध में कुछ विस्तार से चर्चा कर लेनी चाहिये, जिससे यह विषय सहज में ही हमारे पाठकों की समझ में आजाय।

काश्मीर को रियासत हिमालय पर्वत माला के उत्तर पश्चिमी कोने पर नंगा पर्वत की सीमा के पास स्थित है। भारत के उत्तर-पश्चिम में नैसर्गिक छटाओं से परिपूर्ण यह सुन्दर घाटी जम्मू और काश्मीर के नाम से विख्यात है। कवियों ने उसकी उपमा स्वर्ग से की है और यह कहा है कि यदि सचमुच स्वर्ग नाम का कोई रमणीय स्थान भूतल पर अपना अस्तित्व रखता है तो निश्चय ही वह काश्मीर का यह भूभाग है। सन् १६२० ई० में हमने काश्मीर घाटी की यात्रा की थी। उन दिनों हमारा मौन व्रत था और तीन महीने का चाँद्रायण व्रत करने के बाद, हम ने यह मौन व्रत लिया था। इस सुरम्य स्थली में जाने के लिए दो निश्चित मार्ग हैं और ब्रिटिश शासन काल में यात्री उन्हीं मार्गों से काश्मीर जाया करते थे — एक मार्ग है सियालकोट की ओर से जम्मू होते हुए श्रीनगर पहुँचना और दूसरा रावलपिंडी से मोटर द्वारा बारह मूला होते हुए श्रीनगर में प्रवेश करना। सन् १६२० के अप्रैल मास में हम इसी रास्ते से श्रीनगर गये थे और वहाँ के अतिथि गृह में जाकर आसन लगाया था। घूमते घामते हम जेहलम नदी के स्रोत के पास चश्मेशाही के निकट जा पहुँचे और वहाँ के बाग़ में दो मास तक रहे।

निस्सन्देह काश्मीर की यह घाटी का संसार में एक अद्वितीय दर्जा है। हम पुराने घुमक्कर हैं और हमने योरुप, अमरीका और भारत के भिन्न-भिन्न भागों में पैदल भ्रमण किया है। हिमालय पार कर हम तिब्बत

की सैर भी कर आये हैं और हम ने कैलाश के पवित्र तीर्थ की यात्रा भी की है और साथ ही मानसरोवर की लावण्यमयी भूश्री को भी देखा है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि सचमुच काश्मीर का यह भूखण्ड अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए संसार में उच्च स्थान रखता है।

जम्मू से जो रास्ता इस घाटी की ओर आता है वह पीर पंचाल बनिहाल नामी दर्रे के ऊपर से होकर आता था। उस समय तक इस पर्वत को छेद कर रास्ता नहीं बनाया गया था—वह बोगदा अभी बन रहा था। बनिहाल दर्रे पर चढ़ने के लिए सैंकड़ों सीढ़ियाँ भी बनी हैं जो यात्री को जम्मू की ओर ले जाती हैं। सन्ध्या के समय आठ नौ हज़ार फीट ऊपर इस घाटे पर ऐसी तेज़ हवा चलती है कि कलेजा मुँह को आता है। हमने सूर्यास्त के बाद की यहाँ की ठंडी हवा के थपेड़े खूब खोये हैं और इन्हीं सीढ़ियों से उतर कर जम्मू की ओर लौटे थे। फलों से लदे हुए पेड़ अपनी ऋतु में मनोरम दृश्य दिखाते हैं। जेहलम नदी चश्मेशाही के गर्भ से उछल-उछल कर घाटी में आती है और आगे चल कर एक बड़ी झील के रूप में बदल जाती है। भारतवर्ष के साथ इस भूभाग का प्राकृतिक सम्बन्ध है, क्योंकि यहीं से इसकी प्रसिद्ध नदियाँ पंजाब के नीरोग प्रांत को अपने जल से सींचती हैं और सिंधु नदी तिब्बत से आकर यहीं अपना जल प्रपात फेंकती है और तब भारत की पश्चिमी सीमा को बनाती हुई समुद्र में जा गिरती है।

भौगोलिक दृष्टि से काश्मीर भारत-संघ के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अफ़ग़ानिस्तान, रूस और चीन इस की सीमाओं को छूते हैं और गिलगित की प्रसिद्ध पर्वत स्थली काश्मीर में ही उन्नत मुख किए विराजती हैं, जहाँ पर भारत-संघ की रक्षा करने के लिए सब प्रकार के फौजी साधन रखने अत्यावश्यक हैं। अंग्रेजों ने अपना ज़बर्दस्त फौजी अड्डा यहीं पर बनाया हुआ था। यहीं से वे इन तीन पड़ौसी राष्ट्रों पर कड़ी नज़र रखा करते थे।

भारत का विभाजन होने के समय काँग्रेस नेताओं से जहाँ और

बड़ी भूलें हो गईं, वहाँ काश्मीर के सम्बन्ध में भी वे बड़ी गलती कर बैठे। जब भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान बना, तो उस पाकिस्तान में लाहौर से लेकर उत्तर पश्चिमी सीमा तक प्रदेश तथा सिंध भारत से काट कर अलग कर दिया गया। पूर्वी बंगाल भी इसी प्रकार अपने भाई पश्चिमी बंगाल से अलग हो गया। इस प्रकार यह भाग तथा पूर्वी बंगाल का कटा हुआ हिस्सा मिलकर पाकिस्तान नाम की मुस्लिम रियासत का सिरमौर बना। मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना का यह ख्याली पुलाव था कि वे शड्यन्त्रों द्वारा काश्मीर की जनता को भड़का लेंगे और इस भूभाग पर कब्ज़ा कर उसे भी पाकिस्तान में मिला लेंगे। तब फिर इसी काश्मीर के रास्ते धीरे-धीरे पाकिस्तानी फौजें पूर्वी बंगाल की ओर बढ़ेंगी और गलियारा सा बना कर दोनों पाकिस्तानों का दृढ़ सम्बन्ध आपस में कर दिया जायगा। विभाजन होने के बाद हिन्दू नेता बिस्मार्क जैसी अद्भुत राजनीति का परिचय देंगे, इसका उसे स्वप्न में भी ज्ञान न था। काँग्रेस नेताओं ने धीरे-धीरे अपनी छोटी-मोटी सब रियासतों को मिला लिया, उन्होंने जूनागढ़ और हैदराबाद जैसी मुस्लिम रियासतों के भी छक्के छुड़ा दिये—इस प्रकार अपने संघ को सुदृढ़ बना उन्हों ने काश्मीर की ओर मुँह किया। दुर्भाग्यवश भारतवर्ष के प्रधान मंत्री, न जाने अपने किस अदूरदर्शी मित्र की सलाह से काश्मीर की समस्या का हल राष्ट्रसंघ से करवाने की इच्छा कर बैठे और इसका सारा मुआमला वहाँ की ऐसम्बली के सामने चला गया। यही भारत की भयंकर भूल थी, जिस के लिए उसे पीछे पछताना पड़ा।

अब हम काश्मीर के इतिहास के सम्बन्ध में कुछ बा॑ पाठकों के सामने रखते हैं। इसके बाद उसकी वर्तमान समस्या का स्वरूप अपने पाठकों को पेश करेंगे। पाकिस्तान क्यों काश्मीर के लिए मरा जा रहा है, इस पर भी प्रकाश डालेंगे।

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दि के मध्य में जब अंग्रेजों ने पंजाब

की सिख रियासतों को अपने वश में कर लिया और महाराजा दलीपसिंह अपनी छोटी अवस्था में ही अंग्रेजी संरक्षण में आ गये तो उस समय की सन्धि के अनुसार अंग्रेजों ने डेढ़ करोड़ रुपया सिख सरकार से लेना था। अंग्रेजों को महाराजा दलीपसिंह ने उस रुपये के बदले में जम्मू और काश्मीर का यह पहाड़ी इलाका दे दिया जिसे महाराजा गुलाब सिंह ने बाद में अंग्रेजों से संधि कर उन से यह भूभाग खरीद लिया। महाराजा रणजीत सिंह जी की मृत्यु के बाद सिख सरदारों में फूट फैल गई थी और वे गिद्धों की तरह महाराजा रणजीत सिंह की रियासत का बटवारा करने लग गये थे। उनकी इसी स्वार्थपरता का परिणाम यह हुआ कि पंजाब की सिखाशाही खत्म हो गई और महाराजा गुलाब सिंह काश्मीर के शासक बन गये। उनके बाद उनके लड़के ने कुछ वर्षों तक राज्य किया और फिर उनके पोते प्रताप सिंह जी ने काश्मीर की गद्दी सम्भाली। यह बड़े राजनीतिज्ञ थे। लेकिन दुर्भाग्यवश अफीम खाते थे। इन्होंने अपना राज्य कार्य बड़ी बुद्धिमत्ता से चलाया और अंग्रेजों से सदा सतर्क रहे। इन की बड़ी इच्छा थी कि काश्मीर के सब मुसलमानों को हिन्दू बना लिया जाय, जिस से रियासत के लिए यह अरबी तत्व का खतरा सदा के लिए मिट जाय।

अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हों ने कुछ अपने राज्य भक्त अनुचरों को काशी के पण्डितों के पास व्यवस्था माँगने के लिए भेजा। बनारस के इन बुद्धू पण्डितों ने अदूरदर्शिता के इस स्वर्ण अवसर को हाथ से खो दिया। उन्होंने महाराजा साहब के पास मूर्खता-भरी व्यवस्था लिख कर भेजी कि क्या कभी कोई गधा भी घोड़ा बन सकता है? उन्हों ने यह न सोचा जब घोड़ा गधा बन सकता है तो गधा घोड़ा क्यों नहीं बन सकता? लेकिन यह संस्कृत के पण्डित पोंगापंथी होते हैं -- इनमें ऐसी कुशल व्यवहारिक बुद्धि कहाँ!

महाराजा प्रतापसिंह बड़े कट्टर सनातन धर्मी थे और ब्राह्मणों का उन पर बड़ा प्रभाव था। ऐसे उत्तर को पा कर वे निराश हो गये

और काश्मीर रियासत की यह महान् समस्या काशी के पण्डितों की अव्यवहारिक बुद्धि के कारण हल न हो सकी। आज उन्हीं मुसलमानों के कारण पाकिस्तान काश्मीर पर अपना झूठमूठ का हक जमाता है और बेतुकी बातें करता है।

जब सन् १९४७ में अंग्रेजों ने इंगलैंड जाने के लिए अपना बिस्तरा गोल किया तो उस समय महाराजा हरिसिंह काश्मीर में राज्य करते थे। अंग्रेजों ने धूर्त्तावश काश्मीर के विषय में यह फैसला कर दिया कि काश्मीर स्टेट को पूरी स्वतन्त्रता है—वह चाहे पाकिस्तान में सम्मिलित हो, चाहे भारत-संघ में। पाकिस्तानी तो मुफ्त का माल हथियाने के लिए इधर-उधर हाथ पैर मार रहे थे। उन के नेताओं ने जब यह देखा कि काश्मीर का कोई मददगार नहीं और अंग्रेज वहाँ से चले गये हैं तो उन्हों ने काश्मीर पर कब्ज़ा करने के लिए एक भयंकर षड्यन्त्र रचा। अशिक्षित काश्मीरी मुसलमान जल्दी उनके चकमे में आ गये और उन्होंने समझा कि अब इस्लामी सल्तनत के अधीन रहकर वे खूब मोज बहार करेंगे। पाकिस्तान ने सरहदी लुटेरों को लूटमार का लोभ देकर काश्मीर पर हाँक दिया और उन की सहायता के लिए अपनी फौजें भी रवाना कर दीं। इन लुटेरों ने सीमा पर बसे हुए हिन्दू मुसलमानों को बुरी तरह से लूटना प्रारम्भ किया और बलात्कार तथा अग्नि काँडों की झड़ी लगा दी। महाराजा हरिसिंह जी ने बड़ी द्रुतगति से अपने दूतों को भारत-संघ की काँग्रेस सरकार के पास सहायता के लिए भेजा। पण्डित नेहरू तथा पटेल जी ने विद्युतगति से अपनी सेना हवाई जहाजों से काश्मीर की ओर रवाना कर दी। पाकिस्तान की फौजें श्रीनगर की घाटी की ओर चली आ रही थीं और यदि थोड़ी सी भी देर हो जाती तो यह इस पृथ्वी का स्वर्ग बिल्कुल भस्मसात् हो जाता। हमारे वीर सैनिक रातों-रात शीतकाल की कुछ परवाह न कर काश्मीर जा पहुँचे और ठीक समय पर महाराजा साहब के डोगरा सैनिकों की सहायता की। देखते-देखते पासा पलट गया और पाकिस्तानियों को लेने

के देने पड़ गये । हमारे शूरवीर सेनापति करिअप्पा जी ने कबायलियों की वह मार मारी और पाकिस्तानियों के ऐसे छक्के छुड़ाये कि वह अपना माल असबाब छोड़ कर अपने पाँव सिर पर रखकर भागे और यदि नेहरू जी उस समय की परिस्थिति को दूरदर्शिता से भाँप लेते तो करिअप्पा जैसे समझदार सेनानी काश्मीर की समस्या को सदा के लिए हल कर देते ।

पर पंडित नेहरू जी हैं बड़े सज्जन और सत्पुरुष, वे पाकिस्तानियों की कुटिल चालों को क्या जानें। नेहरू जी ने तो भलमनसाहत कर उन्हें सीमा से खदेड़ दिया और अपनी सेना को पाकिस्तान घुसने से रोक दिया । लेकिन जब राष्ट्र संघ में काश्मीर पर आक्रमण करने का प्रश्न उठा तो पाकिस्तानी मुस्लिम सरकार फौरन मुकर गई और कह दिया कि उनके सिपाहियों ने काश्मीर पर हमला नहीं किया—हमला करने वाले केवल कबायली थे । पर झूठे के पैर तो होते नहीं हैं—आखिर झख मार कर पाकिस्तानी सरकार को आक्रमण की बात माननी पड़ी । गिलगित की ओर का पहाड़ी वन्य देश पाकिस्तानियों ने अवश्य हथिया लिया, जो बाद में उन के लिए सिर-दर्द और बड़ा खर्चीला सिद्ध हुआ ।

उधर महाराजा हरिसिंह जी ने संधि-पत्र द्वारा काश्मीर को भारत-संघ के साथ सम्मिलित कर दिया और हमारी फौजें उसकी रक्षा के लिए काश्मीर की सीमाओं पर तैनात की गईं । तबसे लेकर आज तक हमारा अरबों रुपया और हमारे हज़ारों बहादुर बच्चे इस रियासत की रक्षा के लिए बलिदान हो गये और हम बराबर अपने बचन पर कायम रह कर काश्मीर की रक्षा कर रहे हैं ।

जब पाकिस्तान का यह बवंडर शाँत हो गया तो काश्मीरियों के नेता शेख अब्दुल्ला मैदान में आये और उन्होंने साम दाम दंड भेद से महाराजा हरिसिंह के शासन को समाप्त कर निरंकुश राज्य स्थापित करने की योजना बनाई। उन्हें अशिक्षित जनता के

सामने व्याख्यान देने का बड़ा अभ्यास था और वह थे बड़े वाचाल। नेहरू जी को दम झाँसे देकर उन्होंने बड़ी वफादारी का स्वाँग रचा और महात्मा गाँधी जी के अनुयायी होने का दावा कर धर्मनिरपेक्ष नीति तथा अहिंसावाद की दुहाई देने लगे। "बगल में छुरी और मुंह में राम राम" की कहावत के अनुसार काश्मीर के इस गीदड़ ने सत्य और न्याय की बातें करनी शुरू कर दीं। जैसे शैतान बाइबिल के हवाले देकर दुनिया को ठगने का प्रयत्न करता है उसी प्रकार शेख अब्दुल्ला ने भारत-संघ की संसद और नेहरू जी को चकमे देने प्रारम्भ किये। सरल चित्त नेहरू जी उसकी बातों में आ गए और उसके हर काम में ईमानदारी का रंग देखते रहे। लेकिन वह था बना हुआ महाचंट! उसने धीरे-धीरे अपना जाल सारी रियासत में फैला दिया और अपना अलग पार्लियामेंट बना कर काश्मीर का प्रधान मंत्री बन बैठा। बिचारे हरिसिंह जी काश्मीर का राज्य अपने युवराज को देकर बम्बई जा बैठे और लगे वहाँ से तमाशा देखने! सचमुच काश्मीर में बड़ा विस्मय-जनक तमाशा हुआ। शेख अब्दुल्ला ने जब यह देखा कि नेहरू जी उस पर सोलह आना विश्वास करते हैं तो उसके हौसले बढ़ गए। इधर नेहरू जी ने राष्ट्रपति जी की सलाह से युवराज कर्णसिंह को उस राष्ट्र सभा का अध्यक्ष बना दिया जिस के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला थे। अब लगी शतरंज की बाजी चलने—"तू डाल डाल मैं पात पात" की उक्ति चरितार्थ होने लगी। शेख अब्दुल्ला ने विदेशियों के प्रलोभन के वशीभूत हो कर, कुछ अपनी तानाशाही के बल पर मन में यह सोच लिया कि पाकिस्तान और भारत-संघ की चक्की में न पिस कर उसे काश्मीर का एक अलग स्वतंत्र राष्ट्र ही बना लेना चाहिए। जैसे योरुप में स्विटज़रलेंड की विहारस्थली है। ऐसे ही ऐशिया में काश्मीर नाम की एक सुन्दर क्रीड़ास्थली बनाकर इसे स्वाधीन राष्ट्र कर लिया जाय और शेख अब्दुल्ला तथा उसकी बेगम सोने के सिंहासन पर बैठ कर बाहर से आए हुए सेलानी विदेशियों को अपने दरबार में बुलाया

करें और दरबारी सलाम करवा कर भेंटें लिया करें। इस थर्ड क्लास स्कूल मास्टर ने शेख चिल्ली की तरह बड़े-बड़े अजीबो-गरीब स्वप्न देखने प्रारंभ कर दिये और उसका दिमाग़ फिर गया, वह नेहरू जी को भी तुच्छ समझने लगा। जब महारानी एलिजाबिथ के राज्याभिषेक के अवसर पर नेहरू जी काश्मीर होते हुए लन्दन गए थे तो उस समय भी काश्मीर के इस शेर ने उनके स्वागत में की गई सभा में कुछ ऐसी बातें कर दीं, जिन से नेहरू जी का माथा ठनका और वह लहू का घूंट पीकर रह गये। बाद में उन्होंने जब अपने पालतू शेर को नई दिल्ली में बुलाया तो उनका यह शेर श्रीनगर में बैठा घुड़ाने लगा। तब नेहरू जी ने समझ लिया कि उनका पालतू शेर अब पागल खाने में रखने के लायक हो गया है। बस फिर क्या था, देखते-देखते युवराज कर्णसिंह जी ने अपने पिता का बदला ले लिया और गुस्ताख प्रधान मंत्री को पदच्युत कर उसे नजरबन्द कर दिया। बख्शी गुलाम मुहम्मद काश्मीर के बड़े सुलझे हुए समझदार राजनीतिज्ञ थे, वे शेख जी को बराबर समझाते रहते थे। किंतु अब्दुल्ला तो हवा से बातें करने लग गया था—वह भला अपने सच्चे मित्र की बात को क्यों सुनता। यह थे उप प्रधान मंत्री। कर्णसिंह जी ने इन्हें अपना प्रधान मंत्री नियत कर दिया और चुटकियों में ही यह नाटक समाप्त हो गया। दुनिया दंग रह गई।

जब यह खबर सारे संसार में फैली तो बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ अवाक् रह गए। वे समझते थे कि पण्डित नेहरू बड़ा भोला भाला शान्ति-प्रिय व्यक्ति है। शेख अब्दुल्ला उन्हें आसानी से धोखा दे सकेगा, किंतु आयु के साथ अनुभव भी बढ़ता है। अब नेहरू जी लोगों की कुटिलताओं को भाँपने लगे हैं। जब काश्मीर में इस प्रकार की घटनायें घट गईं और शेख अब्दुल्ला हैरान परेशान होकर ऊधमपुर में ऊधम करने लगे तो पाकिस्तान के अधिकारियों के पाँवों के नीचे की भूमि निकल गई। उन के होश हवास जाते रहे। यह लोग पहले शेख अब्दुल्ला को भारत-संघ की कठपुतली कहते थे और इसके प्रति अपशब्द कहा करते थे। इस

घटना के घटते ही वहाँ शेख अब्दुल्ला एक बलिदान का बकरा बन गया और पाकिस्तानी उस पर तरस खा कर लाल पीले होने लगे। जिस जवाहरलाल नेहरू जी का उन्हों ने भव्य स्वागत कर कराची में उसके लिए मस्जिदों में प्रार्थनायें की थीं, उसी नेहरू को अब "नेहरु मुरदाबाद" के नारों से गालियाँ देने लगे और हिन्दुस्तान पर जहाद करने की आवाज बुलंद की। बलिहारी इन पाकिस्तानियों की अकल पर, घड़ी में मासा घड़ी में तोला! किसी संस्कृत कवि ने सच कहा है—

"क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः रुष्टाः, तुष्टाः क्षणे क्षणे,
अव्यवस्थित चित्तानाम्, प्रसादोपि भयंकरः।"

जो लोग जरा सी देर में तो नाराज़ हो जायं, और जरा सी देर में खुश हो जायं, इसी प्रकार जरा सी देर में खुश और जरा सी देर में नाराज ऐसे गैर-जिम्मेदार छोटे दिल वाले लोगों की प्रसन्नता भी बड़ी खौफ़नाक होती है। यह पाकिस्तानी ऐसे ही हैं। इनकी दोस्ती की दो कौड़ी भी कीमत नहीं। यह लोग जरा सी देर में आँखें बिछाने लग जायँ और फिर थोड़ी देर के बाद ही गालियाँ बकने लगें। जिन लोगों का चित्त ठिकाने नहीं, जिन में जरा विवेक नहीं, जिनकी सहज बुद्धि मारी गई, ऐसे आदमियों से भला कोई समझदार दोस्ती किया करता है?

उन भलेमानसों से कोई पूछे कि काश्मीर में कौन सी अनहोनी घटना घट गई, जिसके कारण तुमने इतनी जल्दी पैंतरा बदल लिया। क्या संसदों का प्रधान मंत्री नहीं बदला करता? क्या तुम्हारे आज़ाद काश्मीर में तीन चार बार ऐसे परिवर्तन नहीं हुए और क्या कभी भारत-सघ के अखबारों ने उस पर कभी तुम्हारी बुराई की। काश्मीर में तो जैसी सरकार नेहरू जी के स्वागत के समय पर थी, वैसी ही अब भी है। शेख अब्दुल्ला के हट जाने से तुम्हारे पेट में दर्द क्यों हुआ? और तुम लोग बहकी-बहकी बातें क्यों करने लगे? पाकिस्तान के गवर्नर जनरल गुलाम मुहम्मद ने यह कह दिया कि काश्मीर में जो घटनायें घटी हैं उनसे पाकिस्तान के लोगों को बड़ी ठेस पहुंची है। क्यों भैया आप

लोगों को ठेस कैसे पहुंच गई ? इस प्रकार के भावों को प्रदर्शित कर पाकिस्तान के इन अधिकारियों ने दुनिया के सामने अपने पाप को नंगा कर दिया है। इनके पेट में तो कालिख थी और मुंह पर सफेदी पुती हुई थी। दुनिया ने जान लिया कि शेख अब्दुल्ला पाकिस्तान का जर खरीद नौकर था, जिसकी यह लोग ऊपर-ऊपर से निन्दा करते थे और अन्दर से उसकी काली करतूतों पर खुश होते थे। पाकिस्तान के इन कपटी नेताओं का भण्डा फोड़ हो गया है और दुनिया ने यह जान लिया है कि शेख अब्दुल्ला नेहरू जी की आँखों में धूल झोंक रहा था और अपनी ठग विद्या से काश्मीर को पाकिस्तान के हवाले करना चाहता था। वह सचमुच ही अक्ल से शून्य था। क्या वह देखता नहीं था कि भरात-संघ की फोजें काश्मीर में पड़ी हुई हैं। और भारत-संघ ने अपने हजारों बहादुर सैनिक काश्मीर के लिए कुरबान किये हैं; भारत की प्रजा का अरबों रुपया काश्मोर पर खर्च हुआ है— तो क्या वह प्रजा काश्मीर को ऐसे ही हाथ से जाने देगी ? सचमुच 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः'—जब पुरुष के नाश का समय आता है तो उसकी अकल मारी जाती है। शेख साहब ने यह न सोचा कि भारतीय प्रजा अपनी गाढ़ी कमाई के दिये हुए धन को जो, काश्मीर पर पानी की तरह बहा रही है, वह भला 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे सुन कर डर जायगी और अपने हक को ऐसे ही छोड़ देगी ! पाकिस्तानियों को विशेष कर और संसार को साधारण तौर पर हम यह घोषणा सुनाते हैं कि भारत-संघ की प्रजा ने दान के तौर पर काश्मीर के लिए पैसा खर्च नहीं किया, काश्मीर पर उसका सैंकड़ों वर्षों से अधिकार है—साँस्कृतिक और भौगोलिक यदि भारतसंघ के नेता उस अपने अधिकार को न समझते होते तो क्या प्रजा परिषद् का आन्दोलन व्यर्थ में ही छेड़ा गया था ? नहीं-नहीं मेरे देश के लोगो, अब तुम्हें सच्ची बात जाननी ही चाहिये। जब हमारा परम प्यारा भारत का दुलारा और बंगाल का सितारा श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी अखंड भारत का झंडा लेकर मैदान में आया था तो उनका हृदय

अपने पवित्र आदर्श से ओत-प्रोत हो रहा था। एक कुशल राजनीतिज्ञ की तरह संसद् में विरोध करने वाला यह भारतीय नेता अपनी बुद्धिमत्ता, व्यवहार कुशलता और पार्लियामेंटरी पटुता के लिए सारे संसद् में लोकप्रिय बना हुआ था। ऐसे अपने शानदार काम को छोड़कर वह श्रीनगर में सत्याग्रह करने के लिये पहुंचा और वहाँ शेख अब्दुल्ला ने उनके साथ विश्वासघात कर उनका बलिदान करवा दिया। वह पवित्र बलिदान अन्त में रंग लाया और श्यामाप्रसाद जी के बलवान् आत्मा ने शेख अब्दुल्ला को पकड़ कर झकझोड़ दिया और उसे उसके राजसिंहासन से उठाकर नीचे पटक दिया! अब्दुल्ला का सारा वैभव मिट्टी में मिला दिया और आज वह अपने घृणित पापों का फल ऊधमपुर में भोग रहा है। उसके पापों का घड़ा भर गया था और श्यामाप्रसाद मुकर्जी उसी घड़े को तोड़ने के लिए श्रीनगर गये थे। भगवान् ने उन्हें सफलता दी और इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

काश्मीर, प्यारा काश्मीर! भारत-संघ के करोड़ों नागरिक उस भूभाग के साथ स्नेह बन्धन में बंधे हुये हैं। पाकिस्तान तो खाली अपने स्वार्थ के लिए बगला भक्त बना हुआ शेख अब्दुल्ला के नाम पर आंसू बहा रहा है, किन्तु भारत-संघ का तो वह शरीर का अंग है। यदि वहाँ चालीस लाख मुसलमान बसते हैं तो क्या भारतसंघ में चार करोड़ मुसलमान नहीं रहते? अब हम यही समझ लेंगे कि भारत-संघ की आबादी में ४० लाख मुसलमान और बढ़ गये — बस बात खत्म हो गई। पाकिस्तान का यह बखेड़ा अरण्यरोदन के समान है। असल में बात यह है कि संसार के दो बड़े-बड़े राष्ट्र जो खम्भ ठोक कर एक दूसरे के आमने-सामने युद्ध करने के लिये खड़े हैं, काश्मीर में गहरी दिलचस्पी रखते हैं। रूस चाहता है कि काश्मीर में किसी प्रकार के विरोधी हवाई अड्डे न बनने पावें और अमरीका की दिलचस्पी यह है कि रूस की साम्यवाद की बाढ़ को रोकने के लिये काश्मीर में विरोधी अड्डा बनाना बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। मिस्टर मुहम्मदअली रहे हैं अमरीका में

उन्हें श्री गुलाम मुहम्द ने बिना अपनी पार्लियामेंट की सलाह के निरंकुशता से प्रधान मंत्री बना दिया और नाजुम्मद्दीन को दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया। ऐसी डिक्टेटरी गुलाम मुहम्मद साहब को क्यों करनी पड़ी ? जरूर उनकी तारों को पीछे से कोई खींचता होगा,जिसके इशारे से उन्होंने पाकिस्तानमें ऐसा अवैध कार्य कर डाला। आज जो शेख अब्दुल्ला के नाम पर मरसीहे पढ़े जाते हैं और आँसू बहाये जाते हैं, वह केवल इसीलिये न,कि शेख साहब विदेशियों के हाथ बिके हुए थे और उन्हीं के इशारों पर काश्मीर में नाचते फिरते थे। नहीं नहीं मेरे देश के लोगो तुम यदि विश्व के राजनीतिक खेल में भाग लेना चाहते हो तो चैतन्य हो जाओ। यह सोने का समय नहीं। भारतवर्ष का इस समय इतिहास बन रहा है और हम सब हैं उस इतिहस के निर्माता ! आने वाली संताने उस इतिहास को पढ़ेंगी और वे हमारी योग्यता-अयोग्यता का फैसला हमारी सफलता को देख-कर ही करेंगी। भारत-संघ के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को परे फेंककर राष्ट्रहित को सर्वोपरि समझे। मृत्यु अवश्यम्भावी है। जो संसार में आया है वह सदा यहाँ रहेगा नहीं। संसार की कोई वस्तु हमारे साथ जाने वाली नहीं। यह धोखा करने वाले, यह रिश्वत खाने वाले, यह भ्रष्टाचारी सभी को मौत के मुंह में जाना है।शेख अब्दुल्ला लाखों रुपये के जवाहरात लेकर काश्मीर से भागना चाहता था। वह मूर्ख पिछले इतिहास को भूल गया। महमूद भी भारतवर्ष के हीरे जवाहरात और बहुमूल्य मोती लूट कर यहाँ से ले गया था। वह जब मरने लगा तो अपने लूट के माल को देख देखकर इसी लिये ज़ार-ज़ार रोता था कि वह उसे साथ नहीं ले जा सकता। सारी चीजें यहीं पड़ी रहेंगी, इस लिये जितनी नेकी कर सकते हो कर लो। सब के भले में अपना भला मानो। देश के साथ कभी विश्वासघात मत करो। ईसाई, मुसलमान, पारसी और हिन्दू—सभी परमात्मा के बन्दे हैं। मज़हबी भेदों को दिलों से भुला कर हमें अब इन्सान बनना सीखना

चाहिए और इन्सानीयत को सच्चा मज़हब स्वीकार कर उसे ही अपनाना चाहिये।

स्मरण रखिये पाकिस्तान थोड़े समय का पाहुना है, वहाँ के नेता महास्वार्थी हैं। वे एक दूसरे के साथ ईर्षा-द्वेष कर अपना रुतबा बढ़ाना चाहते हैं। वहां की प्रजा उनके द्वारा बड़ी बुरी तरह लूटी जा रही है। वह शासन करने के सर्वथा अयोग्य हैं। वह तेरह सौ वर्षों के पुराने मज़हब के अनुसार अपने राष्ट्र के कानून बनाना चाहते हैं जो सर्वथा अव्यवहारिक बात है। ऐसे पाकिस्तान के साथ क्या हम कभी अपने प्यारे काश्मीर को जाने देंगे ? कदापि नहीं ! काश्मीर की प्रजा के प्रति हमारा उत्तरदायित्व है। यदि वहाँ भी शेख अब्दुल्ला जैसे खुदगर्ज नेता खड़े होंगे और काश्मीर को पाकिस्तान के हाथ बेचना चाहेंगे तो हम कभी भी ऐसा न होने देंगे। प्रभु के सामने हम ने उसकी रक्षा को अपना कर्त्तव्य माना है। और उसे अपने साथ रख कर वहाँ की प्रजा को अभय दान देना है। रूस भी हमारा मित्र है यद्यपि उसकी विचार-धारा हमें पसन्द नहीं और अमरीका भी हमें प्यारा है, यद्यपि उसका पूंजीवाद हमें अनुकूल नहीं पड़ता। चीन भी हमारा साँस्कृतिक साथी है और अफ़गानिस्तान भी हमारा पड़ोसी है। हमारा किसी से वैमनस्य नहीं। हम "जीओ और जीने दो"— के दैवी सिद्धाँत को मानते हैं और सारे विश्व के साथ मित्रता पूर्वक रहना चाहते हैं। भारत-संघ विश्व की जातियों को प्रेम सन्देश भेजता है। और यह मंगल कामना करता है कि संसार के सब प्राणी सुखी और पवित्र जीवन रखते हुये अनन्त की ओर मुंह करें, जिस से हम सब का विकास हो और हम हंसते हुए खुशी-खुशी प्रभु की आज्ञा का पालन करें।

—:❀:—

ग्यारहवाँ अध्याय

# पाकिस्तान एक हवाई किला

मनुष्य जिस प्रकार का भोजन करता है, उसी किस्म का उसका शरीर बनता है। ऐसे ही जिस समाज का जैसा आदर्श होता है, उसी के अनुसार उस के सदस्यों का विकास होता है। ठीक यही दशा राष्ट्रों की है। राष्ट्रीय निर्माण भी उसकी सामग्री, उसके आदर्श और उसकी शिक्षा के अनुसार ही किया जा सकता है।

जब पाकिस्तान की भावना भारतीय मुसलमानों में उठी। तो उस समय उनके विचारकों में कैसे लोगथे। स्वर्गीय मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना को पाकिस्तान का जनक कहा जाता है। यह 'जनक' कैसा आदमी था—बिल्कुल अवसरवादी, था बड़ा योग्य होशियार बेरिस्टर, किन्तु सिद्धान्त हीन। मैं जब एक बार योरुप से लौट रहा था तो मि. जिन्ना मेरे साथ उसी स्टीमर पर थे, तब मुझे उनके अध्ययन का काफी मौका मिला था। हिन्दुस्तानी मुसाफिर उन्हें बुलाकर उनके व्याख्यान करवाया करते थे और उन से वार्तालाप किया करते थे। वह कच्छी वंश से हिंदू था और था बनया नसिल से। पहले वह पक्का काँग्रेसी रहा और देश भक्ति का दम भरा करता था। उसे था लीडरी का खब्त। जब गाँधी जी ने मौलाना शौकत अली और उनके भाई मुहम्मद अली को अपना लिया और उनदोनों अली बन्धु ओं का बड़ा विज्ञापन

कर दिया तो मिस्टर जिन्ना तिलमिला उठे। क्योंकि मौलाना शौकत अली मिस्टर जिन्ना से योग्यतर नहीं थे, जिन के विषय में प्रसिद्ध अकबर कवि ने यह कहा था--

बुद्धू मीयाँ भी हज़रते गाँधी के साथ हैं,
गो मुश्तए खाक हैं, आँधी के साथ हैं !

कवि ने महात्मा गाँधी जी को आँधी की उपमा दी है और निर्देश किया है कि गाँधी रूपी आँधी के साथ यह बुद्धू शौकत अली मुट्ठी भर खाक के बराबर है जो झट उड़ जायगी। सो वैसा ही हुआ और शौकत अली उड़ ही गये और लगे गांधी जी को बुरा भला कहने।

खैर, हम यहाँ यह कह रहे थे कि पाकिस्तान का बनाने वाला मिस्टर जिन्ना अवसरवादी था। यदि काँग्रेस वाले उसे अपना कर मुसलमानों का लीडर स्वीकारकर लेते तो वह सरकार का पिठ्ठू न बनता सन् १९२० की नागपुर काँग्रेस में वे शामिल हुए थे। मैं उस समय अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी का सदस्य था और पंडित जवाहरलाल जी के आनन्द भवन इलाहाबाद से नागपुर गया था। वहाँ मैंने मिस्टर मुहम्मद अली और मिस्टर जिन्ना के भाषण सुने थे। मिस्टर जिन्ना थे गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के विरुद्ध, सो उन्हों ने वैसा ही व्यंगपूर्ण व्याख्यान दिया। कर्नल वेज वुड भी वहाँ पर बैठे थे। जब व्यंग और मसखरी भरे मिस्टर जिन्ना के व्याख्यान का तीखे व्यंगों से परिपूर्ण उत्तर छोटे अली बन्धू ने दिया था। दोनों थे इंगलैंड के पढ़े हुए--उनकी खूब चोंच हुई और सुनने वालों को बड़ा मजा आया। यह मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान के सर्वेसर्वा थे और कुटिल फरंगी ने भारत-विभाजन के लिए इन्हीं को अपना साधन बनाया था। वह फरंगी था बड़ा पारखी, उसने देख लिया कि मुसलमानों में यही एक आदमी ऐसा है, जिस में हिन्दुओं जैसी सौदे बाजी और मुसलमानों जैसी कुटिलता--दोनों का अच्छा सम्मिश्रण है। महात्माँ गाँधी जी ने अपनी अहिंसा से इसे मोहित करने

की बड़ी कोशिश की, किंतु उनकी अहिंसा का जादू इस पर न चला और उसने भारत-विभाजन करवा ही डाला—पाकिस्तान बन गया।

यह तो हुई पाकिस्तान के 'बाप' की बात, जिस ने केवल अपनी स्वार्थपरता से अंग्रेजों का कठपुतली होना स्वीकार किया और यह न सोचा कि वह मुसलमानों के लिये क़बर खोद रहा है। The Greatest Betrayal नामक अंग्रेजी पुस्तक के रचयिता ने भली प्रकार इस बात को सिद्ध किया है कि इस्लामी इतिहास में मुसलमानों के साथ ऐसा विश्वासघात किसी ने नहीं किया, जैसा कि मिस्टर जिन्ना ने किया है। उस लेखक की यह बात अक्षरशः सत्य है। शताब्दियों से किये गए इस्लामी आक्रमणकारियों की सारी मेहनत को मिस्टर जिन्ना ने मिट्टी में मिला दिया है। मुसलमानों का जो जबर्दस्त संगठन था, विभाजन से वे चकना चूर हो गया। मुसलमानों का भविष्य अंधकारमय बन गया है। हमारा भी यही ख्याल है। यदि विभाजन न होता तो मुसलमान भारत-संघ में बराबर का अधिकार रखने वाले होते और बड़ी निश्चिन्तता से अपनी जीवन गति को चलाते पाकिस्तान के बन जाने से अस्वाभाविक संदेह का वातावरण हिन्दू-मुसलमानों में बना रहेगा और मुसलमानों का ताप मान कभी भी नार्मल न हो सकेगा।

जब भारत-विभाजन हो गया तो उस पाकिस्तान में जाकर लूट मार मचाने, हिंदुओं का माल हड़पने, बने हुये मकानों पर कब्जा करने और व्यापार तथा सरकारी ओहदों को संभालने के लिये भारत के चारों ओर से बड़े बड़े चालाक छटे हुये मुसलमान पाकिस्तान की ओर भागे। उनके अंदर कोई बलिदान की भावना नहीं थी। निज की स्वार्थ सिद्धि ही उनका लक्ष्य था। भारत के ६ करोड़ मुसलमानों में से जो चुने हुए धूर्त और अवसरवादी बटमार थे, वे ही सबसे पहले हाथ मारने के लिए पाकिस्तान में जाकर बसे। बहुत थोड़े ही लोग होंगे जो मुसलमानों के हित साधनार्थ सेवा-धर्म से दीक्षित हो कर

वहां गये होंगे, वे शायद उंगलियों पर गिनने लायक ही थे। ऐसी आबादी वाला यह पाकिस्तान, जिसके जन्म से ही लाखों परिवारों की बरबादी हुई और हजारों स्त्रियों के साथ बलात्कार हुआ, भला कभी पनप सकता है ? सोचिये तो सही कि जिसने अपने जन्मकाल से ही लाखों स्त्री-पुरुषों को रुलाया, हिन्दू-मुसलमान की हत्यायें करवाईं, लाखों को बेघर-बार कर दिया—ऐसा राष्ट्र कभी भी जिन्दा रह सकता है, फूल फल सकता है—यह मृगतृष्णा नहीं तो और क्या है।

और देखिये। मुसलमानों के वे नेता जो अनपढ़ पाकिस्तानियों की जहालत का सोलह आना लाभ लेना चाहते थे, वे वहाँ जाकर चौधरी बन गए और उन्हों ने ही धर्मान्धता के सहारे अपना वैभव बढ़ाने का प्रयत्न किया। ऐसे ही गुनाहगार भारतीय मुसलमान हैं, जिनके द्वारा पाकिस्तान आबाद हुआ है। उन में मिल गए हैं उत्तर-पश्चिम के लुटेरे सरहद्दी जिरगों के लोग, तथा बलोची और पंजाबी मुसलमान, जो बिल्कुल गंवार हैं। उन्हीं के सहारे और ऐसे ही नागरिकों के बल पर यह पाकिस्तान की मुस्लिम रियासत खड़ी हुई है, जिसने पिछले छः वर्षों के अन्दर हिन्दुओं की अरबों की सम्पत्ति हड़प ली, ५० करोड़ रुपया भारत-संघ से लेकर खा लिया, अपने अन्न भंडारों को खत्म कर दिया, व्यापार को चौपट कर लिया, आपस में ईर्षा-द्वेश दलबन्दी कर हत्याएं कर डालीं और मार काट का बाज़ार गर्म किया—ऐसा है यह पाकिस्तान जिस के हवाई किले पर कराची सरकार बैठी हुई है और जिस की प्रजा शक्तिशाली भारत-संघ को 'जहाद' की धमकी दे रही है।

भारत-संघ ने इसके विपरीत सदा ही पाकिस्तान का उपकार किया है। अपनी स्वाधीनता के प्रारम्भ काल में हमें पाकिस्तान से अरबों रुपये चाहिये थे—वे हमारे कर्ज के बोझ से बुरी तरह दबा हुआ था—तिस पर भी उसकी हीन आर्थिक दशा के कारण हमने ५० करोड़ रुपये

से उसकी सहायता की। यदि हम उस समय—सन् १९४८ में—पाकिस्तान की सहायता न करते तो दुनिया का सब से बड़ा मुस्लिम राष्ट्र होने की डींगें हाँकने वाला यह पाकिस्तान अपनी मौत आप ही मर जाता। धूर्त्त लोग उसका खजाना चाट चुके थे और शासकों के पास अपने नौकर-चाकरों को वेतन देने के लिए भी पूंजी नहीं थी। जब इस कृतघ्न पाकिस्तान ने विना कोई सूचना दिये काश्मीर पर हमला कर दिया और वहाँ के निरपराध नागरिकों को लूटने और हत्या करनेके नृशंस कार्य किए, तो उस समय यदि भारत-संघ चाहता तो पाकिस्तान के छक्के छुड़ा सकता था—उसके किसी दूसरे भाग पर हमला कर उसे बुरी तरह परेशान कर देता। हमारे वीर सिक्ख पाकिस्तान पर आक्रमण करने के लिए अधीर हो रहे थे और पूरी तरह इन बेरहम पाकिस्तानियों से बदला लेना चाहते थे, किन्तु हमारी दयालु सरकार ने केवल इतनी ही दया उन पर न की बल्कि काश्मीर पर हमला करने वाले पाकिस्तानियों को केवल काश्मीर से हटा ही दिया—पाकिस्तान पर हमला नहीं किया। भारत-संघ यदि चाहता और अपने सेनापति करिअप्पा का कहा मान लेता तो पन्द्रह दिनों के भीतर पाकिस्तानी फौजों को नष्ट-भ्रष्ट कर पाकिस्तान का अस्तित्व मिटा देता। लेकिन हमारी सरकार ने ऐसा करना उचित नहीं समझा और वह अपनी मानवता पर दृढ़ रही।

और सुनिये पाकिस्तानियों के नामुनासब कारनामे। हिन्दुओं को लूटने और उन्हें सताने के लिए इन्होंने पूर्वी बंगाल में दंगों की चिंगारियां सुलगाईं, जो थोड़े दिनों में धर्मान्धता रूपी ज्वाला का रूप धारण कर गईं। तब पूर्वी बंगाल से लाखों अल्प संख्यक हिन्दू पश्चिमी बंगाल की ओर भागे और पंजाबी शरणार्थियों की तरह वे भी बेघरबार हो गये। तिस पर भी हमारी सरकार ने पाकिस्तान पर पुलिस कारवाई नहीं की और मियाँ लियाकत अली के साथ समझौता कर लिया। सारा भारतवर्ष उस समय क्षुब्ध हो उठा था और हमारे

नवयुवक बदला लेने के लिए बेचैन थे, किन्तु मियाँ लियाकत अली के दिल्ली आ जाने पर नेहरू जी ने उन की बात मान ली। ऐसे कई अवसर आ चुके हैं जब भारत-संघ के पास गेहूँ की बड़ी कमी हो गई और पाकिस्तान का अन्न भण्डार खूब भरा हुआ था, किन्तु तिस पर भी उचित दामों से पाकिस्तान के शासकों ने भारत-संघ को अन्न नहीं दिया और गेहूँ का दाम बढ़ा दिया। तब भी भारत-संघ ने अपना कड़ा रुख पाकिस्तान के प्रति नहीं किया। जब-जब पाकिस्तान को मदद की आवश्यकता पड़ी, तब-तब भारत-संघ ने अपने हृदय की विशालता का परिचय दिया—उसने पैसा माँगा तो पैसा दिया, नहरों के पानी की आवश्यकता पड़ी, तो उसकी यह माँग भी पूरी की, उसे कोयला, बिजली और अन्न की जरूरत हुई तो भी अपनी शक्ति भर उस का हाथ बटाया, जिस से उसका पड़ौसी दुःखी न हो—वह पनपे और समृद्धिशाली बने। इस के विपरीत पाकिस्तान जब-जब कोई समझौता करता रहा, तो उसे कभी पूरा नहीं किया। लाखों हिन्दू-सिखों की सम्पत्ति का आज तक उसने न्यायशीलता से फैसला नहीं किया, केवल बहानेबाजी कर के टालता रहता है। पाकिस्तान काश्मीर का एक बड़ा भूभाग दबाये बैठा है, वह भारत के विरुद्ध विदेशों में जहरीला प्रचार करता है, हजारों हिन्दू अबलाओं को अब तक दबाये बैठा है, किन्तु तिस पर भी हमारी सरकार उसके विरुद्ध कोई कड़ी कारवाई नहीं करती, बल्कि सदा शाँति से अपने पड़ौसी को समझाती रहती है। जिस पंडित नेहरू का इतना बड़ा स्वागत मि० मुहम्मद अली ने कराची में किया और वहाँ की जनता हजारों की संख्या में फूल मालाएँ फेंकती रही, उसी पंडित नेहरू को थोड़े ही दिन बाद वही पाकिस्तानी गाली देने लगे और भारत-संघ पर 'जहाद' के नारे लगाने लगे—ऐसा किस बात पर? बस बात क्या होनी थी! हाँ, हाँ, भारत-संघ ने शेख अब्दुल्ला को पदच्युत क्यों कर दिया, उसे नजरबन्द कर के कैदी क्यों बना लिया? इन भलेमानसों से कोई पूछे कि तुम कौन होते हो यह सब शिकायतें

करने वाले ? क्या हम ने कभी तुम्हारे किसी प्रबन्ध में दखल दिया और आजाद काश्मीर में जो कारवाइयाँ तुम कर रहे हो, उस के लिए कभी शिकायतें की हैं ? यह पाकिस्तानी हमारी विशालता, उदारता और भलमनसाहत का नाजायज फायदा उठा रहे हैं और शेख अब्दुल्ला की बर्खास्तगी के बहाने अपने दिल के फफोले फोड़ रहे हैं। किसी संस्कृत के कवि ने बहुत ठीक कहा है:—

न वेद शास्त्रम् पठतीति कारणम्,
न चापि विद्याध्ययनं दुरात्मनाम् ;
स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते,
यथा प्रकृत्या मधुरं गवाँ पयः ॥

यदि कोई दुरात्मा पापी वेद शास्त्र पढ़ ले और दूसरी कई विद्याओं का अध्ययन कर ले तो भी कभी उसकी बुरी आदत छूट नहीं सकती—क्योंकि वह तो उसका स्वभाव है—जैसे गाय का दूध स्वभाव से ही मीठा होता है उसे कोई थोड़े ही बदल सकता है। इसी प्रकार ये पाकिस्तानी नेता चाहे क़ुरान पढ़ लें, चाहे शेख सादी को रट लें, चाहे मस्जिदों में जाकर दिन रात नमाज पढ़ा करें—भला यह कभी अपने स्वभाव को छोड़ सकते हैं ? आप इन के साथ कितनी ही भलाई करें, कष्ट के समय इन की कितनी ही सहायता करें किन्तु यह कृतघ्न कभी नेकी से उसको नहीं चुकाते। उलटा डंक मारने का ही प्रयत्न करते हैं। यह इनका स्वभाव है, जिस के प्रतिकूल वे कर ही नहीं सकते।

इस लिए हमारा नम्र निवेदन है कि यह पाकिस्तान एक हवाई किला है, क्योंकि यह बहुत बुरी सामग्री से तैयार किया गया है। इसकी कोई जड़ नहीं, कोई सिद्धान्त नहीं, इस में कोई मानवता नहीं और न ही इस में राष्ट्रों जैसी कोई राजनीति है। अवसरवादी प्रजा और शासक स्वार्थ सिधि के लिए एक स्थान पर इकट्ठे हो गये हैं और उन में होड़ इस बात की लगी हुई है कि अधिक-से-अधिक बेईमानी और धोखा कौन कर सकता है ? आप विचार कीजिए मियाँ लियाकत अली जैसा

इस्लाम हितैषी प्रधान मन्त्री इन को दूसरा मिल सकता है ? पाकिस्तानी नेताओं ने ईर्षा-द्वेषवश उसे भी मार डाला और आज तक पता नहीं लगा कि अपराधी ने यह अपराध क्यों किया और उसके पीछे क्या षड़्यन्त्र था। इतनी बड़ी हत्या और हो जाय वह हज्म ! बाद में नाजम्मुद्दीन प्रधान मन्त्री बने तो पाकिस्तानी प्रजा में ऐसे बुरे फिरकेदाराना दंगे हुए कि सुनने वाले काँप उठे। तब नाजम्मुद्दीन के विरुद्ध षड़्यन्त्र हुआ और उनका तख्ता पलट दिया गया। अब आये हैं मि० मुहम्मद अली वाशिंगटन से ब्लैंक चेक लेकर। देखें वे कितने दिनों के पाहुने हैं। यार लोग हाथ धोकर उसके पीछे भी पड़े हैं और अवसर मिलते ही कुचक्र चला देंगे। छः वर्षों के अन्दर पाकिस्तान में यह घटनाएँ घटी हैं। तभी तो हम अपने मुसलमान बन्धुओं से कहते हैं कि यह तुम्हारी मृगतृष्णा है; पाकिस्तान के इस हवाई किले को तुम कब तक गिरने से बचा सकोगे; यह तो ताश के पत्तों का घर है—इस का तो खुदा ही मालिक है।

—:०:—

## बारहवाँ अध्याय

# संयुक्त-राज्य-अमरीका का कर्त्तव्य

मैं सदा अमरीका का भक्त रहा हूँ। मेरी शिक्षा-दीक्षा वहीं हुई है, इस लिए कृतज्ञता के नाते मैं ने सदा अमरीकन-संस्थाओं, आदर्शों और वहाँ के सद्गुणों का प्रचार अपनी पुस्तकों द्वारा करोड़ों भारतीयों में किया है। अमरीका से स्वाधीनता की स्फूर्ति पाकर ही मैं सन् १९११ में भारत लौटा था और अमरीकन आदर्शों की सहायता से मैं ने अपने इस विशाल देश में स्वाधीनता के प्रति प्रेम और दासता के प्रति घृणा के संदेश का प्रचार अपने देशवासियों में किया था। तब से लेकर आज तक मैं ने कभी भी अमरीका के विरुद्ध मुँह नहीं खोला।

लेकिन जब आज भारतवर्ष स्वाधीन बन कर अपनी लड़ाइयाँ आप लड़ रहा है और अपनी समस्याओं को हल करने में जान की बाजी लगा रहा है तो मेरा यह धर्म है कि मैं इस पर होते हुए आक्रमणों को अपनी सारी शक्ति लगा कर रोकूँ और माता की तरह अपने इस शिशु की रक्षा करूँ। मेरा सदा से यह सिद्धान्त रहा है कि मैं कभी भी अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की हानि की आकांक्षा नहीं करता। हमारी प्रार्थना यही है कि सारा संसार सुखी हो और किसी के साथ अन्याय न हो। सद्भावना से मैं आज अपने प्यारे संयुक्त-राज्य-अमरीका के हितार्थ कुछ बातें लिखने का साहस करने लगा हूँ। मैं ने कभी भी अपनी आत्मा

के विरुद्ध लेखनी नहीं उठाई। आज मेरा आत्मा पुकार-पुकार कर कह रहा है कि स्वतंत्रता-प्रेमी करोड़ों अमरीकन नागरिकों के कानों तक अपनी आवाज पहुँचाने का समय आ गया है। मुझे आज उन्हें यह बतला ही देना चाहिए कि भारत-संघ के प्रति उन का क्या कर्त्तव्य है और उन्हें इस समय हमारे साथ किस प्रकार की विदेशी-नीति बर्तनी चाहिए।

देखिये, सैंकड़ों वर्षों के बाद भयंकर बाधाओं का सामना कर और सब प्रकार की हानियाँ उठा कर यह भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य के चंगुल से मुक्त हुआ है। पहले तो इसके अपने ही घर में सैंकड़ों राजे-महाराजे, जागीरदार-नवाब और विदेशी मुनीमखाने मौजूद रहे। बड़ी राजनीतिज्ञता से हमारे पोलिटिकल नेताओं ने भारत-संघ को टुकड़े-टुकड़े होने से बचाया सब छोटी-मोटी रियासतें भारत-संघ में मिल-मिला गईं—रह गया केवल एक काश्मीर। उस के अतिरिक्त पुर्तगाल वाले भी हम पर रोब जमाये बैठे हैं और स्वाधीनता प्रेमी फ्रांस भी अपने साम्राज्य के लालच में हमारा पिंड नहीं छोड़ रहा। इन दो विदेशी योरपीय शक्तियों से हमें अभी दो-दो बातें करनी हैं। वर्तमान काल में मुख्य प्रश्न काश्मीर का हमारे सामने है। स्वतन्त्राप्रेमी अमरीका का प्रधान कर्त्तव्य इस समय यह है कि भारत-संघ के इस प्रजातन्त्र राष्ट्र के लिए सब प्रकार की सुविधाएँ उत्पन्न करे और उसे अपना सच्चा मित्र मान कर उसके विकास में सहायता दे। इस देश में अमरीकन विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त किए हुए सैंकड़ों नव-युवक हैं, जो संयुक्त-राज्य-अमरीका के साथ दृढ़ मैत्री चाहते हैं और उसके विरुद्ध होते हुए किसी आन्दोलन को देख कर व्यथित हो उठते हैं। रूस के साथ हमदर्दी रखने वाले केवल वे ही शिक्षित लोग हैं, जो या तो रूस से पैसा पाते हैं अथवा लीडरी की बीमारी से ग्रस्त हैं। ऐसे ही प्रकार के लोग काले झंडे लेकर बड़े-बड़े नगरों में अशिक्षित मजदूरों को बहका कर अपने पीछे कर लेते हैं, किन्तु, उन का कोई ऐसा व्यापक प्रभाव

इस देश में नहीं। रूस के प्रति विरुद्ध भावनायें धर्म-भीरु हिन्दू और मुसलमानों में स्वाभाविक ही हैं और वे कदापि नहीं चाहते कि कम्युनिस्ट राज्य इस देश पर छा जाये और उन के मन्दिर तथा मस्जिदें घोड़ों के अस्तबल बनाये जायँ। ऐसी अवस्था में अमरीकन सरकार को अपनी विदेश-नीति बहुत सोच समझ कर स्थिर करनी चाहिए।

हमारा है उठने का समय। ऐसे राष्ट्र-निर्माण के युग में यदि सभ्य संसार का कोई छोटा-बड़ा राष्ट्र हमारी उन्नति के मार्ग में रोड़ा अटकाएगा तो वह अपने लिए भीषण काँटे बो लेगा। हम कर रहे हैं एक नया प्रयोग—प्रजातंत्रवाद को सफल बनाना। गुरूडम-प्रधान इस देश में प्रजातंत्रवाद तभी सफल होगा, जब स्वाधीनता की बरकतें जन-साधारण को प्राप्त होंगी। जब उन की समस्याओं के मार्ग में बाधाएँ डाली जायेंगी और उन बाधाओं के कारण उन के दैनिक जीवन में भीषण संघर्ष हो जायगा तो वह किसी अवस्था में भी बाधा डालने वाले को अपना मित्र नहीं बना सकेंगे। हमें अमरीका वालों से क्या निवेदन करना है और हम उन से क्या आशाएँ रखते हैं? सुनिये!

पहली बात तो यह है कि अमरीकन सरकार हमें अपने किसी पोलिटिकल झगड़े में न फसावे। महात्मा गांधी जी का यह परम् प्यारा युग है और वे शान्ति के दूत रहे हैं। पृथ्वी पर इस समय राष्ट्र शक्तियों के दो बड़े गुट्ट हैं। हम किसी गुट्ट में उलझना नहीं चाहते, क्योंकि हमारे पास न तो उस के लिए समय है और न साधन ही हैं। हमारा राष्ट्र-निर्माण का कार्य इतना अधिक है कि यदि हम ने शीघ्रातिशीघ्र अपने देश का संगठन न किया तो हम पोलिटिकल भंवर में फंस जायंगे। सैंकड़ों प्रकार की जातियों-उपजातियों में बटा हुआ हमारा समाज और नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों में डूबी हुई हमारी जनता आज सब से पहले नीरोग और वैज्ञानिक शिक्षा चाहती है। प्रजातंत्रवाद को सफल बनाने के लिए जब तक हम अनुशासनयुक्त नीरोग और वैज्ञानिक विचारों से ओत-प्रोत तालीम अपने नागरिकों को

न देंगे तो कभी भी यह नया प्रयोग सिरे नहीं चढ़ेगा। इसलिए हमारा नम्र निवेदन अमरीका वालों से यही है कि वे हमारे इस स्वाधीन राष्ट्र को अपने पोलिटिकल गोरखधंधों से दूर रखें और हर सम्भव उपाय से इस प्रजातन्त्र के प्रयोग को सफल बनाने में हमारे साथ सहयोग करें।

दूसरी बात यह है कि भारतवर्ष का जो विभाजन अंग्रेज कर गये हैं, वह नितांत अस्वाभाविक और अव्यवहारिक है, उससे पाकिस्तान को बड़ी हानि पहुँच रही है और हमारा भी नुकसान हो रहा है। पाकिस्तान का भला इसी में है कि वह भारत-संघ का दूसरी रियासतों की तरह इस का एक अंग बन जाय और दूसरी विदेशी शक्तियों के हाथों का खिलौना न बने। ये मज़हबी झगड़ों का युग नहीं। भारत-संघ की सरकार साम्प्रदायिक झगड़ों को कभी प्रोत्साहन नहीं देगी? यह युग है एकता और राष्ट्र-निर्माण का। सिंधु से लेकर ब्रह्मपुत्र तक का यह भू-भाग एक ही प्रजातंत्र शासन के अन्तर्गत होना चाहिये। यदि पाकिस्तान अलग रहा तो वह अपनी राजनीतिक और आर्थिक कठिनाइयों के कारण सदा ही विदेशी महाशक्तियों पर निर्भर रहेगा और इसके नेता आपस में ईर्षा-द्वेष के कारण एक दूसरे के साथ लड़ते रहेंगे। पूर्वी बंगाल तो किसी अवस्था में भी पाकिस्तान के साथ नहीं रह सकेगा। थोड़ी-सी राजनीतिक जागृति आ जाने पर जब पूर्वी बंगाल की धर्मान्धता का नशा उतर जायगा तो वहां के नेता और जनता इस बात को अच्छी तरह से अनुभव करने लगेगी कि उनका जीवन-सूत्र स्वाभाविक तौर पर पश्चिमी बंगाल के साथ मिला हुआ है। तब धार्मिक सहन-शीलता का नीरोग वातावरण उस पूर्वी बंगाल पर अपना प्रभाव डालेगा और उसकी सारी कठिनाइयां दूर हो जायेंगी। इस लिये अमरीका वालों से हमारा निवेदन है कि वह पाकिस्तानी लीडरों को ऐसी सुमति दें कि वे भारत-संघ के साथ मैत्री और सद्भावना बढावें, जिससे वहाँ की प्रजा भुखमरी से निकल कर अपना चरित्र संगठन करे।

तीसरी बात है काश्मीर की। अमरीका की लड़ाई है रूस और चीन के साथ। उसके कुछ ही कारण हों; – हमें उसमें दखल देने का कोई अधिकार नहीं। हम केवल एक हितैषी के तौर पर इतना ही कह सकते हैं कि काश्मीर कानूनी, भौगोलिक, राजनैतिक और साँस्कृतिक दृष्टि से भारत-का स्वाभाविक अंग है। यदि आज हम अमरीका वालों को वहां हवाई अड्डे बनाने की इजाज़त दे देंगे अथवा रियायतें प्रदान करेंगे तो साम्यवादी चीन तथा रूस से हम सदा के लिए शत्रुता मोल ले लेंगे। क्या अमरीका वाले यही चाहते हैं? उन्हें ज़रा गम्भीरता से सर्वांगपूर्ण दृष्टि रखकर इस समस्या पर विचार करना चाहिए। मैं यह नहीं मानता कि अमरीकन सरकार साम्राज्यवादी है और मैं साम्यवादी नेताओं तथा पत्रों की तरह उन्हें बुरा भला कहने का अधिकारी नहीं हूं। हमारे देश के यह स्वयंभू न्यायाधीश केवल एक ही दृष्टिकोण रखते हैं, रूस का भला। इन्होंने कभी भी सर्वांगपूर्ण दृष्टि से राजनैतिक प्रश्नों पर गौर करना नहीं सीखा। हम संयुक्त-राज्य-अमरीका के सच्चे हितैषी हैं और हम यह हृदय से मानते हैं कि अमरीकन प्रजा युद्ध प्रेमी नहीं और न ही वहाँ की सरकार खामुखा उन्हें युद्ध में उलझाना चाहती है। हम तो सहानुभूतिपूर्वक दृष्टि से काश्मीर की परिस्थिति पर विचार कर रहे हैं। यदि हम आज अमरीकन सरकार को काश्मीर के सरहद्दी टुकड़े में तीन-चार हज़ार अमरीकन इंजीनियरों, पूंजीपतियों और शिल्पियों को बसने की आज्ञा दे देंगे तो हम सदा के लिए अपने पड़ौसी चीन से दुश्मनी कर लेंगे, जो किसी अवस्था में हमारे लिए श्रेयस्कर नहीं। चीन में बौद्ध धर्म सर्वोपरि है और इस नीति से भारतवर्ष उसका गुरु है और हम साँस्कृतिक सूत्रों में एक दूसरे के साथ बंधे हुए हैं, फिर भला हम किस प्रकार काश्मीर को भावी युद्धों का अड्डा बनाने में सहमत हो सकते हैं? पाकिस्तानी लीडर ठहरे अदूरदर्शी, निपट स्वार्थी और अवसरवादी – वे अपनी जनता के भाग्य के साथ जुआ खेल रहे हैं। हम भला खुली आंखें और रोशन दिमाग रखते हुए लाखों पाकिस्तानी

मुसलमानों को विनष्ट क्यों होने देंगे? कदापि नहीं। हम शक्ति रखते हुए काश्मीर को इन अज्ञानी पाकिस्तानी नेताओं के हाथों में न जाने देंगे, जो विदेशी राष्ट्रों से रुपया लेकर उसे अमरीका के बैंकों में जमा कर चैन की बंसी बजाना चाहते हैं। हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी शक्ति रखते हुए पाकिस्तानियों का विनाश नहीं होने देंगे—वे जहालतवश चाहे उन्हें गालियाँ ही देते रहें।

चौथी बात है रूस की। हम भी साम्यवाद के ऐसे ही विरुद्ध हैं जैसे अमरीका। हम नहीं चाहते कि रूस का नया पैगम्बरवाद संसार में फैलकर उसकी तबाही लाये। परन्तु हम रूस की इस तबाही को युद्ध द्वारा नहीं बंद कर सकेंगे, उसका मार्ग तो नीरोग शिक्षा प्रचार ही है। यदि हम अपने देश में प्राचीन काल के आर्यों की संस्कृति के अनुसार सर्वांगपूर्ण दृष्टि रखने वाले आदर्शों की शिक्षा दे सकेंगे और फिर अपने प्रचारकों को रूस भेज कर वहाँ के लोगों का साम्यवादी पागलपन दूर करने की चेष्टा करेंगे तो रूस का साम्यवादी नशा काफूर हो सकेगा। पारस्परिक युद्ध तो विनाश के सिवाय दूसरा कोई परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकते। रूस वाले भी हमारे भाई हैं। उनका हित हमारा हित है और उनका दुःख हमारा दुःख है। जब हम अमृत देकर उन्हें अपना बना सकते हैं तो हम विष का प्रयोग क्यों करें? आज समय आ गया है कि हम द्वेश-बुद्धि छोड़कर पारस्परिक विचार विनिमय करें। अपनी जीवन फिलास्फी दूसरों पर लादें नहीं, बल्कि व्यवहारिक ढंगों से प्रगतिशीलता को अपने में डालकर दूसरों का मत परिवर्तन करें। रूस के अध्यापक इधर आवें, वहां के विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करें—लेकिन अभी नहीं क्योंकि अभी तो हमारे यह विद्यालय भ्रामक शिक्षा के आगार बने हुए हैं और वहाँ हमारे ऐसे शिक्षा मंत्रियों की तूती बोलती है, जो स्वयं भारतीय आदर्शों से अनभिज्ञ हैं। हम स्वयं समय आने पर रूस वालों को निमंत्रण देंगे। उन के योग्य अध्यापकों के साथ इन विषयों पर शास्त्रार्थ करेंगे, अपनी पाठ्य-

प्रणाली की बरकतें उन्हें दिखलायेंगे और उन्हें समझायेंगे कि जीवन का लक्ष्य केवल सत्य ज्ञान की प्राप्ति है और इसी ज्ञानयुग की स्थापना हम इस पृथ्वी पर करना चाहते हैं।

जब इन सुन्दर आदर्शों का आदान-प्रदान अमरीका, रूस, चीन और भारत-संघ के बीच में हो जायगा तो सब प्रकार की गलतफहमियाँ दूर हो जायँगी ; निकम्मी आबादी बढ़ाने की बीमारी भाग जायगी ; भ्रष्टाचार और रिश्वतबाजी करने वाले लोग घृणा की दृष्टि से देखे जायंगे; अश्लील सिनेमा और उपन्यास जला दिये जायंगे; चरित्र-संगठन, एकता वर्धक और शान्तिप्रद विचारों की धारा बहने लगेगी—जब साम्प्रदायिक राक्षसी का गला घोंट दिया जायगा; तब इस भूतल पर मानव स्वर्ग का स्वप्न सत्य होता हुआ दीखेगा और विश्व के प्राणी मित्र की दृष्टि से एक दूसरे के साथ व्यवहार करेंगे। तभी प्रजातन्त्रवाद का सच्चा जयघोष विजय प्राप्त करेगा और संसार इस आदर्श के सम्मुख नतमस्तक हो कर उसकी महिमा बखानेगा।

—·—

ईश्वर ने संयुक्त-राज्य-अमरीका को दिल खोलकर बरकतें दी हैं। यदि अमरीकन लोग ईश्वरदत्त उन बरकतों का विश्व की दूसरी जातियों के साथ मिलकर भोग करेंगे तो आकाश के देवता निश्चय ही इस स्वर्णमयी भूमि पर पुष्पों की वर्षा करेंगे।

—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

### तेरहवाँ अध्याय

## काँग्रेस सरकार ध्यान दे

जब से भारत-विभाजन की भूमिका पड़ी है तब से कांग्रेस नेताओं से बड़ी-बड़ी भयंकर भूलें हो चुकी हैं। पहले तो इण्टिम सरकार बनी, जिसे लार्ड मौन्टबेटिन ने बड़ी चालाकी से भारत-विभाजन की पृष्ठ-भूमि के रूप में निर्मित किया था। इसमें उसने बड़े-बड़े कांग्रेसी नेताओं के साथ शरारती और झगड़ालू मुस्लिम लीगी गुंडों को मिलाकर एक ऐसी मशीन तैयार कर दी जो भारत में हिन्दू-मुसलमानों के बीच भीषण फूट के बीज बो सके और इन दोनों दलों में ऐसा वैमनस्य फैल जाय, जिसके कारण वह कभी भी मिल कर न रह सकें। श्री फिरोज खाँ नून और सरदार गजनफरअली खाँ जैसे कुटिल चाल चलने वाले लोगों को खुली छुट्टी दे दी गई कि वे घूम-घूम कर मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उत्तेजित करें और ऐसी जहरीली हवा फैलायें, जिससे दोनों सम्प्रदायों के लोग एक दूसरे से अलग होने में ही अपना भला समझने लगें।

वाइसराय महोदय की यह कुटिल चाल रंग लाई। नेहरू जी और उनके साथी कैबनेट के मुस्लिम लीगी मंत्रियों से बुरी तरह सताये गये और उनके गुन्डापन के सामने इन बिचारों की एक पेश नहीं जाती थी। यदि उस समय नेहरूजी दिल कड़ा कर मुस्तैदी से इन शरारतियों

को बड़े घर की सैर करवा देते और हिन्दुओं में एकता फैला कर उनका संगठन कर देते तो देश की समस्याएँ इतनी गम्भीर न हो पातीं। हमने उस समय नेहरू जी के पास जरूरी तार भेज कर अपना निवेदन सुनाया था, किन्तु हमारी चेतावनी पर नेहरू जी ने ध्यान नहीं दिया। परिणामस्वरूप उन्हें तीखे काँटों का दर्द सहना पड़ा।

यह तो हुईं गुजरी हुईं बातें। अब वर्तमान काल में इन्होंने शेख अब्दुल्ला को बुरी तरह सिर पर चढ़ा लिया था। जब देश के उज्ज्वल रत्न श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी के साथ अब्दुल्ला सरकार ने विश्वासघात किया तो बावजूद देशव्यापी मांग के होते हुए उनकी मृत्यु की जांच न करवाई। पंडित नेहरू जी के निर्मल जीवन पर यह धब्बा रहेगा कि उन्होंने स्वाधीनता प्राप्ति के प्रथम चरण में ही अपने अत्यंत योग्य संसद् विरोधी लीडर के साथ इस प्रकार का व्यवहार किया। आने वाली पीढ़ियाँ श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी के बलिदान को बड़े आदर की दृष्टि से देखेंगी और काँग्रेस सरकार के इस प्रकार के अन्यायशील व्यवहार की निन्दा करेंगी।

अब तीसरी बड़ी भूल जो काँग्रेस लीडर कर रहे हैं, वह है बख्शी गुलाम मुहम्मद की सरकार के विरुद्ध भारत में आन्दोलन का होने देना। भारत सरकार का कर्त्तव्य तो यह था कि वह हर सम्भव उपाय से युवराज करणसिंह की सरकार के साथ सहयोग करें और ऐसा कोई आन्दोलन, इस प्रकार के कोई लेख अथवा व्याख्यान भारत में न होने दें जिस से शेख अब्दुल्ला के पापों को छिपाने में सहायता मिल सके। हम बड़े दुःख के साथ यह देख रहे हैं कि भारत की राजधानी देहली में ही देशद्रोही लोग काश्मीर सरकार के विरुद्ध मोर्चा बनाने की सामग्री इकठी कर रहे हैं और शेख अब्दुल्ला को छुड़ाने के लिए हाथ-पैर मार रहे हैं। उनके इन कुकृत्यों को फौरन बन्द करना चाहिए और हर सम्भव उपाय से काश्मीर की प्रजा को ऐसे दुष्ट षड्यन्त्रकारियों से बचाना चाहिए, जो प्रजातन्त्रवाद को हानि पहुँचा कर

तानाशाही की जड़ें मजबूत करने में लगे हुए हैं। देश की प्रजा का कर्त्तव्य है कि वह काश्मीर के प्रश्न पर बड़ी जागरूक हो और ऐसे षड्यन्त्रकारियों के धोखे में न आये जो अन्दर-ही-अन्दर भारत-संघ के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। हमारी देशभक्ति की कठिन परीक्षा का समय आ गया है। आज चारों ओर से चोर उचक्के और गुन्डे इस अभागे देश पर गिद्धों की तरह टूट पड़े हैं। खाद्य पदार्थों में तरह तरह की मिलावटें कर यह अनाचारी राष्ट्र की आरोग्यता नष्ट करने पर तुले हुए हैं। ऐसी फैक्ट्रियाँ और कारखाने खुलते जा रहे है जो बनावटी खाद्य-पदार्थ बना कर देश के नागरिकों की तन्दुरुस्ती को हानि पहुँचा रहे हैं। काँग्रेस सरकार का कर्त्तव्य है कि इन पंचमाँगी तत्वों का जल्दी-से-जल्दी नाश करें। देशभक्त नवयुवकों का भी यह परम कर्त्तव्य है कि वे ऐसे देशद्रोही लोगों को कदापि पनपने न दे। आज कल कालेजों के विद्यार्थी अनुशासनहीन बन कर बहुत सी ऐसी बातें कर रहे हैं, जिस से उन्हीं का भविष्य अन्धकारमय होता जाता है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे ऐसे आन्दोलनों से दूर रहें जो उनकी शिक्षा में हानि पहुँचाने वाले हैं। उनकी वीरता इस में है कि वे नैतिकता का ह्रास करने वाले तत्वों के विरुद्ध कमर कस कर खड़े हो जायं।

जब इस प्रकार काँग्रेस सरकार तथा शिक्षित समुदाय अपने कर्त्तव्य को समझ जायगा तो काश्मीर की समस्या तथा खाद्य-विषयक उलझनें बड़ी सुगमता से सुलझ जायेंगी। आज हम सब मिलकर अपने राष्ट्र की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करें। एक दूसरे की व्यर्थ नुक्ताचीनी करने से काम सुधरता नहीं, बिगड़ता ही है। अब तो व्यवहारिक ढंगों से सच्चे देश-भक्तों को अपनी देश-भक्ति तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय देना चाहिए जिससे हमारा राष्ट्र शक्ति-संचय करता हुआ आगे बढ़ता चला जाय।

संक्षेप में हमारा निवेदन यह है कि हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को

सवर्था त्याग कर समष्टि के भले में अपना भला सीखें। तभी हमारा यह प्यारा देश राजनीतिक स्वाधीनता का अमृत पान कर अमर-कीर्ति लाभ कर सकेगा और तभी हमारे नागरिक सर्वांगपूर्ण विकास के साधनों की उपलब्धि कर सकेंगे।

अगले अध्याय में हम अपना अंतिम निवेदन पाठकों को सुनाते है। कृपा कर अगले पृष्ठों को ध्यान पूर्वक पढ़िये।

—:०※०:—

## चौदहवाँ अध्याय

# अन्तिम शब्द

हमारे बहुत से पाठकों तथा अन्यप्रेमियों के दिलों में कौतूहल उत्पन्न होगा कि जब पाकिस्तान हमारे सामने जीता जागता तथा एक राष्ट्र के रूप में मौजूद है और जो आये दिन जहाद-फसाद की बातें करता रहता है, इसके साक्षात्कार होते हुए – पाकिस्तान -- एक मृग तृष्णा – ऐसा विचित्र नाम हमने इस पुस्तक का क्यों रखा ?

यह है प्रश्न, जो देश के सुशिक्षित लोगों तथा दूसरे सरसरी दृष्टि से देखने वाले व्यक्तियों के मन में पैदा होता होगा। स्वामी सत्यदेव ने ऐसा नाम क्यों रखा ? वे तो सोलह आना व्यवहारवादी हैं, उन्होंने सामने खड़े हुए पाकिस्तान को "मृग-तृष्णा" कैसे कह दिया ? इसका संतोषजनक उत्तर हमें देना ही चाहिए।

देखिये, पाकिस्तान को बने हुए अभी छः वर्ष ही हुए हैं—एक चीज होती है स्वाभाविक और दूसरी होती है अस्वाभाविक। यदि पाकिस्तान का अस्तित्व स्वाभाविक घटनाओं का परिणाम होता तो उसके छः वर्षों के जीवन में ही ऐसी अनहोनी बातें न होतीं। पहले मि० जिन्ना की मृत्यु को ही ले लीजिए। वे थे पाकिस्तान के जन्मदाता, जिन्होंने इंगलैंड की कठपुतली बनकर भारतीय मुसलमानों के भविष्य को अंधकारमें डालकर, केवल श्वेतांग प्रभुओं के हित को सामने रखकर भारत का

विभाजन करा दिया और तनिक यह भी न सोचा कि विभाजित हुए टुकड़े कैसी बे सिर पैर की सीमाओं के आधार बनकर खड़े हो सकेंगे। उन्होंने निपट स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने स्वामियों का कहा मान लिया और एक ऐसे राष्ट्र की बुनियाद डाल दी, जिसने भारतीय-मुस्लिम संगठन की बुरी तरह हत्या कर डाली और एक प्रकार से उस संगठन का भविष्य सदा के लिए पंगु कर दिया।

हम जब पाकिस्तान को एक 'मृग-तृष्णा' कहकर पुकारते हैं, तो हमारे पाठकों को यह जान ही लेना चाहिए कि हमारी दृष्टि में पाकिस्तान का अब कोई अस्तित्व नहीं रहा - वह मृत्यु के मुख में पूरी तरह से जा चुका है। जो पाकिस्तान अन्न का भण्डार था और जो सारे भारतवर्ष को गेहूं दे सकता था, वह आज अन्न के बिना भूखा मरने लगा है। क्या वहाँ कोई अनावृष्टि हुई है अथवा खेतों पर काम करने वाले आदमी खत्म हो गये हैं? ऐसी अभूतपूर्व घटना तो वहाँ कोई घटी नहीं, तिस पर भी अमरीका से लाखों मन गेहूं भूखे पाकिस्तानियों की सहायतार्थ जहाजों में लदा आ रहा है। इसके विपरीत छः वर्षों में भारत ने अपनी खाद्य और आर्थिक स्थिति को बुद्धिमत्ता से सुदृढ़ कर लिया है, जिस पाकिस्तान की ओर मुस्लिम नेता चिल्लाते हुए दौड़े थे और सोचते थे कि उन्होंने इस भूतल पर इस्लामी स्वर्ग की स्थापना कर डाली है—यह मृग-तृष्णा नहीं तो और क्या है? हमारा कथन यह है कि पाकिस्तान नाम का वह देश, जिसे अंग्रेजों ने अपनी स्वार्थपरता के कारण खड़ा किया था, आज निर्जीव-सा होकर अपनी मृत्यु की घड़ियाँ गिन रहा है। हमारी इस पुस्तक को पढ़ने से सूर्य के प्रकाश की तरह पाठकों को यह बात विदित हो गई होगी कि हिन्दुओं के भले के लिए विभाजन आवश्यक था, क्योंकि शक्तिशाली भारतीय मुस्लिम संगठन कभी भी बलवान् भारत-संघ को न पनपने देता, वह उसे जन्मते ही खत्म करने का प्रयत्न करता। अतएव भारत का विभाजन ईश्वरीय इच्छा से हुआ और वह हिन्दुओं के लिए वरदान सिद्ध हुआ। पाकि-

स्तान नामी राष्ट्र केवल भारत-संघ को शक्तिशाली बनाने का सुअवसर देने के लिए ही खड़ा किया गया था। प्रभु की महान् कृपा से छः वर्षों के अन्दर उसने अपने सैंकड़ों टुकड़ों को जोड़कर अपनी नींव को ठोस बना लिया है, अब उसे किसी का डर नहीं रहा। अब रह गया है केवल भारत को अखंड बनाना और पाकिस्तानी कुचक्रों को जड़मूल से खत्म कर देना। यह कैसे होगा ?

× × ×

निस्सन्देह भारत को अखण्ड बनाने का समय निकट आता हुआ दिखाई देता है। हमें इसकी इतनी जल्दी आ जाने की आशा नहीं थी। यद्यपि हम यह जानते थे कि पाकिस्तान केवल एक मृग-तृष्णा है, उसकी बनावट ही हमें इस बात की सूचना देती थी कि अस्वाभाविक ढंग के यह टुकड़े थोड़े ही दिनों के पाहुने हैं। राष्ट्र में तीन चार भाषाएँ चल सकती हैं, उनकी अलग-अलग रियासतें भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलती हुई, केन्द्रित की जा सकती हैं, उनका एक राष्ट्र बनाकर उसे शक्तिशाली किया जा सकता है, किन्तु सैंकड़ों मीलों की दूरी पर बसी हुई रियासतें – जिनके बीच में एक महान् बलवान् राष्ट्र उन्नत मुख किये खड़ा हो—भला कभी आपस में मिलकर अपनी साझी सरकार चला सकती हैं ? कदापि नहीं। पाकिस्तान का जो यह गोरखधंधा छः वर्षों से चल रहा है और हम उसकी ऊलजलूल बातें सुनते जा रहे हैं, यह केवल इसलिए कि अभी भारत-संघ पूरी तरह से संगठित नहीं हुआ था और उसकी अपनी समस्याएँ बड़ी विकटतर थीं। ईश्वर की महान् कृपा से भारत-संघ के शासकों ने, शासन का अनुभव न होते हुए भी, बड़ी बुद्धिमत्ता से अपनी समस्याओं को सुलझाया है और निरन्तर अपने देश को आगे बढ़ाते चले जा रहे हैं। उसके विपरीत पाकिस्तान की शक्ति, उसका संगठन, उसका उत्पादन बल, जसके कल-कारखाने और उसकी राष्ट्रीय समस्याएं दिन-प्रति-दिन सुलझने की बजाय अधिक-से-अधिक उलझती चली जा रही हैं – यह इस बात का प्रमाण है कि पाकि-

स्तान अस्वाभाविक राष्ट्र है और वह थोड़े दिन का महमान है।

और सुनिये। यह युग है बड़े राष्ट्रों का, जिन के पास स्वावलम्बन के साधन हों। संसार में इस समय केवल चार ही ऐसे राष्ट्र हैं, जो अपने पाश्रों के बल खड़े होकर मस्ती से अपनी सरकारें चला सकते हैं—रूस, चीन, भारत और संयुक्त-राज्य-अमरीका। यह ऐसे चार महाराष्ट्र हैं, जिन के पास पुष्कल खनिज पदार्थ हैं। जिन की काफी आबादी है और जो अपने ही कच्चे माल से पक्का माल तैयार कर अपनी जीवन-चर्या को अच्छी तरह से निभा सकते हैं। छोटे-छोटे राष्ट्रों के लिए आज कोई स्थान नहीं रहा। उन्हें संगठित हो कर अपना बलशाली संघ बनाना पड़ेगा, तभी वह स्वाधीनता का जीवन व्यतीत कर सकेंगे। इसी कठिनाई को देखते हुए सभ्य संसार में युद्ध विरोधी भावनाएँ जोर पकड़ रहीं हैं और सब देशों की प्रजा शांति प्रचार में योग देने लगी है। ऐसी अवस्था में भारत का विभाजन होना ही नहीं चाहिये था। भारतवर्ष को प्रकृति ने एक स्वतन्त्र इकाई बनाया है। ब्रह्मपुत्र से लेकर सिंधु तक की भूमि और हिमालय से लेकर लंका तक का भूखंड एक संस्कृति-सूत्र में बंधा हुआ है। जो मुसलमान और ईसाई विदेशी धर्मों को ग्रहण कर यहाँ के नागरिक हैं, उन का साहित्य और इतिहास भी बहुसंख्यक प्रजा के साथ ऐसा गुंथा हुआ है कि जिसे कभी अलग नहीं किया जा सकता। शताब्दियों से विदेशी मुस्लिम बादशाहों ने अपना सारा जोर लगा कर इस संस्कृति स्रोत को सुखाने की चेष्टा की, किंतु उन के सारे प्रयत्न निष्फल हो गए। उन्होंने समाजान्तर अरबी विष का पूरी तरह से प्रयोग किया, अलग पाकिस्तान भी बना कर देखा, भारत के दो अस्वाभाविक टुकड़े काटने के बाद वे आश्चर्य चकित हो कर क्या देखते हैं कि वे किसी प्रकार भी बहुसख्यक आबादी से अपना पिंड नहीं छुड़ा सकते। भौगोलिक स्वरूप भी भारतवर्ष का ऐसा है कि उसका कोई टुकड़ा अलग काटा नहीं जा सकता, इस लिए यह बात ध्रुव सत्य है कि भारत अखंड हो कर ही रहेगा और विदेशी मतों के

रखने वाले नागरिक राष्ट्र का अंग बन कर ही यहाँ सुख-पूर्वक रह सकेंगे। उन्होंने अपना मजहब विदेशी कर लिया है, किन्तु उन के पुरखा तो विदेशी नहीं बन सकते। जब इस्लाम की धर्मान्धता का नशा उन पर से उतर जायगा, जब मौलवी-मुल्लाओं को नपुंसक बना कर बैठा दिया जायगा, जब सब भारतीय बच्चे स्कूल-कालिजों में अपने साझे इतिहास को पढ़ेंगे, तब उन्हें भली-भाँति यह बात विदित हो जायगी कि उन का साहित्य और संस्कृति बहुसंख्यक प्रजा के साथ घुली मिली है और वे किसी प्रकार भी अलग नहीं किये जा सकते। यदि वे ऐसा अस्वाभाविक प्रयत्न करेंगे तो अरबी, फारसी, तुर्की नागरिक उन की खिली उड़ावेंगे। जब पाकिस्तान के इन दो टुकड़ों में ही ऊर्दू बंगाली के झगड़े खड़े हो जाते हैं, जब एक ही पाकिस्तान में पंजाबी, बंगाली, सिंधी और पख्तूनी का बखेड़ा उपस्थित हो जाता है, तब भला दूर देशों में बसने वाले अरबी, फारसी और तुर्की आक्रमणकारियों के वंशज इन्हें कैसे अपना सकेंगे, यह भले ही हो जाय कि वे अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए, इन्हें बेवकूफ बना कर अपना उल्लू सीधा करलें, लेकिन वे कभी भी इन्हें अपने साथ मिलने नहीं देंगे।

अब समय आ गया है कि भारतवर्ष के अल्पसंख्यक उदार दृष्टि से अपनी समस्याओं को देखना प्रारम्भ करें। जिनके साथ उनके हित जुड़े हुए हैं, उनकी राजनीतिक समस्याएँ साझी हैं, उनकी बपौती जायदाद मिश्रित है और जो उनके साथ रक्त सम्बन्ध रखते हैं वही उनके सच्चे हितैषी और साझे नागरिक बन सकते हैं। इस सत्य तथ्य को भली प्रकार समझने का समय अब आ गया है। छः वर्षों के भारत विभाजन ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि हमारे पाकिस्तानी बन्धुओं का जीवन-मरण सम्बन्ध शेष भारत के साथ है। जितनी जल्दी वे भारत-संघ में रहने वाले लोगों के साथ अपनत्व कायम करेंगे, उतनी शीघ्रता से ही उनकी जीवन समस्याएँ हल हो सकेंगी।

सचमुच अब अखंड भारत की योजना बनाने का समय आ पहुँचा

है और हमें अब इस विचारधारा को अत्यन्त लोकप्रिय बनाकर अपनी समस्याओं को हल करने का अभ्यास करना चाहिए। यदि आज नहीं तो दस वर्षों के बाद हमें जख मारकर इस पुनीत कार्य को करना पड़ेगा।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि यदि इतनी जल्दी पाकिस्तान को खत्म करना था और अखंड भारत बनाना था तो फिर कांग्रेस नेताओं ने अपना वचन भंग कर विभाजन ही क्यों करवाया और लाखों लोगों की मारकाट क्यों होने दी ?

× × ×

अपनी इस पुस्तक में हम लिख चुके हैं कि विभाजन हिन्दुओं के लिए वरदान सिद्ध हुआ है और मुसलमानों के लिए अभिशाप ; हम ने यह भी बतलाया है कि यदि विभाजन न होता तो हिन्दू कहीं के न रहते और भारत-संघ एक शक्तिशाली इकाई के रुप में जगत् के सामने न आता। अब हमें इन बातों की तो दोहराने की आवश्यकता नहीं, काँग्रेस नेताओं ने इस विभाजन को मजबूरी में स्वीकार किया। महात्मा गांधी और दूसरे कांग्रेस नेता तो अखंड भारत के ही पक्षपाती थे, लेकिन जब स्वार्थी मुस्लिम लीगी नेताओं ने अपने शरारत भरे ढंगों से काँग्रेस नेताओं को सताया और उन्हें अपने गुंडेपन के दांत दिखला दिये तो पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी ने देश के इस दुष्ट अग को काट डालना ही उचित समझा जिससे भारतवर्ष का अनाचारी और स्वार्थी मुस्लिम समाज शेष नीरोग भाग से बिल्कुल अलग होकर अपनी नंगी करतूतें दिखला सके। वही आखिरकार हुआ। बहुसंख्यक हिन्दुओं का भला तो इसी में था कि वे अपने सद्‌गुणों द्वारा अपनी राजनीतिक स्थिति सुदृढ़ कर लेते और भारत-संघ के टुकड़े न होने देते—सो उन्हों ने वैसा ही किया और अपने देश को बचा लिया। अब वह स्वयं तो पाकिस्ता-नियों को मजबूर कर सकते नहीं कि वे अपनी भूल को स्वीकार कर अखंड भारत की स्थापना करें—वे सुअवसर देख रहे हैं। छः वर्षों

में मुसलमान लीडरों ने देख लिया कि यदि कुरान की शरह के अनुसार पाकिस्तान का विधान बनाया जायगा तो अभागे पाकिस्तान में कभी भी शाँति नहीं हो सकती—धर्मान्ध कठमुल्ला कादयानियों के विरुद्ध दंगे करवा कर अपनी दुकानें चलाने का यत्न करते ही रहेंगे—सभ्य संसार भी उनका मजहबी पागलपन बहुत देर तक सहन नहीं कर सकता सो मुल्लाओं को तो दबाने में सभी सहमत हो गये हैं, पर उनका पारस्परिक ईर्षा-द्वेष कैसे शांत हो सकता है ! पिछले छः वर्षों के पाकिस्तानी शासन के कारण एक नई विचार धारा पाकिस्तान में भारत के पक्ष में बहने लग गई है। एक दल पाकिस्तान में इस प्रकार का पैदा हो गया है जो भारत-संघ के साथ किसी प्रकार का झगड़ा नहीं चाहता लेकिन उसकी आवाज ने अभी जोर नहीं पकड़ा। पाकिस्तान के स्वार्थी नेता इस आवाज को दबाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा भी यही ख्याल है कि इन स्वार्थी पोलिटिकल नेताओं में खूब जोरदार रस्साकशी होगी, जिसके कारण पाकिस्तान में भयँकर घरेलू झगड़े होंगे। वे झगड़े पाकिस्तान के ढाँचे को तोड़ फोड़ देंगे। तब वहाँ की प्रजा भारत से मिलने के लिये करुणा-क्रन्दन कर उठेगी। वह समय शीघ्र ही आने वाला है।

भारत-संघ के शासक प्रगट रूप से तो यही कहेंगे कि हम पाकिस्तान के साथ मिलना नहीं चाहते, किंतु हालात उन्हें मजबूर करेंगे कि वे भारतवर्ष के इस फोड़े का शीघ्र इलाज कर दें, जिससे हमारा विशाल देश ससार में अपना जीवनोद्देश्य पूर्ण कर सके।

अब यहाँ पर यह बात स्वाभाविक ही उपस्थित होती है कि संयुक्त-राज्य-अमरीका को काश्मीर में दिलचस्पी क्यों है ? उत्तर स्पष्ट है। राष्ट्र-संघ में रूस और अमरीका के दाव पेच उनके आपस के वैमनस्य को स्पष्ट करते हैं। कोरिया के युद्ध में चीन के कारण अमरीका ने काफी हानि उठाई है और अब भी साम्यवादी चीन अमरीका के बड़प्पन को स्वीकार नहीं करता। उसका यह घमण्ड कैसे तोड़ा जाय ? अमरीका अपनी विपुल धन-राशि खर्च कर फारमूसा के च्याँगकाईशेक को चीन

के विरुद्ध तैयार कर रहा है। यदि काश्मीर में अमरीका के पैर जम जायं तो वह बड़ी आसनी से तिब्बत का बहुत बड़ा भू-भाग अपने काबू में कर सकता है और वहाँ पर अमरीकन बस्तियाँ बसाकर चीन को सदा के लिए निर्बल बना सकता है। यही कारण है कि अमरीका हर सम्भव उपाय से काश्मीर को भारत-संघ में मिलने नहीं देना चाहता। कुछ-न-कुछ अड़ंगा डालने की चेष्टा वह निरंतर कर रहा है जिससे भारत थक कर काश्मीर का पिंड छोड़ दे।

पर भारत ऐसा क्यों करने लगा? वह अपने शाँतिमय उपायों से धीरे-धीरे सब पर अपना प्रभाव डाल रहा है, यदि काश्मीर उसके हाथ से निकल जायगा तो उसका जो प्रभाव सभ्य संसार में होने जा रहा है, उसमें भारी रुकावट खड़ी हो जायगी। इस कारण वह अपने अरबों रुपये खर्च कर और हजारों नवयुवकों का बलिदान कर काश्मीर को अपने हाथ से खोना नहीं चाहता। भारत-संघ की सारी प्रजा तथा काश्मीर के हिंदू और बौद्ध काश्मीर को अपने साथ रखने के पक्ष में हैं। काश्मीर के समझदार मुसलमान भी इस बात को अनुभव करने लगे हैं कि उनका भला भारत-संघ के साथ रहने में ही है। हमें पूरा विश्वास है कि थोड़े समय के बाद ही पाकिस्तान के लीडर अपने षड्यन्त्रों से थक कर बैठ जायंगे और प्रजा उनका नंगा रूप अच्छी तरह से देख लेगी। उस समय भारत-संघ में मिलने की भावना पश्चिमी पाकिस्तान में तीव्र हो उठेगी और तब एक ऐसे शासन का जन्म होगा जो पाकिस्तान को भारत-संघ में मिलाकर उसका अंश बना देगा, तब ईश्वर की कृपा से अखंड भारत का सुखद स्वप्न पूरा होगा और यह शक्तिशाली विशाल महाराष्ट्र संसार को अपनी संस्कृति सन्देश सुनायेगा।

× × ×

भारतीत जनता में जागृति और चैतन्यता लाने के लिए ठीक ढंग की शिक्षा-प्रणाली की बड़ी आवश्यकता है। इसके जहाँ और भी कई एक उपाय है, उन में से अच्छे साहित्य का प्रचार भी सर्वश्रेष्ठ उपायों

में से एक है। काँग्रेस सरकार को चाहिए कि वह साहित्य-प्रचार में सब प्रकार की सुविधाएँ उन पुस्तक-प्रकाशकों को दें जो नीरोग साहित्य का प्रचार करते हैं। और चरित्र बिगाड़ने वाली पुस्तकों और अखबारों को शीघ्रातिशीघ्र अपने अनुशासन में लाने का प्रयत्न करें। एक बड़ी भारी दिक्कत जो प्रचार के मार्ग में खड़ी हो गई है, वह है डाक महसूल का बढ़ जाना। सभ्य देशों की सरकारें अपने यहाँ थोड़े महसूल पर पुस्तकों का प्रचार करवाती हैं। परिणाम-स्वरूप इंगलैंड और अमरीका से आने वाला साहित्य हमें यहाँ कम खर्च पर मिल सकता है। इसके विपरीत हमारे ही देश के ग्रामीण लोग जब हम लोगों से पुस्तकें मंगवाते हैं तो उन्हें बहुत अधिक डाक खर्च सहना पड़ता है, इस कारण धीरे-धीरे उनका उत्साह अच्छी पुस्तकें मंगाने के लिए घटता जाता है। हमारे डाक विभाग के अधिकारियों को इस ओर बड़ी गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए। यदि वह इस देश की अनपढ़ जनता को नीरोग साहित्य देकर उन्हें कर्त्तव्यपरायण नागरिक बनाना चाहते हैं तो डाकखर्च को घटाने का शीघ्रातिशीघ्र प्रबन्ध करना चाहिए। यदि एक रुपये के मूल्य की पुस्तक पर तेरह आने वी० पी० खर्च पड़ जायगा तो उसे मंगाने का साहस कौन करेगा? ब्रिटिश शासनकाल में पुस्तकप्रकाशकों को ऐसी कठिनाइयाँ न थीं, जो उन्हें आज इस काँग्रेस सरकार के राज्य में मिल रही हैं। हम चाहते हैं कि देश के चिन्ताशील विद्वान् इस ओर ध्यान देकर शासकों को समझायें कि वे प्रजा से इस प्रकार कर वसूल करने के निन्दनीय ढंगों को न अपनाएँ। हमें अपनी शासन मशीन को मित्तव्ययता से चलाने वाले साधनों को प्रयोग में लाना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने जिस आदर्श को हमारे सामने रखा था, जिस से प्रजा का अधिक-से-अधिक कल्याण हो सकता है और वह कर के बोझ से छूट सकती है। वही सात्विकता के तरीके आदर्श शासन की स्थापना कर सकते हैं। हमें इन बातों में योरुप और अमरीका की नकल नहीं

करनी चाहिए। योरुप और अमरीका वाले जीवन-स्तर को तो ऊँचा बनाते हैं, लेकिन प्रजा में जागृति पैदा करने के सब उपायों को सरल करते चले जाते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हमारे इस निवेदन पर देशवासी ध्यान देंगे

× × ×

देश के बच्चों को हम साक्षर बनाना चाहते हैं और निरक्षरता को दूर करने की आवाजें चारों ओर से आ रही हैं। इतना ही नहीं, स्कूलों, कालेजों के अध्यापक विद्यार्थियों की अनुशासन हीनता की बड़ी शिकायत करते हैं और माँ-बाप यह कहते हैं कि उनके लड़के लड़कियाँ पढ़ लिख कर बिगड़ जाते हैं—वे उच्छृंखल हो कर समाज विरोधी काम करने लगते हैं। क्या यह शिकायतें सच नहीं ? आज हमें अपने मन को एकाग्र कर इन अत्यावश्यक विषयों पर गहरी दृष्टि डालनी चाहिए। अध्यापकों को इतने कम वेतन मिलते हैं कि उनका पेट भी नहीं भर सकता। किसी सभ्य देश में स्कूल के अध्यापकों के साथ इस प्रकार का अन्याय नहीं किया जाता, जैसा कि यहाँ हो रहा है। वे बिचारे यदि अपना संगठन कर अपने दुःखों को सुनाने की चेष्टा करते हैं तो शिक्षा विभाग के अधिकारी उनके साथ अपराधियों जैसा व्यवहार करते हैं—उन्हें स्कूलों से निकाल देते हैं। एक दर्जी, एक बढ़ई और एक मेमार आज इज्जत के साथ अपना धंधा कर सकता है और मजे में अपना खर्च चलाता है, लेकिन स्कूलों और कालेजों के अध्यापक अध्यापिकायें जिस तंगी से दिन काट रही हैं—जैसी उनकी दयनीय स्थिति है, वह सचमुच रुलाने वाली है। ऐसे अध्यापकों की उनके विद्यार्थी क्या कदर करेंगे और यही हैं हमारे राष्ट्र के नागरिकों को बनाने वाले। जब आप उन्हें सम्मानपूर्वक जीने योग्य वेतन नहीं देंगे तो उनमें नीरोग नैतिकता कहाँ से आजायगी। देश के मिनिस्टर तो हजारों रुपये वेतन के पायें, भत्ता खर्च अलग फटकारें और नाना प्रकार के कुत्सित ढंगों से अपनी आमदनी बढ़ा लें और यह हमारे

बालकों को घड़ने वाले शिल्पी अध्यापक भुखमरी का शिकार बने रहें—ऐसा राष्ट्र, कर्त्तव्यपरायण नागरिक कभी पैदा नहीं कर सकेगा। यही कारण है कि भारत-संघ में भाँति-भाँति के निन्दनीय उपायों से पैसा पैदा करने के तरीके सोचे जाते हैं और साधारण जनता का नैतिक स्तर गिरता जाता है और नास्तिकता का जोर बढ़ रहा है।

× × ×

हम अपने प्यारे देशबन्धु विनोबाभावे को बधाई दिये बिना नहीं रह सकते कि जो अपनी सारी शक्ति लगाकर गरीबों का दुःख दूर करने की चेष्टा कर रहे हैं। उन्हों ने अपनी सात्विक योजना से साम्यवादियों के छक्के छुड़ा दिये हैं और इस बात को सिद्ध कर दिया है कि समझदार मानव विध्वंसक क्रांतियों के निकट नहीं जाया करते—वे रचनात्मक ढंगों से सामाजिक समस्याओं को हल किया करते हैं। बने हुए मकान को डॉयनामाइट से उड़ा देना, सुदृढ़ पुलों को तोड़-फोड़ देना, चलती गाड़ियों की सड़कें बिगाड़ देना—ऐसे काम तो कोई भी मूर्ख कर सकता है, लेकिन रचनात्मक ढंग से अपने ऊपर सब प्रकार की मुसीबत को सहते हुए किसी कठिन समस्या को हल करना बड़ी टेढ़ी खीर है, जिसे कोई तपस्वी ही सफलतापूर्वक सिरे चढ़ा सकता है। विनोबाभावे जी के इस बलिदान ने श्री जयप्रकाशनारायण जैसे देश के उज्ज्वल रत्नों को उनका अनुयायी बना दिया है और सोशलिस्टों के यह ख्यातनामा नेता उनके सैनिक बनकर भूदान यज्ञ में आहूतियाँ डालने लग गये हैं। क्यों न हो? ये हैं महात्मा गाँधी जी के सच्चे अनुयायी और यही बनेंगे उनके झण्डे को आगे ले जाने वाले।

× × ×

सुना है कि एडमिरिल निमित्ज़ ने काश्मीर के जनमत के प्रशासक पद से त्याग-पत्र दे दिया है। जब से यह खबर अखबारों में निकली है, पाकिस्तान में मातम छा गया है। मियाँ जफरुल्ला तो बड़ी बुरी तरह बेचैन हो उठे हैं। वे उनके पास तारें भेज कर चिल्ला रहे हैं कि उनके

नई दुनियाँ में पहुँचने तक इस्तीफा देने का फैसला न करें।

क्या करें बेचारे; भारत-संघ को नीचा दिखाने का उनका यह सबसे बड़ा षड्यन्त्र था कि एडमिरिल निमित्ज़ का शानदार स्वागत कर उसे दावतें खिला कर अपनी ओर मिला लिया जाय और उसके द्वारा काश्मीर को हथियाने का प्रयत्न किया जाय। यह पाकिस्तानी लीडर अपने जैसा दूसरों को भी समझते हैं। उनका यह ख्याल था कि जैसे यह दुनिया भर का झूठ सच बोलकर नेहरू जी को ठगने का प्रयत्न कर रहे हैं, ऐसे ही हथकंडों से वे एडमिरिल निमित्ज को भी काबू में ला सकेंगे। लेकिन जैसे नेहरू जी उनके जाल से निकलकर उनकी सारी पोल को जानने लगे हैं, इसकी सूचना भी एडमिरिल निमित्ज तक पहुँच चुकी है। वह भला—कोयलों की दलाली में मुँह काला—वाली कहावत को चरितार्थ क्यों करेंगे? हमें जब से इस इस्तीफे की सूचना मिली है, तब से हमें पाकिस्तान की दयनीय दशा पर बड़ा तरस आ रहा है। भला जिसके विरुद्ध स्वयं खुदावन्द-करीम हो जायं, उसे कौन बचा सकता है?

× × ×

मैं आज कल दिल्ली में आ गया हूं। दिल्ली इस समय भारत-संघ की राजधानी है और सारी दुनिया के विदेशी यात्री बड़ी संख्या में यहाँ आने लगे हैं। अपने सत्य ज्ञान निकेतन ज्वालापुर में बैठकर मैं अपनी शक्तियों का सदुपयोग नहीं कर सकता था। अपना कार्य क्षेत्र बनाने के लिए दिल्ली ही उपयुक्त केन्द्र है, जहां बैठकर मैं आर्य-संस्कृति संदेश को न केवल अपने देश में, बल्कि विदेशों में भी पहुँचा सकता हूँ। यहाँ सब प्रकार की आबादी के नये-नये नगर बस गए हैं और प्रत्येक प्राँत के निवासी प्रतिनिधि-स्वरूप यहां मौजूद हैं। जो भी आँदोलन यहाँ से उठाया जायगा वह सारे भारतीय राज्यों में बड़ी आसानी से फैल सकता है और यहाँ सब प्रकार के साधन तथा सहायक आसानी से मिल सकते हैं।

इस समय मेरी तीन पुस्तकें छप रही हैं—'ज्ञान के उद्यान में', 'संजीवनी बूटी' और'पाकिस्तान एक मृगतृष्णा'। दो पुस्तकें—'ज्ञान-गंगा' और 'लहसुन बादशाह' प्रेस में देने के लिये मेरे पास तैयार हैं। अपनी सम्पूर्ण आत्म-कथा प्रकाशित करने के लिये मैं सामग्री साथ ले आया हूँ। इस प्रकार छः छोटी बड़ी पुस्तकें प्रकाशित कराने का मेरा सँकल्प है। मेरी इच्छा यह है कि अपने सारे साहित्य को जुदा-जुदा जिल्दों में सँग्रहीत कर पाठकों के लिये सामग्री जुटा दू, जिससे वे अपने घरों में इन पुस्तकों को रख सकें और इस प्रकार मेरे विचारों के प्रचार का सिल-सिला बराबर जारी रहे।

दूसरा कारण दिल्ली आने का यह है कि पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए मेरे शरणार्थी बन्धु भारतीय-सँस्कृति से दूर हटे हुए हैं। मुसलमानों के साथ अधिक सम्पर्क रहने के कारण उनमें अरबी तत्व का समावेश हो गया है। वे दूसरों की भावनाओं का जरा भी आदर नहीं करते और अपने पशुबल से उन भावनाओं को कुचलने में अपनी बहादुरी समझते हैं। यह उनकी भयँकर भूल है। If you go to Rome, behave like Romans-- यदि आप रोम जाते हैं तो रोमनों की तरह अपना व्यवहार बनाइये वाली उक्ति के अनुसार इन हमारे शरणार्थी बन्धुओं को अपना 'आचार' (Conduct) बनाना चाहिए, जिससे दूसरे प्राँतों के लोग उन्हें अपना अंग मानने लग जायँ वे एक भिन्न सम्प्रदाय के रूप में दिखाई न दें।

पश्चिमी पंजाब में माँस खाने का रिवाज बहुत अधिक था और वहाँ पर जवान लड़कियों के साथ हंसी मजाक करने की परिपाटी प्रचलित थी जिसे इधर के लोग बहुत ही बुरा मानते हैं और हैं भी यह बुरी बातें। मैं अपने व्याख्यानों द्वारा अपने इन प्यारे बन्धुओं को ऐसा बनाने की चेष्टा करूंगा कि जिस से वे अपने पड़ौसियों के साथ घुल-मिल जायं और कोई दूसरे प्रान्त का नागरिक इन्हें अपने से अलग न समझे। मैंने सहारनपुर, देहरादून आदि नगरों में ऐसी

बहुत सी शिकायतें सुनी है, कि जिनके कारण मुझे बड़ा खेद हुआ है। हमें आज अपनी आबादी को ठोस बनाना चाहिए और उन सब तत्वों को निकाल कर फैंक देना चाहिए जो हम में भेद-बुद्धि पैदा करते हैं। हमें आज प्रान्तीयता की दीवारों को गिरा कर राष्ट्रीयता के सुन्दर विचारों का प्रचार करना चाहिए और अपनी एक ऐसी आबादी बनानी चाहिए जिसका आचार-व्यवहार एक जैसा हो जाय और सुदृढ़ हो कर एक सूत्र में परो दी जाय। मेरे हृदय को उस समय बुरी चोट लगती है जब हमारे प्रान्तों के लोग हमारे इन शरणार्थियों के विरुद्ध ऐसी शिकायतें करते हैं। पंजाबी होने के नाते से मेरी सहानुभूति पश्चिमी पंजाब से आये हुए उन अपने बन्धुओं के साथ है और मैं हृदय से चाहता हूँ कि इन में कोई ऐसी दूसरों से जुदा करने वाली आदत न रहे और हम एक ठोस समाज के रूप में परिणत हो जायं।

× × ×

अब यह मेरी पुस्तक समाप्त होने लगी है। मैं अपने देश के सब प्रान्तों के लोगों की मगल कामना करता हूँ, और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे हमारे समाज के सब प्रकार के भेदों को मिटा दें और हमारे हृदय में पारस्परिक प्रेम तथा सहानुभूति बढ़ावें। पाकिस्तान—एक मृगतृष्णा नाम की मेरी यह पुस्तक मेरे संगठन के बिगुल की तरह लोकप्रिय हो जाय और उसका प्रचार भारत के कोने-कोने में हो, देश की सब भाषाओं में इस के अनुवाद छपें और इसकी लाखों प्रतियाँ घर-घर में फैल जायं। इस आशा के साथ मैं विनीत भाव से नतमस्तक हो कर मंगलमय प्रभु से आशीर्वाद माँगता हूँ कि वे दयामय मेरी इस शुभ कामना को पूर्ण करें।

ओ३म् शम

लखनऊ के नेशनल हेरल्ड

तथा

बम्बई के ब्लिटज

के आक्षेपों का करारा उत्तर इस पुस्तक में पढ़िये

# विचार स्वातंत्र्य के प्रांगण में

लेखक—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

मूल्य एक रुपया बारह आना



बड़ी मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद सामग्री से भरी हुई,
राष्ट्रपति जी तथा प्रधान मन्त्री जी के पत्र, उनका
यथोचित उत्तर, के साथ-साथ सभ्यता
और संस्कृति का शुद्ध स्वरूप,
बुद्धिवाद का प्रशस्त मार्ग आदि
...ों सहित प्रगति की
...वलंत प्रतिमा
...अवश्य पढ़िये



स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
सत्य ज्ञान निकेतन ज्वालापुर यू० पी०

तथा

ज्ञान-धारा प्रकाशन पर्दाबाग दरियागंज
देहली